वैश्विक संवाद

12.3

पत्रिका

International Sociological Association

अनेक भाषाओं में एक वर्ष में 3 अंक

समाजशास्त्र पर बातचीत मिशेल फोर्ड के साथ

दिमित्रा लॉरेंस लॉरोशेल

माइकल बुरावॉय – जन समाजशास्त्री

स्वेतलाना यारोशेंको
एलेना जड्रावोमिस्लोवा
साड़ी हनाफी
मार्गरेट अब्राहम

प्रतिच्छेदित संवाद

कैथी डेविस
हेल्मा लुट्ज
एन फीनिक्स
बारबरा जियोवाना बेल्लो
एथेल तुंगोहन
अमुंड रेक हॉफर्ट

सैद्धांतिक दृष्टिकोण

कोइची हसेगावा

यूक्रेन पर परिप्रेक्ष्य

नतालिया चेर्निश
यूरी पचकोवस्की
डेरी क्रिस्टिया

खुला अनुभाग

> हमें तुलनात्मक प्रतिच्छेदन एलजीबीटी+ डेटा की आवश्यकता क्यों है?
> कौन जानता है? मान्यता, प्रशस्ति पत्र, और ज्ञानमीमांसीय अन्याय
> मध्य और पूर्वी यूरोप में लाभदायक निकाय और देखभाल गतिशीलता
> दलाली घरेलू काम: श्रीलंका–सऊदी बाजार

GD
अंक 12 / क्रमांक 3 / दिसम्बर 2022
https://globaldialogue.isa-sociology.org/

> सम्पादकीय

इस अंक के, 'समाजशास्त्र पर बातचीत' खंड में सुविख्यात वैज्ञानिक मिशेल फोर्ड के साथ दिमित्रा लॉरेंस लॉरोशेल द्व ारा आयोजित एक साक्षात्कार है, जो अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के लिए उनकी परामर्श गतिविधियों, समाजशास्त्रीय शोध ाकर्ताओं के लिए चुनौतियों और श्रमिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने में आने वाली कठिनाइओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

हमारी पहली संगोष्ठी में माइकल बुरावॉय के सबसे प्रभावशाली और प्रेरक कार्य को संदर्भित किया गया है। आईएसए के पूर्व अध्यक्ष और *ग्लोबल डायलॉग* के संस्थापक के रूप में, उन्होंने जन और वैश्विक समाजशास्त्र पर एक व्यापक बहस शुरू की और उसे प्रभावित किया। साड़ी हनाफी, आईएसए के वर्तमान अध्यक्ष, मार्गरेट अब्राहम, आईएसए की पूर्व अध्यक्ष, और स्वेतलाना यारोशेंको और एलेना जड्रावोमिस्लोवा उनके साथ किये सहयोग पर और उनकी हालिया पुस्तक *पब्लिक सोशियोलॉजीः बिटवीन यूटोपिया एंड एंटी–यूटोपिया* पर चिंतन करते हैं और साथ ही वे विभिन्न दृष्टिकोणों से जन समाजशास्त्र पर प्रकाश डालते हैं।

प्रमुख विशेषज्ञ कैथी डेविस और हेल्मा लुत्ज द्वारा आयोजित दूसरी संगोष्ठी में दर्शाया गया है कि यात्रा सिद्धांत और प्रतिच्छेदन की अवध ारणा को विभिन्न संदर्भों में कैसे विस्तृत, पुनः रचित, और तैनात किया जाता है। आलेखों का यह संकलन उन तरीकों पर एक विहंगावलोकन प्रदान करता है जिसमें प्रतिच्छेदन प्रभावशाली रहा है और विद्वान और कार्यकर्ता स्थानीय और विश्व स्तर पर असमानता, शक्ति और सामाजिक परिवर्तन के बारे में क्या सोचते हैं। एन फीनिक्स, बारबरा जियोवाना बेलो, एथेल तुंगोहन, और अमुंड रेक हॉफर्ट विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करते हैं।

सैद्धांतिक खंड में कोइची हसेगावा, सामाजिक आंदोलन के नजरिए से, फ्राईडेज फॉर फ्यूचर पर चिंतन करते हैं। वे सांस्कृतिक फ्रेमिंग, संसाधन जुटाने और राजनीतिक अवसरों की संरचना पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और यह जांचते हैं कि ये अभियान इतने सफल क्यों रहे हैं और अन्य देशों की तुलना में जापान में भागीदारी धीमी और कम क्यों थी।

कंट्री फोकस का खंड 2022 की गर्मियों में यूक्रेन के खिलाफ दृष्टिगत आक्रामकता के युद्ध के मद्देनजर लिखा गया है। वैश्वीकरण पर समाजशास्त्रीय बहस का जिक्र करते हुए, नतालिया चेर्निश इस युद्ध के संबंध में वैश्वीकरण–पश्च के चरण में समाजशास्त्र की भूमिका पर विचार करती हैं। यूरी पचकोवस्की आक्रमण के ठोस अनुभवों, सामूहिक आघात और युद्ध से निकाले जाने वाले परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। डेरी क्रिस्टिया ''सुरक्षा दुविधा'' और व्यवस्था विरोधी आंदोलन एवं दलों के उभार के सम्मुख समाजशास्त्र के स्थान के बारे में बारे में प्रश्न करती हैं।

'खुले अनुभाग' में सैत बेराकदार, एंड्रयू किंग और जाना बेसेविक वैज्ञानिक कार्यों में विविधता और प्रतिच्छेदन के लिए आवश्यक संवेदनशीलता, प्रतिनिधनात्मक अध्ययनों और सर्वेक्षणों के साथ साथ ज्ञान मीमांसीय प्रश्नों पर चिंतन करते हैं, जबकि पेट्रा एजेद्दीन, क्रिस्टीन क्रॉस और वासना हंडापांगोडा देखभाल के समकालीन अंतरराष्ट्रीय बाजारीकरण के विभिन्न रूपों की जांच करते हैं।

पांच साल पहले, हमने *ग्लोबल डायलॉग* के अपने संपादकीय कार्य को यह जानते हुए शुरू किया कि यह एक सम्मान की बात होगी, लेकिन इसके संस्थापक और पूर्व संपादक माइकल बुरावॉय के उत्तरवर्ती के रूप में सफल होना एक चुनौती भी होगी। अब जबकि हमारा संपादन कार्यकाल समाप्त हो रहा है, वर्षों से किए गए कार्यों के बारे में आकलन करने का कार्य *ग्लोबल डायलाग* के पाठकों का है। अपने सहायक संपादक राफेल डिंडल, जोहाना ग्रुबनेर, वालिद इब्राहिम और क्रिस्टीन स्किकर्ट, जिन्होंने इस पूरे समय में बहुत अच्छा काम किया है, के साथ हम क्षेत्रीय संपादकों और दुनिया भर से उनकी टीमों के प्रति जिन्होंने वास्तव में *ग्लोबल डायलॉग* को व्यापक शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक दर्शकों के लिए वैश्विक और सुलभ बनाया; पत्रिका की रचनात्मक और संगठनात्मक रीढ़ के रूप में प्रबंध संपादक लोला बसुत्तिल और अगस्त बागा; मूल्यवान कॉपी एडिटिंग के लिए सहायक संपादक अपर्णा सुन्दर और क्रिस्टोफर इवांस; आईएसए अध्यक्ष और सचिवालय के उनके निरंतर सहयोग; और दुनिया भर के कई स्थानों से समाजशास्त्र में अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए *ग्लोबल डायलाग* के सभी लेखकों के अद्भुत और प्रेरक सहयोग के लिए बहुत आभारी हैं। इस अद्भुत *ग्लोबल डायलॉग* टीम का सक्रिय हिस्सा बनना मेरे लिए खुशी की बात है और हम उन सभी को याद करेंगे। हमें अब इसके नए संपादक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनैतिक समाजशास्त्री और आईएसए के लम्बे समय से सक्रिय सदस्य ब्रेनो ब्रिंजल का स्वागत करने में अत्यंत खुशी हो रही है, जो निसंदेह आने वाले वर्षों में ग्लोबल डायलाग को और आगे और ऊपर ले जायेंगे। ■

ब्रिगिट औलेनबैकर और **क्लॉस डोर्रे**,
वैश्विक सवांद के संपादक

> वैश्विक संवाद जी.डी. वेबसाइट पर अनेक भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियाँ <globaldialogue.isa@gmail.com> पर भेजी जा सकती हैं।

International Sociological Association

GLOBAL DIALOGUE

> संपादक मण्डल

संपादक : ब्रिजिट ऑलनबॉकर, क्लॉस डोरे

सह–सम्पादक : राफेल डींडल, जोहाना ग्रबनर, वालिद इब्राहिम

सहयोगी सम्पादक : क्रिस्टोफर इवांस

प्रबंधन संपादक : लोला बुसुतिल, अगस्त बागा

सलाहकार : माइकल बुरावे

मीडिया सलाहकार : जुआन लेजाररगा

परामर्श संपादक :
साडी हनाफी, ज्योफी प्लीयर्स, फिलोमिन गुतिरेज, एलोइजा मार्टिन, सावाको शिराहेस, इजाबेला बरलिंस्का, तोबा बेन्सकी, चिह–जुए जेचेन, जेन फ्रित्ज, कोइची हासेगावा, हिरोशी इशिदा, ग्रेस खुनो, एलिसन लोकोन्तो, सुसन मेकडेनियल, एलिना ओइनास, लोरा ओसो कैसास, बंडाना पुर्कायस्था, रोहडा रेडॉक, मौनीर सैदानी, आयसे सकतांबर, सेली स्कालोन, नाजानीन शाहरोकनी।

क्षेत्रीय संपादक

अरब दुनिया : *(ट्यूनिशिया)* मौनीर सैदानी, फातिमा रधौनी; *(लेबनान)* साड़ी हनाफी।

अर्जेन्टीना : मैगडालेना लेमस, जुआन परसिआ, दांते मार्चिसिओ।

बांग्लादेश: हबीबुल खोंड़कर, खैरुल चौधरी, फातिमा रेजिना इकबाल, मुमिता तंजीला, मोहम्मद जसीम उद्दीन, बिजॉय कृष्णा बनिक, सबीना शर्मीन, अब्दुर रशीद, सरकर सोहेल राणा, मोहम्मद शाहिदुल इस्लाम, ए.बी.एम. नजमुस साकिब, ईशरत जहान ऑयमून, हेलल उद्दीन, मसुदुर रहमान, शमसुल आरेफिन, यास्मीन सुल्ताना, सैका परवीन, रुमा परवीन, सालेह अल ममून, एकरामुल कबीर राणा, शर्मिन अख्तर शप्ला, मोहम्मद शाहीन अख्तर।

ब्राजील : फेबरिसियो मासिएल एंजेलो मार्टिन्स जूनियर, एंड्रेजा गली, रिकार्डो वासीर, गुस्तावो दिअस, जोसे गुइराडो नेटो, जेसिका मज़िजनी मेंडिस।

फ्राँस/स्पेन : लोला बुसुतिल

भारत : रश्मि जैन, राकेश राणा, मनीष यादव, प्रज्ञा शर्मा।

इंडोनेशिया : हरि नुग्रोहो, लूसिया रतीह कुसुमादेवी, फिना इट्रियती, इंदेरा रत्ना इरावती पट्टिनसारानी, बेनेडिक्टस हरि जूलियावान, मोहम्मद शोहीबुद्दीन, डोमिंगगस एलसीड ली, एंटोनियस एरियो सेतो हार्डजाना, डायना तेरेसा पाकासी, नुरुल ऐनी, गेगेर रियांतो, आदित्य प्रदान सेतियादी।

ईरान : रेयहाने जावदी, नियाश डॉलाती, सैयद मोहम्मद मुतालेबी, एलहम शुशत्राजिदे।

कजाकिस्तान : अइगुल जाबिरोवा, बायन स्मागमबेट, आदिल रोदियोनोव, अल्माश त्लेसपयेवा, कुआनिश टेल, अलमागुल मुस्सीना, अकनूर ईमानकुल, मदियार एल्दियारोव।

पोलैंडः उर्स्जुला जारेका, जोआना बेडनारेक, मार्टा बास्ज़्ज़स्का, अन्ना टर्नर, अलेक्सांद्रा बिएरनका।

रोमानिया : रलुका पॉपेस्कू, राइसा–गेब्रियला जमीफिरेस्कू, बियांका मिहायला, रुक्सान्द्रा पादुरारु, ऐना–मारिया रेनेतिया, मारिया व्लासेनु।

रूस : ऐलेना ज्द्रावोम्यस्लोवा, डारिया खोलोडोवा।

ताईवान : वान–जू ली, ताओ–युंग लु, यू–वेन लिओ, पो–शुंग होन्ग, यी–शुओ हुआंग, चिएन–यिंग–चिएन, जी हाओ केर्क, मार्क यी–वेई लाई, यूं–जो लिन, यूं–हुआन चाउ।

तुर्की : गुल कोरबासियोग्लू, इरमक एवरेन।

इस संगोष्ठी में, लेखक ग्लोबल डायलॉग के संस्थापक और आईएसए के पूर्व अध्यक्ष माइकल बुरावॉय के काम और विशेष रूप से सार्वजनिक समाजशास्त्र के प्रश्न का पता लगाते हैं।

यूक्रेन और रोमानिया के शोधकर्ता यूक्रेन की वर्तमान स्थिति और रूसी आक्रमक युद्ध और समाजशास्त्र के लिए इसके क्या परिणाम है पर एक नजर डालते हैं।

सैद्धांतिक खंड सामाजिक आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य से उन कारणों पर चिंतन करता है कि क्यों फ्राइडे फॉर फ्यूचर अभियानों को हाल के दिनों की सबसे सफल सामूहिक कार्रवाई माना जा सकता है।

GD

सेज प्रकाशन की उदार ग्रांट से
वैश्विक संवाद का प्रकाशन संभव है।

> इस अंक में

संपादकीय 2

> समाजशास्त्र पर बातचीत

वैश्विकता से काम करना: श्रम अधिकारों की रक्षा करते समाजशास्त्री मिशेल फोर्ड के साथ एक साक्षात्कार
दिमित्रा लॉरेंस लॉरोशेल द्वारा 5

> माइकल बुरावॉय – जन समाजशास्त्री

रूसी संदर्भ में सार्वजनिक समाजशास्त्र
स्वेतलाना यारोशेंको और एलेना जड्रावोमिस्लोवा, रूस द्वारा 8

जन समाजशास्त्र को संवादात्मक समाजशास्त्र की ओर धकेलना
साड़ी हनाफी, लेबनान द्वारा 11

माइकल बुरावॉय और जन समाजशास्त्र पर चिंतन
मार्गरेट अब्राहम, यूएसए द्वारा 13

> प्रतिच्छेदित संवाद

प्रतिच्छेदन के बारे में स्थानीय और विश्व स्तर पर चिंतन
कैथी डेविस, नीदरलैंड्स और हेल्मा लुट्ज, जर्मनी द्वारा 15

प्रतिच्छेदित भविष्य को प्रतिछेदित अतीत सताता है
एन फीनिक्स, यूके द्वारा 17

सामाजिक आंदोलनों पर प्रतिच्छेदित परिप्रेक्ष्य
बारबरा जियोवाना बेल्लो, इटली द्वारा 20

प्रतिच्छेदित एकजुटता और प्रवासी देखभाल श्रमिक
एथेल तुंगोहन, कनाडा द्वारा 22

एक उपयुक्त प्रतिच्छेदन रूपक की खोज
अमुंड रेक हॉफर्ट, नॉर्वे द्वारा 24

एक आलोचनात्मक पद्धति के रूप में प्रतिच्छेदन
कैथी डेविस, नीदरलैंड्स और हेल्मा लुट्ज, जर्मनी द्वारा 26

> सैद्धांतिक दृष्टिकोण

फ्राइडेस फॉर फ्यूचर: एक सामाजिक आंदोलन परिप्रेक्ष्य
कोइची हसेगावा, जापान द्वारा 28

> यूक्रेन पर परिप्रेक्ष्य

रूसी–यूक्रेनी युद्ध समाजशास्त्र को कैसे प्रभावित करता है
नतालिया चेर्निश, यूक्रेन द्वारा 31

सामूहिक और व्यक्तिगत आघात
यूरी पचकोवस्की, यूक्रेन द्वारा 33

यूक्रेन में युद्ध ने, हम जो सोचते थे कि जानते हैं, को बदल दिया
डेरी क्रिस्टिया, रोमानिया द्वारा 35

> खुला अनुभाग

हमें तुलनात्मक रुप से प्रतिच्छेदित एलजीबीटी+ डेटा की आवश्यकता क्यों है?
सैत बेयकदार, यूके द्वारा 37

कौन जानता है? मान्यता, प्रशस्ति पत्र, और ज्ञानमीमांसीय अन्याय
जन बेसेविक, यूके द्वारा 39

मध्य और पूर्वी यूरोप में लाभदायक निकाय और देखभाल गतिशीलता
पेट्रा एज्जेडाइन, चेक गणराज्य और क्रिस्टीन क्रॉस, नीदरलैंड द्वारा 41

दलाली घरेलू काम: श्रीलंका–सऊदी बाजार
वासना हांडापांगोडा, ऑस्ट्रिया द्वारा 43

समाजशास्त्र में, सूक्ष्म–स्तरीय शोध में फंसना वास्तव में बहुत आसान है – और यह महत्वपूर्ण है – लेकिन इसे बड़े प्रश्नों के लिए स्पष्ट करने में सक्षम होना अच्छा है।

मिशेल फोर्ड

> वैश्विकता से काम करना:
श्रम अधिकारों की रक्षा करते समाजशास्त्री
मिशेल फोर्ड के साथ एक साक्षात्कार

प्रोफेसर **मिशेल फोर्ड** सिडनी दक्षिणपूर्व एशिया केंद्र, ऑस्ट्रेलिया की निदेशक हैं। उनका शोध कार्य दक्षिणपूर्व एशियाई श्रमिक आंदोलनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियनों के बीच प्रतिच्छेदन, श्रमिक प्रवास और राजनीतिक क्षेत्र में श्रम की भागीदारी पर केंद्रित है। उनके काम को इन और अन्य विषयों से संबंधित कई ऑस्ट्रेलियाई अनुसंधान परिषद (एआरसी) अनुदानों द्वारा समर्थित किया गया है। वर्तमान में वे म्यांमार के परिधान उद्योग और इंडोनेशिया के वाणिज्यिक मतस्य उद्योग में श्रम संबंधों पर एआरसी डिस्कवरी प्रोजेक्ट्स और कंबोडिया के निर्माण उद्योग में लिंग आधारित हिंसा के लिए ट्रेड यूनियन प्रतिक्रियाओं पर एक एआरसी लिंकेज प्रोजेक्ट का नेतृत्व कर रही हैं। अपने शैक्षणिक कार्यों के अलावा, वे अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO), अंतर्राष्ट्रीय श्रम आंदोलन और ऑस्ट्रेलियाई सरकार के लिए व्यापक परामर्श कार्य में शामिल रही हैं।

मिशेल फोर्ड का साक्षात्कार **दिमित्रा लॉरेंस लॉरोषेल** द्वारा किया गया है, जो यूनिवर्सिटी पॉलिटेक्निक हौट्स–डी–फ्रांस, फ्रांस में पोस्ट डाक्टरल छात्र हैं। वे संयुक्त राष्ट्र में आईएसए (इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन) की तरफ से युवा प्रतिनिधि हैं। वे संचार, ज्ञान और संस्कृति के समाजशास्त्र (आरसी14) पर आईएसए अनुसंधान समिति की बोर्ड सदस्य, *आर्ट स्टाइल । आर्ट एवं कल्चर अंतराष्ट्रीय पत्रिका* की सहयोगी संपादक और अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका *THESIS* के संपादक मंडल में सदस्य हैं।

डीएलएल: क्या आप कृपया मुझे अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के साथ अपने संबंधों के बारे में बता सकती हैं? आपने ILO के साथ कब तक और किन तरीकों से सहयोग किया है?

एमएफ: मैं पहली बार म्यांमार में आईएलओ के संपर्क में आई थी। 2013 में, मैं वहां संक्रमण के बाद कैसे औद्योगिक संबंध उभर रहे थे पर कुछ कार्य कर रही थी और उसके एक भाग के रूप में, मैंने आईएलओ के लिए काम करने वाले लोगों का साक्षात्कार लिया। चूंकि मैं सिडनी दक्षिणपूर्व एशिया केंद्र भी चलाती हूँ, मैंने यह फैसला किया कि संस्थागत रूप से संलग्न होना अच्छा होगा और उन्हें यह समझाने के लिए कि अन्य देश औद्योगिक संबंधों के आसपास क्या कर रहे थे, यूनियन वालों, नियोक्ताओं और सरकारी अधिकारियों के लिए एक कार्यशाला आयोजित करना सही होगा। मैंने इस विचार को म्यांमार में ILO के कार्यालय में रखा और उन्होंने सहर्ष सहयोग की सहमति दे दी। मंत्री और संबंधित महानिदेशकों सहित लगभग 70 या 80 लोगों ने भाग लिया। यह वास्तव में अच्छा सहयोग था। उसके बाद, उनमें से कुछ लोग, जो ILO में अन्य भूमिकाओं में चले गए, ने मुझे अन्य काम करने के लिए कहा। उदाहरण के लिए, मैंने अपने एक सहयोगी के साथ एशिया के आठ देशों में परिधान उद्योग पर एक पार्श्व आलेख पर काम किया, जिसे ILO के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा समर्थन दिया गया था।

फिर 2019 में, मैं वैश्विक यूनियनों के साथ कुछ क्षेत्रीय कार्य के लिए जिनेवा की यात्रा की। ILO में किसी ने मेरे द्वारा वैश्विक संघों और

> >

श्रम प्रवास पर लिखी पुस्तक को देखा था और मुझे एक प्रस्तुति देने के लिए कहा था और जब मैं वहां यह कर रही थी, मैंने कई लोगों का साक्षात्कार किया और उनमें से एक ब्यूरो फॉर वर्कर्स एक्टिविटीज (ACTRAV) के एशिया–प्रशांत डेस्क का प्रमुख था । बाद में उन्होंने मुझे इंडोनेशिया में पाम ऑयल उद्योग के श्रमिकों और एशिया और प्रशांत में डिजिटल यूनियन रणनीतियों पर शोध करने के लिए नियुक्त किया।

दिलचस्प बात यह है कि ILO पर प्रकाशित कुछ सामग्री काफी आलोचनात्मक रही है, जैसे म्यांमार में इसकी भूमिका पर लेकिन मुझे लगता है कि जिन लोगों के साथ मैं जुडी हूँ, वे वास्तव में इसके लिए काफी खुले हैं। मेरा मतलब है कि अगर वे खुले नहीं होते, तो वे मेरे साथ नहीं जुड़ते। ILO में जिन लोगों के साथ मैं जुडी हूँ, ने एक विवेचानत्मक मित्र/बाह्य व्यक्ति के रूप में मेरी भूमिका का सम्मान किया है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि उनके साथ जुड़ना मेरे लिए कोई समझौता है। अगर मुझे ऐसा लगता तो मैं ऐसा नहीं करती।

डीएलएल: क्या आप कृपया मुझे बता सकती हैं कि आप ILO में अपने समाजशास्त्रीय लेंस और कौशल को कैसे लागू करती हैं? अधिक सटीक रूप से, क्या आप बता सकती हैं कि श्रम संबंधी मुद्दों से संबंधित समाधानों को बढ़ाने के लिए समाजशास्त्री संयुक्त राष्ट्र के भीतर कैसे कार्य कर सकते हैं ?

एमएफ: मुझे लगता है कि मुख्य बात अकादमिक लेंस लगाना है। हम वे अंतर्दृष्टि उत्पन्न कर सकते हैं जो आवश्यक रूप से संस्था स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकती है। यदि आप इस पर नजर डालें कि ILO कैसे काम करता है, तो यह बहुत से लोगों को शोध करने के लिए नियुक्त करता है। मुझे उन परियोजनाओं की रुपरेखा बनाने में काफी स्वतंत्रता दी गई है क्योंकि वे सभी आकलन करने वाली के बजाय पृष्ठभूमि अनुसंधान–उन्मुख परियोजनाएं हैं। मैंने अंतर्राष्ट्रीय यूनियन आंदोलन के लिए बहुत सारा आकलन कार्य किया है, और ये काफी अलग रहे हैं। ILO के मामले में, कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका वे उत्तर चाहते हैं, लेकिन इसके अलावा वे मुझे परियोजना को संरचित करने के लिए की अनुमति देने में काफी खुले हैं और यहीं पर मैं अपनी शैक्षणिक विशेषज्ञता को ला सकती हूँ, है ना? इसलिए, मैं निर्णय कर सकती हूँ कि मुझे किस तरह के आंकड़े चाहिए और उन्हें कैसे एकत्रित किया जाना चाहिए और मैं उन्हें कैसे संसाधित करती हूँ।

जब मैंने शुरू किया, तो मुझे चिंता थी कि मेरा काम कुछ सेंसरशिप के अधीन हो सकता है, क्योंकि ILO को सरकारी दृष्टिकोणों के साथ–साथ संघ और नियोक्ता के दृष्टिकोण के बारे में संवेदनशील होना पड़ता है– और अगर ऐसा होता, तो मैं उनके साथ काम करना बंद कर देती। लेकिन मैंने महसूस नहीं किया कि मुझ पर कोई प्रतिबंध है। यह एक सुखद आश्चर्य रहा है! शायद यही एक कारण है कि वे [हंसते हुए] बहस में विभिन्न विचारों को पेश करने के लिए बाहरी शोधकर्ताओं को पसंद करते हैं।

डीएलएल: आपने पहले कहा था कि आप आलोचनात्मक प्रतिक्रिया देती हैं और आईएलओ के भीतर लोग बहुत खुले हैं और आप पर कोई प्रतिबंध नहीं है। हालाँकि, क्या आपने किसी अन्य चुनौती का सामना किया है? सामान्य तौर पर, अंतरराष्ट्रीय संगठनों में काम करते समय एक समाजशास्त्री को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है? और अगर आपको कभी किन्हीं अन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा है तो आपने उनको कैसे पार किया ?

एमएफ: सच तो यह है, यह शायद ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में कोई भी संगठन पढ़ना चाहेगा, [हंसते हुए] लेकिन आईएलओ में बहुत नौकरशाही कार्यप्रणाली है। इस कारण से वे बहुत धीमी गति से चलते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, एक हालिया परियोजना पर, उन्होंने एशिया–प्रशांत में यूनियनों के साथ मेरे लिए कई साक्षात्कारों का आयोजन किया। मेरा मतलब है, एक तरफ ये बहुत मददगार था। लेकिन मेरे लिए इसे खुद करना जल्दी होता। नौकरशाही को नेविगेट करने में बहुत समय लगता है। यह एक बड़ा संगठन है इसलिए जब आप उनके साथ काम करते हैं, तो आपको उनके काम करने के तरीके से काम करना पड़ता है। काम पूरा करने की सभी यांत्रिकी ... वे बहुत अलग हैं, जैसे, एक गैर सरकारी संगठन जिसमें बहुत लचीलापन है और एक छोटी टीम के साथ काम करने से, ताकि चीजें तेजी से हो सकें। लेकिन निश्चित रूप से इसके लाभ भी हैं क्योंकि आईएलओ के लिए किए गए शोध में कुछ सम्मान होता है। यह एक अच्छा सीवी बिल्डर है। मैं एक पूर्णकालिक प्रोफेसर हूं, इसलिए यह मेरे लिए अकादमिक दृष्टि से बहुत मायने नहीं रखता है, लेकिन अन्य प्रकार के व्यवहारिक कार्यों के लिए साख के मामले में, ILO के लिए काम करना बहुत मददगार है।

मुझे लगता है कि यह बहुत अलग होगा यदि आप एक अकादमिक व्यक्ति नहीं हों, यदि आप परामर्श भूमि में रह रहे हों। उन परिस्थितियों में लोगों के लिए, यह मुश्किल हो सकता है, क्योंकि ILO सलाहकारों के लिए काम करने की बहुत अच्छी स्थिति प्रदान नहीं करता है, या बहुत अच्छा भुगतान नहीं करता है! लेकिन एक अकादमिक के रूप में, यह वास्तव में अच्छा है। हमारे पास बहस को प्रभावित करने का अवसर है, है ना? ये लोग ILO द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में निर्णय ले रहे हैं। उनकी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल होने का अवसर मिलना एक वास्तविक विशेषाधिकार है। यह हमारे अकादमिक और बौद्धिक कौशल को वास्तविक दुनिया की समस्या पर लागू करने का एक तरीका है और आप वास्तव में ठोस परिणाम में योगदान दे सकते हैं क्योंकि यह एक ऐसा निकाय है जो चीजों को प्रभावित कर सकता है।

डीएलएल: आपको क्या लगता है कि संयुक्त राष्ट्र के भीतर समाजशास्त्री के जुड़ाव की क्या सीमाएँ हैं?

एमएफ: मुझे लगता है कि संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में संगठन बहुत बड़े संगठन हैं जिनमें बहुत सारे हितधारक हैं। उन हितधारकों के कारण सब कुछ को राजनीतिक रूप से बहुत मापा जाना चाहिए। इसके अलावा, ILO के पास अपेक्षाकृत छोटा फंडिंग आधार है। इसलिए, कई मायनों में इसे अपने दाताओं के एजेंडे का प्रत्युत्तर देना पड़ता है। कभी–कभी यह वास्तव में अच्छे काम की सुविधा प्रदान कर सकता है, लेकिन कभी–कभी अच्छे काम को छोड़ना पड़ता है क्योंकि वहाँ किसी प्रकार का वित्तपोषण नहीं है या, आप जानते हैं, दाताओं के अजेंडे की प्रकृति के कारण लोगों के प्रयासों को एक विशेष दिशा में धकेल दिया जाता है। ILO के मामले में, इसकी अधिकांश गतिविधियों को वित्तपोषित करने वाले देशों की संख्या काफी छोटी है। अत:, निश्चित रूप से यह एजेंडा को आकार देता है। आवश्यक रूप से यह एक नकारात्मक बात नहीं है, लेकिन यह समाजशास्त्रियों के प्रभाव डालने के अवसरों की एक सीमा है।

डीएलएल: 2020 से, हम एक वैश्विक महामारी का सामना कर रहे हैं जिसका अनिवार्य रूप से दुनिया भर में श्रम और काम करने की स्थिति पर महत्वपूर्ण परिणाम हैं। महामारी के दौरान श्रमिकों के अधिकारों को मजबूत करने के लिए आपने किन नीतियों को बढ़ावा दिया है? क्या आपकी राय में ऐसे कोई क्षेत्र हैं जिनकी अनदेखी की गई है?

एमएफ: इतनी अधिक अनदेखी नहीं की गई, लेकिन कुछ प्रमुख क्षेत्रों के संदर्भ में, इस समय के कुछ ज्वलंत मुद्दे, जैसे आपूर्ति

>>

श्रृंखलाओं में परिस्थितियाँ। अगर हम परिधान उद्योग को देखें, जब कोविड फैला, तो लॉजिस्टिक्स में अड़चनें और उपभोक्ता ऑर्डर में गिरावट थी। अचानक अब फैक्ट्रियों के पास ऑर्डर नहीं थे। उन्हें या तो लोगों के काम के घंटे कम करने पड़े या उन्हें हटाना पड़ा। उसमें, ब्रांड उन सभी चीजों को लेकर बहुत हंगामा करते हैं जो वे श्रमिकों के लिए करते हैं। लेकिन फिर कोविड जैसे संकट के समय में, आप देखते हैं कि वे कितनी जल्दी पीछे हट जाते हैं। पिछले 20 से 30 वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय श्रम प्रशासन पर बहुत काम किया गया है, जिसमें ILO के माध्यम से भी शामिल है। लेकिन वास्तव में ऐसी व्यवस्थाओं के मामले में जहां श्रम अधिकारों के मामले में सही काम नहीं करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मंजूरी दी जाती है, हमें एक बहुत लंबा रास्ता तय करना है।

जाहिर है, इस समय काम और औद्योगिक संबंधों के समाजशास्त्रियों के लिए गिग इकॉनमी काफी रूचि का विषय है और कुछ संदर्भों में, यह वास्तव में काम की औपचारिकता को अग्रेषित कर सकता है। अतः, भारत और इंडोनेशिया जैसे देशों में, वे लोग जो पहले अनौपचारिक थे, के पास कम से कम कोई तो है जिसके खिलाफ वे संगठित हो सकें। लेकिन फिर, दूसरी तरफ, ये प्लेटफॉर्म्स इतने शक्तिशाली हैं कि श्रम अधिकारों को बनाए रखना एक वास्तविक चुनौती हो सकती है। यह उत्साहजनक है कि अब ऐसे अदालती मामले हैं जहां श्रमिकों के रूप में डिलीवरी ड्राइवरों की स्थिति को मान्यता दी जा रही है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ILO या किसी और के पास वास्तव में अभी तक इस बारे में एक अच्छा विचार है कि काम के इन उभरते रूपों को कैसे विनियोजित किया जाये।

ILO ने पिछले कुछ वर्षों में जो बहुत अच्छा काम किया है, वह अनौपचारिक क्षेत्र के बेहतर ढंग से काम को समझने की कोशिश करना है और यह वास्तव में डिजिटल प्लेटफॉर्म के काम से संबंधित है। कई मायनों में डिजिटल प्लेटफॉर्म कार्य औपचारिक रोजगार और अनौपचारिक क्षेत्र के रोजगार के मध्य का एक मध्यवर्ती रूप है। मुझे लगता है कि एक समाजशास्त्री के रूप में और वे लोग जो वास्तविक दुनिया में संलग्न रहना चाहते है, दोनों के लिए अनौपचारिक क्षेत्रों में श्रमिक के हितों का प्रतिनिधित्व करने के भिन्न तरीकों को देखने का यह एक अवसर है।

मुझे लगता है कि वे मेरे तीन बड़े मुद्दे होंगे। ये नए मुद्दे नहीं हैं या विशेष रूप से कोविड से संबंधित नहीं हैं, लेकिन कोविड ने वास्तव में उन उद्योगों में समस्याओं को रेखांकित किया है। और फिर आम तौर पर, कल्याणकारी राज्य का पीछे हटना, और उन देशों में कल्याणकारी राज्य की अनुपस्थिति जहाँ पहले भी ऐसा नहीं था। आप जानते हैं, यह ऐसे समय में होता है जहां यह वास्तव में स्पष्ट हो जाता है कि यह व्यक्तियों को कितनी गहराई से प्रभावित करता है। यदि आप नॉर्वे या ग्रीस या कांगो में हैं, तो जीवन बहुत अलग है और महामारी जैसी किसी चीज का प्रभाव बहुत अलग है। मेरे विचार से इस तरीके में भी, कल्याण राज्य के पुनः समर्थन के मामले को बनाने के लिए हथियारों का आह्वान है, महामारी ने वास्तव में एक सामाजिक सुरक्षा जाल होने के महत्व पर जोर दिया है।

डीएलएलः क्या आपके पास अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में करियर शुरू करने वाले कनिष्ठ समाजशास्त्रियों और सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए कोई सलाह है? क्या आपके पास नौकरी के अवसर तलाशने के बारे में कोई सुझाव या जानकारी है?

एमएफः संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के संगठन पहले से ही कार्यक्षेत्र में कनिष्ठ सामाजिक वैज्ञानिकों के एक बड़े नियोक्ता हैं, इसलिए सिस्टम में और सिस्टम के आसपास एकत्रित अन्य प्रकार के संगठनों में भी बहुत सारी नौकरियां हैं। अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों में और अन्य में, पीएचडी वाले बहुत से लोग भी हैं।

अगर कोई अकादमिक पथ पर है, तो मुझे वास्तव में लगता है कि ILO जैसे संगठनों के साथ जुड़ना बहुत लाभदायक है। यह हमारे शोध को यथार्थ में जड़ता है, और हमें सूक्ष्म स्तर से बाहर ले जाता है। समाजशास्त्र में, सूक्ष्म–स्तरीय शोध में फंसना वास्तव में बहुत आसान है– और यह महत्वपूर्ण है– लेकिन इसे बड़े प्रश्नों के लिए स्पष्ट करने में सक्षम होना अच्छा है। संयुक्त राष्ट्र प्रणाली कैसे काम करती है, यह देखकर हमें कुछ बड़े प्रश्न उत्पन्न करने में मदद मिलती है। जरुरी नहीं है कि उन प्रश्नों के उत्तर वे हो जिन्हें स्वयं व्यवस्था सुनना चाहती हो। लेकिन वास्तव में संलग्न लेकिन आलोचनात्मक आवाज होने के कारण, मुझे लगता है कि हमारे पास न केवल उस स्वयं व्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता है, बल्कि दुनिया भर के समाज में उन समूहों को भी जिनकी सेवा व्यवस्था करना चाहती है।

व्यावहारिक सामग्री के संदर्भ में, कनिष्ठ शोधकर्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे टीमों में शामिल हों, अपने क्षेत्र के भीतर नेटवर्क करें, चिकित्सकों के साथ संपर्क करें, एक अच्छा योगदानकर्ता बनें ... ताकि जब कोई परियोजना में शामिल होने के लिए किसी की तलाश कर रहा हो, तो वे आपके बारे में सोचें। एक तरफ नेटवर्किंग है और फिर अपनी अहमियत साबित करना भी है। आखिरकार, आप उन लोगों में से एक बन जाते हैं जिनके पास लोग आते हैं। ■

सभी पत्राचार मिशेल फोर्ड को <michele.ford@sydney.edu.au> पर प्रेषित करें।

> रूसी संदर्भ में सार्वजनिक समाजशास्त्र

स्वेतलाना यारोशेंको और **एलेना जड्रावोमिस्लोवा**, सेंट पीटर्सबर्ग एसोसिएशन ऑफ सोशियोलॉजिस्ट, रूस द्वारा

''सेंट पीटर्सबर्ग में सार्वजनिक समाजशास्त्र पर बहस'', यूजेनिया गोलंट 2015

इस लेख में, हम आज के रूस में जन समाजशास्त्र के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करते हैं। हम जिस अंतर्निहित प्रश्न को संबोधित करते हैं वह है: हम ऐसे राजनीतिक शासन में पेशेवर प्रतिबद्धता के बारे में क्या कह सकते हैं जिसका नाम अभी भी पाया जाना है? वर्तमान में हम ''विशेष सैन्य अभियान'' के वास्तविक मनहूस दुःस्वप्न –यूक्रेन में युद्ध– को जी रहे हैं और यहां हम *in statu nascendi* में समाजशास्त्र पर इसके प्रभावों का वर्णन करते हैं। हम रूस में होने वाली चर्चाओं और शोध का उल्लेख करते हैं, हमारे पेशेवर अनुभव के लिए, और माइकल बुरावॉय की 2021 की पुस्तक *पब्लिक सोशियोलॉजीः बिटवीन यूटोपिया एंड एंटी–यूटोपिया* के लिए, जिस पर हमने सहयोगियों के साथ चर्चा की है, जिसमें बुरावॉय द्वारा प्रस्तावना में उल्लेखित लोग और शोधकर्ता, जिन्होंने रुसी जन समाजशास्त्र के विकास में योगदान दिया है, सम्मिलित हैं।

> माइकल बुरावॉय से प्रेरणा

माइकल बुरावॉय गैर–लोकतांत्रिक शासनों में समाजशास्त्र की कई विशेषताओं की पहचान करते है। उनका कहना है कि ऐसी परिस्थितियों में समाजशास्त्र ''पार्टी–राज्य की विचारधारा के लिए एक संचरण बेल्ट'' के रूप में कार्य करता है और मुख्य रूप से दास नीति समाजशास्त्र के रूप में मौजूद रहता है। अकादमिक स्वतंत्रता सीमित होती है और विद्वान अपनी पेशेवर गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण का अनुभव करते हैं। हम मानते हैं कि पार्टी–राज्य के लिए इस तरह का अधीनस्थ अभिविन्यास रूस में समाजशास्त्र का एक अवांछित जन्मचिह्न है और इस मार्ग का पालन करना मुश्किल है।

हालांकि, रूसी समाजशास्त्रीय परिदृश्य में विवेचनात्मक पेशेवर समाजशास्त्र की विरोधी धारा और सार्वजनिक खुलेपन के प्रति इसकी प्रतिबद्धता भी महत्वपूर्ण हैं। जबकि अनुभवजन्य समाजशास्त्र आम तौर पर निर्देशित या निर्देशित नीति अनुसंधान के रूप में मौजूद है, ऐसे समाजशास्त्री भी हैं जो पेशेवर स्वायत्तता के लिए, स्वतंत्र विशेषज्ञता प्रदान करने के अधिकार के लिए, और समाजशास्त्रीय समुदाय के भीतर और गैर–शैक्षणिक जनता के साथ मुद्दों पर खुले तौर पर चर्चा करने की संभावना के लिए लड़ रहे हैं। रूसी समाजशास्त्रियों ने हमेशा सार्वजनिक बुद्धिजीवी बनने का प्रयास किया है। सोवियत समय में, सर्वश्रेष्ठ समाजशास्त्रियों ने उनके शोध के केवल सजावटी चरित्र और व्यर्थता के बारे में दुखी हो कर शिकायत की। उन्होंने सामाजिक निदान प्रदान किया और सलाह दी जिसे सत्तावादी शासन में किसी ने नहीं सुनी।

बुरावॉय का दावा है कि ''फलने के लिए, हमारे विषय को सार्वजनिक जुड़ाव की आवश्यकता है।'' रूसी समाजशास्त्रियों का स्व–चिंतन इस कथन की पुष्टि करता है। 2000 के दशक में रूसी समाजशास्त्रियों के लिए संभावनाओं पर बहस करते हुए, विद्वानों ने सहमति व्यक्त की कि ''सैद्धांतिक गरीबी'' और व्यावसायिकता का अभाव नागरिक समाज की कमजोरी, संस्थागतकरण में अंतराल और स्वायत्तता की कमी के कारण होता है (रोमानोव और यार्सकाया 2008, सोकोलोव 2009)। पेशेवर समुदाय के एक हिस्से ने आशा व्यक्त की कि वैश्विक समाजशास्त्रीय समुदाय में लोकतंत्रीकरण और एकीकरण से उथली और दास नीति समाजशास्त्र की सीमाओं को दूर करने में मदद मिलेगी। अन्य ने विखंडन की प्रवृत्ति और पेशेवर संचार की कमी पर जोर दिया (लिटकिना और यारोशेंको 2019)।

> 21वीं सदी में जन समाजशास्त्र की उपलब्धियां

सोवियत काल के बाद, सार्वजनिक क्षेत्र में समाजशास्त्र की दृश्यता बढ़ी है। जन समाजशास्त्र के दावे हमेशा हमारे पेशे के लोकप्रिय विचार के अनुरूप रहे हैं। रूसी समाजशास्त्रियों की नई पीढ़ी का मानना है कि समाजशास्त्रीय शोध करना नागरिकों के साथ जुड़ना है; वे जमीनी स्तर की पहलों और गैर सरकारी संगठनों को लक्षित करके अनुसंधान करते हैं। इस प्रकार, जैविक जन समाजशास्त्र के विचार ने पेशेवर रूसी समुदाय के भीतर समर्थन प्राप्त किया है।

लेकिन अधिकांश भाग के लिए, जो हम अभी भी देखते हैं वह पारंपरिक जन समाजशास्त्र के प्रभाव हैं: सार्वजनिक व्याख्यान, साक्षात्कार, विशेषज्ञ मूल्यांकन, अनुसंधान डेटा का लोकप्रियकरण; इन सभी गतिविधियों को अब पेशेवर रेटिंग में गिना जाता है। सार्वजनिक जुड़ाव संस्थाओं और व्यक्तियों के लिए भौतिक और प्रतीकात्मक लाभ लाता है। पिछले कुछ दशकों में, रूसी समाजशास्त्रियों ने मीडिया के साथ संवाद करना सीख लिया है (विश्वसनीय मीडिया वार्ताकारों के सूचित विकल्प बनाकर)। यह जानकारी रूस में पारंपरिक जन समाजशास्त्र की उपलब्धि बन गई है। कुछ समय के लिए, एक राजनीतिक विभाजन हुआ है जो रूस में समाजशास्त्रीय क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गया है। कुछ समय पहले तक, विभिन्न शिविरों के प्रतिनिधियों ने प्रचार के अपने–अपने साधन खोजे थे। विवेचनात्मक सार्वजनिक समाजशास्त्रियों के लिए, उनके साथ कार्य

> >

करने को तैयार विभिन्न एजेंसीज से बना एक विश्वसनीय स्थान है जिसमें रेडियो चैनल *द इको ऑफ मास्को, द नोवाया गजट* समाचार पत्र और कई ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं।

हालाँकि, सत्तावादी शासन के कड़े होने के साथ, सार्वजनिक क्षेत्र धीरे–धीरे सिकुड़ गया है। आलोचनात्मक पत्रकारिता और अनुसंधान, जिसका प्रतिनिधित्व व्यक्तियों और संस्थानों दोनों द्वारा किया जाता है, को आधिकारिक सार्वजनिक क्षेत्र से बाहर कर दिया गया है। उन्हें या तो ''विदेशी एजेंट'' के रूप में लेबल किया गया है, स्व–सेंसरशिप के माध्यम से वैचारिक परिवर्तन हुए हैं, या उन्हें बस समाप्त कर दिया गया है।

> दमनकारी कानून, नागरिक समाज की शक्तिहीनता, और जन समाजशास्त्र का दम घुटना

24 फरवरी, 2022 के दुर्भाग्यपूर्ण दिन से पहले, जब रूसी राज्य के अधिकारियों द्वारा यूक्रेन में ''विशेष सैन्य अभियान'' शुरू किया गया था, निरंकुशता ने रूसी नागरिक समाज को सफलतापूर्वक कमजोर कर, राज्य की नीति को प्रभावित करने के लिए लोकप्रिय वर्गों की क्षमता को सीमित कर दिया। 2011–12 में चुनावी धोखाधड़ी के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध के बाद रूसी विधायिका द्वारा पारित दमनकारी कानूनों के एक समूह द्वारा हाल के उत्पीड़न को कानूनी रूप से संभव बनाया गया था। अधिक विशेष रूप से, ''समलैंगिक प्रचार'' कानून (2013) बोलने की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता है और LGBTQI+ समुदाय का अपराधीकरण करता है। इसने रूस में लिंग अध्ययन के जकड़जाम में योगदान दिया है। ''विदेशी एजेंटों पर कानून'' (2012) ने नागरिक समाज के श्वासावरोध और जैविक जन समाजशास्त्र परियोजनाओं में लगे गैर–राज्य संस्थानों की व्यावसायिक गतिविधियों के प्रतिबंध के कारण एक गैरोट के रूप में कार्य किया है। इस कानून ने शुरू में राजनीतिक गतिविधियों में शामिल और अंतरराष्ट्रीय अनुदान प्राप्त करने वाले गैर सरकारी संगठनों को लक्षित किया। आजकल, नीति और सार्वजनिक वकालत अनुसंधान ऐसी योग्यताओं का उद्देश्य बन गया है। मानवाधिकार संगठन और गैर–सरकारी अनुसंधान संस्थान जैसे मेमोरियल, लेवाडा सेंटर, सेंटर फॉर इंडिपेंडेंट सोशल रिसर्च, और लिंग अध्ययन केंद्र विदेशी एजेंटों (एफए) के रूप में सूचीबद्ध होने वाले पहले टारगेट थे। इस ''विषाक्त'' स्थिति की लागत अक्सर सामाजिक अनुसंधान के लिए दुर्गम बाधाएं होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ साथ वित्तीय मितव्यत्ता और नौकरशाही खर्च कम हो जाता है (स्किबो 2020)।

दमनकारी कानूनों के प्रवर्तन ने इसी तरह रूसी नागरिक समाज का गला घोंट दिया है। इसकी आवाजें कमजोर हो गई हैं मानो दम घुटने से बचने की कोशिश कर रही हों। सक्रिय नागरिक, नागरिक पहल और गैर सरकारी संगठन उत्पीड़न से डरते हैं। सार्वजनिक भय के साथ–साथ वास्तविक दमन ने सार्वजनिक समाजशास्त्र के लिए सांस लेने में कठिनाई पैदा की है।

अधिकांश गैर सरकारी संगठनों ने स्थिति को कलंकित करने से बचने की कोशिश की है और आत्म–परिसमापन की रणनीति को चुना है। (कई लिंग अध्ययन केंद्र बंद हो गए हैं) कुछ ''एफए'' गैर सरकारी संगठनों ने जन अस्तित्व में रहने हेतु, स्वयं आरोपित प्रयोग करते हुए अपनी गतिविधियों को चालू रखा है। शोधकर्ता और पत्रकार, जो दम घोटूं परिस्थितियों में ''हमेशा की तरह व्यवसाय'' जारी रखने की कोशिश कर रहे हैं, के लिए स्व–सेंसरशिप एक और लोकप्रिय रणनीति बन गई है। जहाँ आधिकारिक मीडिया चौनलों ने एफए के साथ संपर्क प्रतिबंधित कर दिया है, सोशल मीडिया ने खुली चर्चा और खुली सांस लेने के लिए एक वैकल्पिक सार्वजनिक क्षेत्र का गठन करना शुरू कर दिया है।

हालाँकि, यह रूसी नागरिक समाज के उस हिस्से के खिलाफ ''विशेष अभियान'' का केवल प्रारंभिक चरण था जो अभी भी चुप नहीं था। कोविड–19 महामारी के दो वर्षों ने निरंकुशता को सार्वजनिक आयोजनों पर रोक लगाने, विरोध प्रदर्शनों को कुचलने और अंतरराष्ट्रीय मामलों से जनता का ध्यान स्वास्थ्य खतरों और व्यक्तिगत जीवन की ओर स्थानांतरित करने में मदद की है।

> विशेष सैन्य अभियान का डिस्टोपिया और जन समाजशास्त्र का श्वासावरोध

यूक्रेन में युद्ध शुरू होने के बाद से स्थिति काफी खराब हो गई है। दमनकारी कानूनों की एक नई श्रृंखला ने सार्वजनिक चर्चा को बंद किया और प्रतिरोधों का अपराधीकरण किया है। एफए कानून में 2022 के संशोधन उत्पीड़न के लिए टार्गेट और बहाने की सीमा का विस्तार करते हैं। ''अवांछनीय संगठन'' और ''अमित्र देश'' की नई स्थिति ने अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग की दिशा में प्रयासों को तोड़ दिया। इस संदर्भ में, जन समाजशास्त्र के विशेषज्ञों को आसानी से विदेशी एजेंटों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और उत्पीड़ितों की श्रेणी में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है। यह उन शोधकर्ताओं और संस्थानों के साथ भी हो सकता है जो अपने गैर–राजनीतिक दृष्टिकोण और अकादमिक तटस्थता में अपने विश्वास को प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं।

इस माहौल में, चापलूस/गुलाम और आलोचनात्मक समाजशास्त्रियों के बीच पुराने राजनीतिक विभाजन पुनर्जीवित हुए हैं। युद्ध के प्रारम्भ होने के बाद, सामाजिक वैज्ञानिकों ने समर्थन और विरोध के खुले पत्रों में अपनी स्थिति व्यक्त की है। कई प्रदर्शनकारियों को आंतरिक या बाहरी निर्वासन (उम्मीद है, अस्थायी रूप से) का विकल्प चुनना पड़ा है।

मार्च 2022 में, मीडिया ने 180 हस्ताक्षरों के साथ एक रेक्टर यूनियन का समर्थन पत्र प्रसारित किया। यह राजनीतिक संकेत उन विश्वविद्यालयों और उनके कर्मचारियों को कुछ हद तक सुरक्षा की गारंटी देता प्रतीत होता था, लेकिन इसने इन संस्थानों को अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक समुदाय में कैंसिल (रद्द) संस्कृति का निशाना बना दिया। इसके साथ ही, विरोध पत्रों पर हस्ताक्षर किए गए, व्यक्तिगत शोधकर्ताओं और स्वतंत्र संस्थानों ने अपने सोशल मीडिया साइटों (टेलीग्राम, फेसबुक और इंस्टाग्राम चौनल) पर विरोध बयान पोस्ट किए। विरोध पत्रों ने रूसी समाज और शिक्षाविदों (डबरोव्स्की और मेयर 2022) के लिए युद्ध के विनाशकारी परिणामों पर जोर दिया। युद्ध के प्रारम्भ के तुरंत बाद, रूस में इंस्टाग्राम और फेसबुक को अवरुद्ध कर दिया गया था, और गैर–प्रतिबंधित सोशल मीडिया का उपयोग केवल वीपीएन के उपयोग के माध्यम से उपलब्ध था।

हालांकि, अधिकांश समाजशास्त्री आक्रमण पर कोई खुला बयान देने से बचते हैं। बयानबाजी से बचने वाले अपने चयन की व्याख्या ''पेशेवर तटस्थता'' के विवेचन द्वारा करते हैं। वे एक विद्वान की तटस्थ तर्कसंगतता में विश्वास करते हैं, जिसे शांत रहना चाहिए, विशेषज्ञता प्रदान करनी चाहिए, और राजनीतिक मुद्दों से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। यह तार्किक वितर्क कदाचित सार्वजनिक क्षेत्र में व्याप्त भय की मजबूत भावनाओं से प्रेरित हैं।

सार्वजनिक भय के वातावरण का जन समाजशास्त्र पर अशक्तकारी और दमघोटूं प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, कुछ समाजशास्त्रीय मुद्दों पर आधिकारिक और वैकल्पिक सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में जोर–शोर से चर्चा की जाती है।

>>

> अभिमत सर्वेक्षण की आलोचना

एक महत्वपूर्ण विषय है जिसका पारंपरिक सार्वजनिक समाजशास्त्र से सीधा संबंध है। विपक्षी समाजशास्त्री दमनकारी शासन में और सैन्य संघर्ष के दौरान अभिमत सर्वेक्षण की पद्धति की आलोचना करते हैं। उनका दावा है कि सैन्य अभियान के समर्थन को दर्शाने वाले आंकड़ों को वास्तविक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। जनता का भय लोगों के उत्तरों को विकृत कर देता है; पारंपरिक जन समाजशास्त्र राजनीतिक हेरफेर का विषय बन गया है, और इसके परिणाम युद्ध और आर्थिक प्रतिबंधों (यूडिन 2022) के बचाव में जुटाए गए हैं। विपक्षी सार्वजनिक बुद्धिजीवियों के बीच इस तरह की आलोचना को सर्वसम्मति प्राप्त है, जबकि जो लोग वफादारी व्यक्त करते हैं वे अभिमत सर्वेक्षण के आंकड़ों को सच मान लेते हैं।

> समाजशास्त्रियों की रणनीतियाँ

जब अकादमिक स्वतंत्रता में कटौती की जाती है और जन समाजशास्त्र का दम घुटता है, तो समाजशास्त्री क्या रणनीति अपना सकते हैं? अधिकांश शिक्षाविद अपने पारंपरिक व्यवसाय को हमेशा की तरह जारी रखते हैं – उन्हें अपनी कार्य स्थिति का कोई विकल्प नहीं दिखता है। वे अक्सर मानते हैं कि पेशेवर कर्तव्यों को निभाने और ''शांत रहने और आगे बढ़ने'' के लिए अभी भी जगह है। हमारे सहयोगी उनकी शैक्षिक जिम्मेदारियों पर जोर देते हैं, छात्रों को शर्मिंदगी और मोहभंग की भावनाओं को दूर करने में मदद करने के महत्व पर जोर देते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं कि यह नृवंशविज्ञान का समय है और टूटते जीवन–संसार की विभिन्न सेटिंग्स में क्षेत्र अनुसंधान और डायरी को प्रेरित करने का अब समय है। अन्य शास्त्रीय कृत्यों में अधिनायकवाद और डिस्टोपिया के विश्लेषण की ओर मुड़ते हैं, जिसके बारे में उनका मानना है कि वह वर्तमान सामाजिक यथार्थ में प्रमुख बदलावों का विश्लेषण करने में मदद कर सकता है।

हम देखते हैं कि कई छात्र और विद्वान हमारे विषय के प्रति ''असहाय मोहभंग'' महसूस करते हैं। उन्होंने महसूस किया है कि जन समाजशास्त्र में शामिल होना कितना खतरनाक है, पेशेवर काम और नागरिक जुड़ाव के संयोजन से होने वाली लागत कितनी बड़ी हो सकती है। रूस में पेशेवर कार्य को जारी रखने की संभावनाओं के प्रति भय के साथ साथ उम्मीद का अभाव अलगाव और जोखिम पर विद्वान का पुनर्वास (आशा है अस्थायी) को अग्रेषित करता है। जन समाजशास्त्र के लिए पर्याप्त समां नहीं है, इसकी संभावनाएं मौलिक रूप से कम हो गई हैं, और प्रतिरोध करने वाले समाजशास्त्री सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक वैकल्पिक खुले सार्वजनिक स्थान को व्यवस्थित करने की कोशिश कर रहे हैं जहां वे खुलकर बोल सकते हैं।

> एक वास्तविक यूटोपियन आशा के रूप में एक वैकल्पिक सार्वजनिक क्षेत्र

प्रतिरोधी आलोचक समाजशास्त्री रूस और विश्व स्तर पर अपनी आवाज बुलंद करने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी रणनीति पेशेवर काम जारी रखने और नई सूचना प्रौद्योगिकियों द्वारा उपलब्ध कराए गए वैकल्पिक सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी आवाज उठाने की है। प्रतिरोधी पत्रकार कोविड–19 के दौरान विस्तृत ऑनलाइन स्पेस में सीमाओं के पार काम करते हैं, वे रूस में जीवन से संबंधित ज्वलंत विषयों पर ऑनलाइन सार्वजनिक चर्चाएं आयोजित करते हैं। सैन्य अभियान का विरोध करने वालों के लिए टेलीग्राम और फेसबुक चौनलों ने एक सार्वजनिक क्षेत्र विकसित किया है। हालॉकि, इन गतिविधियों के सीमित दर्शक हैं और ये एक सूचना बुलबुला बनाती हैं।

इस वैकल्पिक सार्वजनिक क्षेत्र में, सामाजिक वैज्ञानिक सार्वजनिक बुद्धिजीवियों के रूप में विदेशी मामलों पर चर्चा करते हैं, साथ ही वे नव–अधिनायकवाद, तानाशाही निरंकुशता, उपनिवेशवाद और साम्राज्य की अधिक अमूर्त अवधारणाओं पर भी ध्यान देते हैं। वे रूसी शासन के लिए एक उचित संकेतक खोजने का प्रयास कर रहे हैं। जो हो रहा है उसके प्रति कई लोग अपनी जिम्मेदारी महसूस करते हैं। वे खुद से पूछते हैं: हमने क्या छोड़ दिया? हम युद्ध को कैसे रोक सकते थे? हम अपने पूर्वानुमानों में विफल क्यों हुए?

> निष्कर्ष

सार्वजनिक क्षेत्र के दमन का अर्थ है कि जन समाजशास्त्र दर्दनाक श्वासावरोध से ग्रस्त है: एक गंभीर रोग स्थिति जिसमें एक जीवित व्यक्ति न तो सांस ले सकता है और न ही ऑक्सीजन की कमी के कारण चल सकता है। यह स्थिति प्राणघातक है। रूसी सत्तावादी शासन के संदर्भ में, सार्वजनिक भय और वास्तविक दमन के कारण जन समाजशास्त्र की संभावनाएं बहुत सीमित हो गई हैं। पारंपरिक जन समाजशास्त्र मजबूत सेंसरशिप के तहत कष्ट पाता है और अभिमत सर्वेक्षण के परिणामों को राजनीतिक उपकरणों के रूप में काम लिया जाता है। लेकिन जन समाजशास्त्र सीमाओं के पार और सोशल मीडिया के वैकल्पिक सार्वजनिक क्षेत्र में लगातार अस्तित्व में रहता है।

हम जिस डिस्टोपियन दु:स्वप्न में जी रहे हैं, वह हमें यह समझने में मदद करता है कि हम जिस समाजशास्त्रीय परंपरा से संबंधित हैं, वह नैतिक प्रतिबद्धता, लोकतांत्रिक मूल्यों: स्वतंत्रता, कारण, समानता, एकजुटता, जिन्हें हम दूसरों के साथ दृढ़ता से साझा करते हैं, पर बनी है। वर्तमान स्थिति में, हमें पेशेवर ज्ञान, जो भविष्य में जनता के लिए उपलब्ध होगा, का संचय करना होगा। वर्तमान परिस्थितियाँ रूसी समाजशास्त्रियों को उनकी महत्वाकांक्षाओं और उनके कार्य की आधारशिला के बारे में प्रश्न उठाने और और अपने पेशे और नैतिक प्रतिबद्धता के बीच मजबूत लिंक पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करती हैं – एक ऐसा प्रतिवर्तन, जिसे पहले तटस्थता के तत्वाधान में टाला जा सकता था। ■

सभी पत्राचार स्वेतलाना यारोशेंको को <svetayaroshenko@gmail.com> एवं ऐलेना जड्रावोमिस्लोवा को <zdrav3@yandex.ru> पर प्रेषित करें।

> जन समाजशास्त्र को
संवादात्मक समाजशास्त्र की ओर धकेलना

साड़ी हनाफी, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ बेरूत, लेबनान और आईएसए अध्यक्ष (2018–23) द्वारा

माइकल बुरावॉय केवल एक ऐसे सामाजिक सिद्धांतकार नहीं हैं, जो श्रम समाजशास्त्र और राजनीतिक अर्थव्यवस्था की कई सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि से समाजशास्त्र को पोषित करते हैं, वे वास्तव में दुनिया भर में समाजशास्त्र की कार्यप्रणाली को पुनः आकारित करते हैं। जब मैंने पब्लिक सोशियोलॉजीः बिटवीन यूटोपिया और एंटी–यूटोपिया पढ़ना प्रारम्भ किया, मैं इसे तब तक नीचे नहीं रख सका जब तक कि मैंने इसका आखिरी पृष्ठ नहीं पढ़ लिया। एक उपन्यास के रूप में पाठ्य, यह पुस्तक जन समाजशास्त्र के पक्ष में बुरावॉय के तर्कों को अग्रेषित करते हुए, पिछली आधी सदी के उनके प्रक्षेप वक्र को विश्लेषण की एक इकाई में बदल देती है। एरिक ओलिन राइट की परियोजना को अपने जन समाजशास्त्र के समरूप लाकर, बुरावॉय इस समाजशास्त्र को नैतिक या मानक विज्ञान के रूप में देखते हैं जो उन कुछ मूल्यों के लिए खड़ा है जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है (यूटोपियन पक्ष) और जिनकी प्राप्ति कैसे बाधित हो सकती है (यूटोपियन विरोधी पक्ष)।

बुरावॉय जन समाजशास्त्र को जैविक और एक वास्तविक यूटोपिया का उत्पादक बनाकर सिद्धांतित करते हैं जो नागरिक समाजशास्त्र के लिए प्रतिबद्ध है। मैं उनके साथ इससे अधिक सहमत नहीं हो सकता, लेकिन यहां, इस संक्षिप्त लेख में, मैं न केवल उत्पीड़कों की अत्याधुनिक आलोचना पर जोर देना चाहता हूं बल्कि उनके साथ बातचीत की संभावना पर भी विचार करना चाहता हूं। मैं जिसे ''संवाद समाजशास्त्र'' कहता हूं, उसके लिए मेरा औचित्य अकादमिक हस्तक्षेप के मेरे क्षेत्र और स्थान से आता है। समाजशास्त्र में मेरे उपक्षेत्र (ज्ञान, संस्कृति, धर्म और राजनीति) बुरावॉय के श्रम और (विवेचनात्मक) मार्क्सवादी क्षेत्रों से काफी अलग हैं। वे नवउदारवादी पूंजीवादियों और बाजारीकरण की तृतीय लहर में कर्ताओं का विरोध करते हैं। मैं, मध्य–पूर्व, एक ऐसा क्षेत्र जो लंबे समय से क्रूर सत्तावादी और औपनिवेशिक शासन से पीड़ित है, जहाँ यातना, राजनैतिक अपहरण, हत्याएं और बेदखली काफी आम बात है, में बढ़ा हुआ और अभी भी वहीं रहता हूँ। एक ऐसी परिस्थिति जहाँ सत्तावादी शासनों ने सांस्कृतिक आधिपत्य निर्मित किया हो और स्थिरता लाने में सत्तावाद की विशेषता में विश्वास करने के लिए एक बहुत बड़े वर्ग को वैचारिक रूप से दिग्भ्रमित किया हो, तो इस स्थिति से कोई कैसे निपट सकता है? जब कुछ इजराइली, होलोकॉस्ट से बचे लोगों के भाई–बहिन, फिलिस्तीन की भूमि को जब्त करने वाले औपनिवेशिक आबादकार बन जाते हैं, तब अरब–इजराइल संघर्ष से कोई कैसे निपटेगा? क्या हमें संक्रमण ाकालीन न्याय के व्यापक बहुलवादी तंत्र के बिना ऐतिहासिक, पुनर्स्थापनात्मक न्याय मिल सकता है? अधीनस्थ लोगों और उनकी पीड़ा के प्रति अपनी संवेदनशीलता के कारण, माइकल बुरावॉय ने अक्सर इस बात पर जोर दिया है कि समाजशास्त्र का कार्य राज्य और बाजार दोनों के वर्चस्व के खिलाफ नागरिक समाज के साथ खड़ा होना है। यह बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं इस कार्य में दो और जोडूंगा।

पहला समाजशास्त्रीय मिशन को जेफरी अलेक्जेंडर द्वारा दिए गए अर्थ में नागरिक समाज से परे, नागरिक क्षेत्र तक विस्तारित करना है। अलेक्जेंडर हमें याद दिलाते हैं कि एक व्यापक सामाजिक व्यवस्था के भीतर नागरिक समाज, अन्य के मध्य, केवल एक क्षेत्र है, जिसमें परिवार, धार्मिक समूह, वैज्ञानिक और कॉर्पोरेट संघ और भौगोलिक रूप से बंधे क्षेत्रीय समुदायों को शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि वे सभी माल का उत्पादन करते हैं और विभिन्न आदर्शों और बाधाओं के अनुसार अपने सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित करते हैं। हमारे मिशन का यह विस्तार बहुत महत्वपूर्ण है अगर हमें स्वयं को इस नागरिक क्षेत्र और उदार लोकतांत्रिक आदर्शों के संरक्षक के रूप में देखना है।

दूसरा कार्य विभिन्न गैर–नागरिक क्षेत्रों के साथ मध्यस्थता करना हैः उनके साथ संवाद में संलग्न होना। हमें उन लोगों की बात ध्यान से सुनने की जरूरत है जो आंशिक रूप से या पूरी तरह से उन आदर्शों को अपनाने से इनकार करते हैं जिन्हें हम आगे बढ़ाने का लक्ष्य रखते हैं। यह प्रशंसनीय बात है कि बुरावॉय इसका महत्व महसूस करते हैं जब वे अर्ली रसेल होच्स्चिल्ड की पुस्तक *स्ट्रेंजेर्स इन देयर ओन लैंडः एंगर एंड मोर्निंग ऑन द अमेरिकन राइट* और कैसे वे लुइसियाना में चाय पार्टी के समर्थकों के साथ ''समानुभूति दीवार'' पर कूदती हैं, की प्रशंसा करते हैं। वे वैश्वीकरण और सामाजिक असमानताओं के अपने दृष्टिकोण के प्रति असंतोष व्यक्त करते हुए ट्रम्प समर्थकों में परिवर्तित हो गए। हमें उनका आकलन करने से पहले, उदाहरण के लिए, सीरियाई और अफ्रीकी प्रवासियों के यूरोप आने से जो डरते हैं, की बात सुननी चाहिए। हमारे मानकीय तरीकों, पूर्व धारणाओं और स्पष्ट प्रतिबद्धता के साथ, मैं यहाँ गैर–नागरिक क्षेत्रों के साथ संवाद करने और मध्यस्थता करने की क्षमता पर जोर देना चाहता हूँ। एक कट्टरपंथी आलोचनात्मक सामाजिक सिद्धांत के खिलाफ, मैं एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सिद्धांत का आह्वान करता हूं। एक ऐसा सिद्धांत जो सत्ता की आलोचना करते हुए, उसी समय पर उन ताकतों के साथ संवाद खोलने में सक्षम है जिनकी वह आलोचना करता है। यह समाजशास्त्र के लिए एक तरीका है, जब वह रॉल्स के राजनैतिक उदारवाद (इसका उन्नत और संशोधित संस्करण) को समायोजित करने के लिए व्यापकध शास्त्रीय उदार प्रोजेक्ट का अनुमोदन करता हैय अर्थात समाज के अंतर्गत सामाजिक एकजुटता (न्याय की एक एकीकृत अवधारणा) में सभी प्रकार की विविधता को जोड़ने वाले बहुलवाद (अच्छे की बहुलवादी अवधारणाएं) पर कार्य करना।

>>

''सार्वजनिक समाजशास्त्र केवल तर्कसंगत दावों या सार्वजनिक क्षेत्र में बहस किए गए प्रामाणिक तर्कों के बारे में नहीं है, यह भावनाओं और दूसरे की नैतिक ऊर्जा को समझने के बारे में भी है''

अधिक व्यापक रूप से, मेरे लिए – और मुझे यकीन है कि बुरावॉय इस पर मेरे साथ शामिल होंगे – जन समाजशास्त्र का मुद्दा केवल तर्कसंगत दावों के बारे में नहीं है, या फिर सार्वजनिक क्षेत्र में बहस किए जाने वाले मानक तर्कों के बारे में है, यह भावनाओं के बारे में भी है: दूसरे की भावनाओं, नैतिक संवेदनशीलता, दूसरे के नैतिक उत्साह को कैसे समझें, जो उन्हें कभी–कभी सामाजिक पीड़ा के प्रति अंधा बना देता है। यह संवादात्मक समाजशास्त्र न केवल इस बात के प्रति संवेदनशील है कि लोग नैतिक रूप से अपने कार्यों को कैसे सही ठहराते हैं, बल्कि यह भी कि समाजशास्त्री इस पीड़ा को कैसे गंभीरता से ले सकते हैं और इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं, सिल्विया कैटाल्डी के शब्दों में, उपस्थिति के व्याख्याशास्त्र के रूप में।

जहाँ तक नैतिकता की बात है, अरब क्षेत्र में, जहाँ हमारी अत्यधिक धार्मिकता है, धर्म नैतिकता के स्रोतों में से एक है। यह कमरे में विशाल हाथी है जिसे जानबूझकर या अनजाने में समाजशास्त्र साहित्य में अनदेखा किया जाता है, सिवाय तब जब वह राजनीतिक हिंसा से संबंधित हो। यह केवल अरब दुनिया, मध्य पूर्व, इजराइल में ही मामला नहीं हैय लैटिन अमेरिका (उदाहरण के लिए, ब्राजील में नया पेंटेकोस्टलवाद) और उसके बाहर भी धर्म अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। इसलिए, मुझे लगता है कि समाजशास्त्रियों के रूप में हमें विनम्र होने की जरूरत है और इस बारे में सोचने की जरूरत है कि कैसे स्वीकार किया जाए कि हमारे समाज में विभिन्न कुलीन वर्ग हैं, जिनमें धार्मिक लोग शामिल हैं जिन्हें लिपिकवादी सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा पिछड़ा और प्रतिक्रियावादी करार कर इतने लंबे समय से उपेक्षित या तिरस्कृत किया गया है।

अंत में, बुरावॉय की आत्मकथा गहरी विश्लेषणात्मक पुस्तक में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आज समाजशास्त्र के कार्यों में से एक यूटोपियन दृष्टि को आगे बढ़ाना है; ऐसे समय में जब समाजवाद के विचार को बदनाम किया गया है, यह आसान काम नहीं है। बुरावॉय के लिए, लोग ''अमीर बनने के लिए नहीं बल्कि एक बेहतर दुनिया [...] अधिक समान, अधिक स्वतंत्र, अधिक सहयोगी'' बनाने के लिए समाजशास्त्री बनते हैं, (पृष्ठ 2)। बुरावॉय ने न केवल अपने विचार से, बल्कि अपने अभ्यास से भी दुनिया को बेहतर बनाया है: अपने छात्रों और व्यापक वैज्ञानिक समुदाय की देखभाल करते समय इतना उदार होना। मैं उनका बहुत ऋणी हूं क्योंकि उन्होंने मेरा हाथ तब थामे रखा जब मेरा समाजशास्त्र पेशेवर और नीतिगत समाजशास्त्र से सार्वजनिक समाजशास्त्र में स्थानांतरित नहीं हुआ, बल्कि एक ऐसे समाजशास्त्र से जो स्थानीय और क्षेत्रीय समस्याओं द्वारा मानचित्रित से वैश्विक मुद्दों को गले लगाने वाले में परिवर्तित हुआ। इसके अलावा, उन्होंने मुझे आईएसए कार्यकारी समिति में, राष्ट्रीय संघों के उपाध्यक्ष के रूप में और इस संघ के अध्यक्ष के रूप में चुनाव के लिए खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया। ■

सभी पत्राचार साड़ी हनाफी को <sh41@aub.edu.lb> पर प्रेषित करें।

> माइकल बुरावॉय और जन समाजशास्त्र पर चिंतन

मार्गरेट अब्राहम, हॉफस्ट्रा विश्वविद्यालय, यूएसए द्वारा

न्यू यॉर्क में ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट के विरोध में। मार्गरेट अब्राहम द्वारा फोटो, 2011

दुनिया भर में, समाजशास्त्री, सामाजिक वैज्ञानिक, शोधकर्ता–कार्यकर्ता, नारीवादी, और रंग के लोगों का अनुसंधान और सक्रियता को जोड़ने और जनता के साथ जुड़ने का एक लंबा इतिहास रहा है। इसमें असमानता, रंगभेद, शोषण, उत्पीड़न, अलगाव, युद्ध, नस्लवाद, उपनिवेशवाद, पूंजीवाद, लोकतंत्र, लिंग आधारित हिंसा और सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन के लिए आंदोलनों के मुद्दों को संबोधित करना शामिल है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, समाजशास्त्रीय सिद्धांत में जनता के साथ समाजशास्त्रीय जुड़ाव का इतिहास अक्सर मिटा दिया गया है या हाशिये पर चला गया है। जबकि शास्त्रीय सिद्धांतकार मार्क्स, वेबर, और दुर्खीम सही मायने में पश्चिमी पंथ का हिस्सा थे, अग्रणी समाजशास्त्री, सामाजिक शोधकर्ता और कार्यकर्ता –विशेष रूप से डबल्यू.इ.बी.डु बोइस, हैरियट मार्टिन्यू, जेन एडम्स, अन्ना जूलिया कूपर, इडा बी, वेल्स–बार्नेट, और मैरिएन वेबर –कुछ समय पहले तक– अपेक्षाकृत अदृश्य रहे। ऐतिहासिक रूप से, शक्ति और विशेषाधिकार के स्तंभ, ज्ञान उत्पादन, वितरण और उपभोग की प्रणालियों ने समाजशास्त्र के प्रभावी रूप से पश्चिमी, श्वेत और पुरुष प्रधान पेशेवर डोमेन के अनुकूल केंद्रीय सैद्धांतिक और पद्धति संबंधी को बनाने और समेकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका परिणाम सैद्धांतिक ज्ञान का बहिष्करण/न्यूनीकरण और जनता से जुड़े महत्वपूर्ण समाजशास्त्रियों के पद्धतिगत योगदान, समाजशास्त्र के अनुसार कार्य करना और सिद्धांत के बाहर काम करना रहा है।

सन् 2004 में, माइकल बुरावॉय ने अमेरिकी समाजशास्त्रीय संघ (एएसए) के अपने अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से अमेरिका में *जन समाजशास्त्र* शब्द को (पुनः) लोकप्रिय बनाया। समाजशास्त्रीय ज्ञान के प्रकारों (सार्वजनिक, पेशेवर, नीति और आलोचनात्मक) का वर्णन करते हुए और जन समाजशास्त्र को ऐसे समाजशास्त्र को करने के एक प्रोत्साहन के रूप में परिभाषित करते हुए जो लोगों को मानव बनाने वाले सभी सामाजिक संबंधों को बढ़ावा देता है और उनकी रक्षा करता है, उन्होंने विषय के उद्देश्यों पर चर्चा और बहस को बढ़ावा दिया। एक नारीवादी सक्रिय शोधकर्ता, हाशिये पर एक समाजशास्त्री, जो घरेलू हिंसा को एक निजी समस्या से एक सार्वजनिक मुद्दे पर स्थानांतरित करने में 1990 के दशक से सक्रिय रूप से लगी हुई थी, के रूप में, मेरे लिए 2004 की वार्षिक बैठक एएसए द्वारा आयोजित सबसे अधिक समाजशास्त्रीय रूप से संलग्न और सार्वजनिक रूप से समावेशी संगोष्ठी में से एक थी। यद्यपि बुरवॉय जनता के साथ समाजशास्त्रीय जुड़ाव के लिए अमेरिकी समाजशास्त्रियों के गहन योगदान के साथ–साथ सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सोशल प्रॉब्लम्स एंड सोशियोलॉजिस्ट फॉर वुमन इन सोसाइटी के योगदान के बारे में काफी जागरूक थे, उनकी प्रस्तुति और जन समाजशास्त्र का आह्वान प्रतिध्वनित हुआ! इसने पेशेवर मायोपिया को चुनौती दी और समाजशास्त्र के ज्ञानः किसके लिए और किसके लिए पर सवाल उठाया?

> >

बुरावॉय के लिए समाजशास्त्र सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक है। इसके मूल में, यह एक गहन मानवतावादी समाजशास्त्र है जो एक बेहतर दुनिया के लिए सार्थक योगदान देना चाहता है जहां सामाजिक रूप से उत्पन्न कम पीड़ा होगी। प्रत्युत्तर में यह एक ऐसे समाजशास्त्र पर जोर देता है जो सामाजिक अपवर्जन की वास्तविक दुनिया की समस्याओं, धन और अवसर की विशाल असमानताओं, वस्तुकरण और एक बाजार–केंद्रित दुनिया से जूझता है। समाजशास्त्र का प्रमुख मिशन समाज को बाजारी कट्टरवाद से तबाह होने से बचाने की लड़ाई में सक्रिय रूप से शामिल होना है। बुरावॉय एक ऐसा जन समाजशास्त्र प्रतिमान चाहते हैं जो नागरिक संगठनों और सामाजिक आंदोलनों के साथ गठजोड़ बनाये और उनका समर्थन हासिल करे। यह सब वह छात्रों को महत्वपूर्ण जनता के रूप में मान कर करे। समाजशास्त्र को केवल सक्रिय, व्यावहारिक आवेगों तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है, बल्कि इसे मानवीय, सामाजिक दुनिया को बेहतर ढंग से समझने के लिए मूल्यों से समान रूप से संबंधित होना चाहिए। अपने विश्लेषण में समाजशास्त्र को न केवल साधनों के तंत्रीय ज्ञान को बल्कि साध्य के बारे में ''चिंतनशील ज्ञान'' को भी सबसे आगे रखना चाहिए। जन समाजशास्त्र को मूल्यों और लक्ष्यों के साथ–साथ उनकी प्राप्ति की संभावना के बारे में सार्वजनिक संवाद में योगदान देना चाहिए। यह ''जैविक अन्योन्याश्रय'' पर जोर देता है जिसमें प्रत्येक प्रकार के ज्ञान –सार्वजनिक, पेशेवर, नीति और आलोचनात्मक– का उत्कर्ष सभी के उत्कर्ष पर निर्भर करता है।

2004 और 2014 के बीच लिखे गए बुरावॉय के निबंध जन समाजशास्त्र से वैश्विक समाजशास्त्र तक एक आंदोलन के रूप में उनके काम के विकास को प्रस्तुत करते हैं। साथ में, ये वह प्रक्षेपवक्र प्रदान करते हैं जो अमेरिका में पेशेवर समाजशास्त्र के नाम और आधिपत्य को चुनौती देने से प्रारम्भ होता है और एक असमान दुनिया द्वारा उत्पन्न वैश्विक चुनौतियों की अधिक महत्वपूर्ण समझ और जुड़ाव की ओर बढ़ जाता है। ज्ञान की स्थानीय और राष्ट्रीय प्रणालियों में मजबूत आधार के साथ एक वैश्विक समाजशास्त्र की वकालत करते हुए, बुरवॉय ज्ञान उत्पादन पर ग्लोबल नॉर्थ के आधिपत्य के प्रति सचेत हैं। वे समाज विज्ञान के एकीकरण के सकारात्मक सपने के खिलाफ चेतावनी देते हैं क्योंकि वह अनिवार्य रूप से शक्तिशाली द्वारा नियंत्रित किया जाएगा और इस प्रकार पश्चिम द्वारा ''एक नए साम्राज्यवाद के हितों को आगे बढ़ाने'' का जोखिम हो सकता है। इसके बजाय, वे एक वैकल्पिक परियोजना की व्याख्या करते हैं जो राष्ट्रीय समाजशास्त्रों को क्षेत्रीय संघों में एक साथ जोड़ने की परिकल्पना करती है जो फिर संवाद और वैश्विक समाजशास्त्रों के अंतिम संश्लेषण की ओर ले जाती है। अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ का उनका प्रोजेक्ट, *ग्लोबल डायलॉग,* समकालीन मुद्दों के एक स्पेक्ट्रम पर दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संवाद और बहस के लिए एक अवसर था।

2004 के उनके एएसए के अध्यक्षीय भाषण के लगभग दो दशक और 2014 के आईएसए के अध्यक्षीय भाषण के एक दशक के बाद बुरावॉय की हालिया पुस्तक *पब्लिक सोशियोलॉजीः बिटवीन यूटोपिया एंड एंटी–यूटोपिया* को पढ़ने पर, जो बात दिमाग में आती है वह यह है कि वे समाजशास्त्र की दिक्कतें और वादे के बारे में लगातार दृढ़, जुनूनी और प्रेरक कैसे बने रहते हैं। सीडब्ल्यू मिल्स का यह विचार कि समाजशास्त्र जीवनी और इतिहास के पस्परछेदन पर स्थित है सामने आता हैय लेकिन साथ ही, अनजाने में, नारीवादी वाक्यांश ''व्यक्तिगत राजनीतिक है'' का महत्व भी सामने आता है। मार्क्सवाद की आलोचना के साथ समाजशास्त्र और सामाजिक रूपांतरण को जोड़ने में डबल्यू.इ.बी. डु बोइस के महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय योगदान को आलोकित करने में प्रतिबद्धता अधिक स्पष्ट है। बुरावॉय अपने स्वयं के अनुभवों को सार्वजनिक, पेशेवर, नीति और विवेचनात्मक समाजशास्त्र के अपने विश्लेषण के साथ सावधानीपूर्वक जोड़ते हैं और उनका प्रतिच्छेदन करते हैं। जीवनी को इतिहास के साथ जोड़ते हुए, दुनिया भर में उनके समाजशास्त्रीय प्रवास दर्शाते हैं कि जिये गए अनुभव समाजशास्त्रीय कल्पना का एक अभिन्न अंग हैं। यह संस्मरण एक समाजशास्त्री, छात्र, शोधकर्ता, शिक्षक, प्रशासक, मित्र, सहयोगी, सक्रिय कार्यकर्ता, और पेशेवर संघ के नेता, जो अपने समय की विषयगत और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए समाजशास्त्र को प्रतिबिंबित करने और (पुनः) स्थापित करने के लिए लगातार प्रतिबद्ध है, के रूप में उनकी स्पष्ट, सूक्ष्म और व्यक्तिगत यात्रा का अनुगमन करता है। यहीं पर वे समाजशास्त्र के जोखिमों और प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाते हैं, उसकी व्याख्या करते हैं।

आज, जब हम एक वैश्विक महामारी के प्रभाव का सामना कर रहे हैं, सत्तावाद का उदय, धार्मिक कट्टरवाद का विकास, और छद्म खबरों का विस्फोट, सोशल मीडिया, और अक्सर सामान्य हित के खिलाफ संरेखित चालाक जनता के द्वारा वृहद गलत सूचना का उपभोग हमें एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करता है कि समाजशास्त्र के वादे को पूरा करने के लिए क्या करना होगा। शायद समाजशास्त्रियों और कार्यकर्ताओं की एक नई पीढ़ी में उम्मीद निहित है, जो इतिहास को परख रही है, कठोर सिद्धांत के माध्यम से समाजशास्त्र के विज्ञान को आगे बढ़ा रही है, जिनमें दीर्घस्थायी और उभरती असमानताओं को दूर करने के लिए शिक्षण और अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्धता है। हम जानते हैं कि समस्या का निर्माण और व्याख्या काफी नहीं है। हमें असमानताओं को दूर करने के तरीकों पर सवाल उठाने, कल्पना करने, प्रस्तावित करने, आगे बढ़ाने और प्रबंधन करने की आवश्यकता है। हमें एक बेहतर, न्यायपूर्ण और समान विश्व के निर्माण के लिए समाजशास्त्र के वादे पर दृढ़ता से टिके रहने की जरूरत है। ■

सभी पत्राचार मार्गरेट अब्राहम को <Margaret.Abraham@Hofstra.edu> पर प्रेषित करें।

> प्रतिच्छेदन के बारे में स्थानीय और विश्व स्तर पर चिंतन

कैथी डेविस, फ्री यूनिवर्सिटी एम्स्टर्डम, नीदरलैंड्स और **हेल्मा लुट्ज,** गोएथे यूनिवर्सिटी फ्रैंकफर्ट, जर्मनी द्वारा

2020 वाशिंगटन डीसी, यूएसए में महिला मार्च।
क्रेडिट : राइजिंगथर्मल्स / फ्लिकर

प्रतिच्छेदन शब्द सामाजिक संरचनाओं और पहचानों के मध्य परस्परच्छेदन और उलझाव को संबोधित करता है। 1989 में किम्बरले क्रेनशॉ द्वारा गढ़ा गया, यह एक चौराहे के रूपक का उपयोग करता हैः एक अत्यधिक व्यस्तता वाली जगह जहां विभिन्न लिंग, कामुकता, सामाजिक वर्ग या नस्लीय पहचान के व्यक्तियों पर लगातार अधिवहित होने का खतरा बना रहता है। सामाजिक स्थिति और भेदभाव के विभिन्न रूपों के प्रतिच्छेदन को चित्रित करने की क्षमता के कारण इस रूपक को सामाजिक असमानताओं के विश्लेषण और बहस में सफलतापूर्वक काम में लिया गया है। शक्ति संबंधों में अंतर की श्रेणियों (लिंग और वर्ग और ''जाति'') के लिए ''ऐड–ऑन'' दृष्टिकोण को प्रतिस्थापित करके, प्रतिच्छेदन ने एक नया एजेंडा स्थापित कियाः यह संरचनात्मक परिणामों और शक्ति तथा अधीनता के तीन या अधिक अक्षों के मध्य अन्तर्क्रिया की प्रक्रियात्मक गतिशीलता दोनों को पकड़ लेता है।

2001 में डरबन में नस्लवाद के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन के दौरान दमन की प्रणालियों के मध्य प्रतिच्छेदन पर क्रेंशॉ के विचार को वैश्विक प्रतिध्वनि मिली। आज, प्रतिच्छेदन की अवधारणा उन क्षेत्रों, जहाँ ये प्रारम्भ हुई थीः लिंग अध्ययन, महत्वपूर्ण नस्ल अध्ययन और कानून, से कहीं आगे निकल गई है। अब इसका उपयोग समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य, स्वास्थ्य अध्ययन, शिक्षा, सामाजिक भूगोल, नृविज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, साहित्य अध्ययन और यहां तक कि वास्तुकला में भी किया जाता है। लिंग अध्ययन के अंतर्गत, स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम की पेशकश के लिए प्रतिच्छेदन एक मुख्य शब्द बन गया। इससे सम्बंधित सम्मेलन, अकादमिक पत्रिकाओं के विशेष अंक, और प्रतिच्छेदन समर्पित पुस्तक प्रकाशन बहुत बढ़ गए हैं। अब ''प्रतिच्छेदन अध्ययन'' (इंटरसेक्शनलिटी स्टडीज) के क्षेत्र के बारे में बात की जा सकती है।

जब इसने अमेरिका से यूरोप की यात्रा की, दुनिया के कई हिस्सों में प्रतिच्छेदन की धारणा को अपनाया गया। इन यात्राओं के दौरान, अवधारणा बदल गई और यह स्थानीय परिस्थितियों और ऐतिहासिक संदर्भों के के अनुसार अनुकूलित हो गई। उदाहरण के लिए, यूरोप में प्रवासी आबादी के भीतर भेदभाव का विश्लेषण करने के लिए जातीयता और धर्म प्रासंगिक श्रेणियां बन गएय जबकि भारत में, ''जाति'' को एक ऐसी श्रेणी के रूप में शामिल किया गया जो सामाजिक असमानताओं को समझने के लिए आवश्यक है। हाल ही में, प्रतिच्छेदन की अवधारणा निर्माण कैसे हो या होना चाहिए में पीढ़ीगत अंतर स्पष्ट रूप से उभरा है। ब्लैक लाइव्स मैटर जैसे हालिया आंदोलनों ने प्रजाति पर बहस और नस्लवाद के खिलाफ संघर्ष को प्रभावित किया है, जिससे प्रतिच्छेदन के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा मिला है।

इन घटनाक्रमों को समझने के लिए हमें वर्तमान के नजरिए से प्रतिच्छेदन के इतिहास को देखने की जरूरत है। वह क्या है जो आलोचनात्मक विद्वानों और कार्यकर्ताओं को बार–बार प्रतिच्छेदन पर वापस लाता है? अंतर्विभागीयता की अवधारणा के बारे में ऐसा क्या है जो इसे लगातार खुद को पुनः आविष्कार करने में सक्षम बनाता है? और अंत मेंः विभिन्न उद्देश्यों और विभिन्न इलाकों के लिए प्रतिच्छेदन को कैसे विस्तृत, पुनरीकृत और तैनात किया जाता है?

> >

ये प्रश्न *रूटलेज हैंडबुक ऑफ इंटेसेक्शनलिटी स्टडीज* के लिए केंद्रीय हैं, जिसे हम अभी संपादित कर रहे हैं और 2023 में इसका प्रकाशन किया जाएगा। *हैंडबुक* अंतरराष्ट्रीय और अंतःविषय योगदानकर्ताओं द्वारा प्रतिच्छेदन अध्ययन के क्षेत्र में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करती है। वैश्विक संवाद के इस अंक के लिए हमने कई लेखकों से अपने अध्यायों का संक्षिप्त संस्करण उपलब्ध कराने को कहा है। इसका परिणाम सामाजिक, सांस्कृतिक और भू–राजनैतिक असमानताओं को समझने के लिए प्रतिच्छेदन को किस प्रकार प्रयोग में लिया गया है, के कुछ तरीकों का पूर्वावलोकन है। एन फीनिक्स इस संवाद का प्रारम्भ गुलामी और उपनिवेशवाद का इतिहास द्वारा वर्तमान को प्रताड़ित करने के तरीकों पर विचार करके करती हैं। वे यह दर्शाती है कि क्यों उन्हें, हम वैश्विक स्तर पर जिस तरह प्रतिच्छेदन के बारे में सोचते हैं, का भाग होना चाहिए। बारबरा जियोवाना बेलो वर्तमान के दो सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलनों– ब्लैक लाइव्स मैटर और #मी टू–,जो संयुक्त राज्य में शुरू हुए थे, को प्रतिच्छेदन के नजरिये से देखती हैं। लेकिन तब से वे अब वैश्विक हो गए हैं। एथेल तुङ्गोहन दिखाते हैं कि कनाडा में हाल के प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलनों को समझने के लिए प्रतिच्छेदन कितना आवश्यक है, जहाँ उत्पीड़न को कम करने के लिए विभिन्न आन्दोलनों को स्पष्ट रूप से एकजुट होना आवश्यक था। अमुंड रेक हॉफर्ट एक विशुद्ध प्रतिच्छेदित रूपक, जो इस अवधारणा की सभी समस्यों को समाप्त कर देगा, की खोज पर एक आलोचनात्मक दृष्टि डालते हुए प्रतिच्छेदित असमानताओं और शक्ति विन्यासों पर शोध में ''गड़बड़ी की आवश्यकता'' के लिए बहस करते हैं। अंत में, प्रतिच्छेदन अनुसंधान हेतु एक पद्धति के लिए अंतरराष्ट्रीय आवशयकता देखते हुए, हम (कैथी डेविस और हेल्मा लुत्ज) यह बताने का प्रयास करते हैं कि कैसे ''दूसरे प्रश्न पूछने'' की भ्रामक सरल प्रक्रिया हमें उन रणनीतियों का विश्लेषण करने में मदद कर सकती है जो लोग अपनी दिन–प्रतिदिन की जिन्दगी में शक्ति का विरोध करने या समायोजित करने के लिए उपयोग करते हैं।

समग्र रूप से, यह संवाद कुछ ऐसे तरीकों को दिखाता है, जिनमें स्थानीय और विश्व स्तरों पर प्रतिच्छेदन ने विद्वानों और कार्यकर्ताओं को असमानता, शक्ति और सामाजिक परिवर्तन के बारे में समान रूप से सोच सकने में प्रभावित किया है। ■

सभी पत्राचार निम्न को प्रेषित करें:
हेल्मा लुत्ज को <lutz@soz.uni-frankfurt.de> एंव
कैथी डेविस को <k.e.davis@vu.nl> पर प्रेषित करें।

> प्रतिच्छेदित भविष्य
को प्रतिच्छेदित अतीत सताता है

एन फीनिक्स, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन, यूके

वाशिंगटन डी सी में जॉर्ज फ्लॉयड के फोटो वाला पोस्टर पकड़े हुए एक प्रदर्शनकारी। श्रेय: Obi - @pixel6propix/अनस्पलेश, क्रियेटिव कॉमंस

अब इस विचार पर कम ही लोग विवाद करते हैं कि सामाजिक संबंधों, रोजमर्रा की सामाजिक प्रथाओं और समाज कैसे कार्य करता है को समझने के लिए प्रतिच्छेदन की समझ केंद्रीय है। लिंग, कामुकता, सामाजिक वर्ग और नस्लीकरण जैसी कई सामाजिक श्रेणियों में सभी को एक साथ रखने के तरीकों के प्रति इसकी चिंता असमानताओं, शक्ति संबंधों और सामाजिक स्थिति की जटिलताओं का विश्लेषण करने के लिए एक अनुमान प्रदान करती है। यह दिखाता है कि कैसे किसी भी सामाजिक श्रेणी को अन्य सामाजिक श्रेणियों के साथ उसके अंतर्विभाज्य रुप और उनकी गतिशीलता, संबंधपरकता तथा ऐतिहासिक स्थान से केंद्र से हटाया जाता है।

दासता और उपनिवेशवाद ने मौजूदा वैश्विक इतिहास को कैसे गढ़ा है। इसकी ऐतिहासिक समझ के साथ समाजशास्त्री भी अब तेजी से जुड़ रहे हैं। बनाता फिर भी, यह सैद्धांतिकरण करते हुए कि प्रतिच्छेदन इतिहासिक रूप से स्थित है, यह हमें सामाजिक विभाजन, समावेशन,और बहिष्करण को रेखांकित करने वाले संभावित विरोधाभासी प्रक्रियाएं को समझने में सक्षम बनाती हैं। इतिहास किस

> >

श्रेयः थॉमस विलमॉट/अनस्प्लाश, क्रिएटिव कॉमन्स।

प्रतिच्छेदित हांटिंग न केवल अतीत पर बल्कि भविष्य की कार्रवाई पर भी नए दृष्टिकोणों को प्रेरित कर सकती है। श्रेयः हकसे/आई स्टॉक

प्रकार से प्रतिच्छेदन का हिस्सा है के तरीकों के बारे में बहुत कम पता है। यह आलेख तर्क देता है कि वे तरीके जिन से इतिहास वर्तमान को सताता है प्रतिच्छेदन के सिद्धांतों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

> ऐतिहासिक स्मृतियाँ

ऐतिहासिक स्मृतियाँ किस तरह से समकालीन सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती हैं और अप्रत्याशित तरीके से मनोसामाजिक रूप से प्रकट होती हैं यह 2020 में यूएसए के एक पुलिसकर्मी द्वारा जॉर्ज फ्लॉयड की हत्या की वीडियो रिकॉर्डिंग के बाद नस्लवाद और दमनकारी नस्लीय इतिहास के खिलाफ होने वाले वैश्विक प्रतिरोध से स्पष्ट हो गया। इसने ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन को पुनर्जीवित किया और व्यापक समर्थन पाया। यह तथ्य कि उपनिवेशवाद और गुलामी का इतिहास कई समाजों को सताता है, का प्रदर्शन जॉर्ज फ्लॉयड की हत्या (श्वेत पुलिस द्वारा कई अश्वेतों की हत्याओं में से एक) की प्रतिक्रियाओं द्वारा किया गया। ये प्रतिक्रियाएं सदियों के नस्लवादी उत्पीड़न और उस उत्पीड़ित इतिहास के सहज रूप से लक्षित चिन्ह, गुलाम बनाने वाले और उपनिवेशवादियों की मूर्तियों, पर केंद्रित थीं। इस तरह लंबे समय से दबा हुआ अचेतन और बिना सोचे–समझे दिखाई देने वाला अतीत समकालीन सामाजिक परिदृश्य को परेशान करने लगता है। ऐसे पुनर्जीवित इतिहासों के परिणामस्वरूप सामाजिक–संरचनात्मक परिवर्तन और व्यक्तिगत साक्ष्यों की बाढ़ आ गई।

ऐतिहासिक स्मृतियों की धारणा स्पष्ट रूप से नई नहीं है। इसे लम्बे समय से उपन्यासों और शैक्षणिक कृत्यों में जांचा गया है। उदहारण के लिए वे तरीके जिसमें होलोकॉस्ट तबाही और दासता के आघात पीढ़ीगत सम्प्रेषण का हिस्सा हैं और आम तौर पर बिना पहचाने, पीड़ितों के वंशजों के जीवन को अस्त व्यस्त कर देते हैं। जॉर्ज फ्लॉयड की हत्या की प्रतिक्रियाएं उन तरीकों को उजागर करती हैं जिनमें सामूहिक इतिहास भी वैयक्तिक है, और अतीत के तत्त्व वर्तमान में लौटते हैं और बने रहते हैं। इससे भी अधिक, हम भविष्य की कैसे कल्पना करते हैं और किस प्रकार का संभावित भविष्य आएगा, के लिए सामूहिक इतिहास केंद्रीय है।

प्रतिच्छेदन के परिपेक्ष्य से, हान्टोलॉजी का सैद्धांतिकरण सामाजिक श्रेणियों के विश्लेषण की संभावनाओं को गहरा करता है। ऐसा ये, निजी और राष्ट्रीय इतिहास कैसे जुड़े हुए हैं और सभी सामाजिक श्रेणियों के अंतर्गत जम गए हैं, जिसके फलस्वरूप लोगों के मध्य विभाजन और समानताएं उभरती हैं, के बारे में प्रश्न उठा कर करता है। उदहारण के लिए, एक अल्पसंख्यक दुनिया देश में अश्वेत, कामगार वर्ग की महिला होने का अर्थ क्या है की सामयिक समझ के लिए पीढ़ीगत और राष्ट्रीय इतिहासों को एक साथ लाना आवश्यक है जो अव्यक्त रूप से आवश्यक सामाजिक श्रेणियों से बचते हैं। समान रूप से यह इस बात पर ध्यान करने को प्रोत्साहित करता है कि कैसे वही इतिहास उन्हीं देशों के श्वेत, मध्यम–वर्ग के पुरुषों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

उदाहरण के लिए हॉन्टोलॉजी पर प्रतिच्छेदित ध्यान शोधकर्ताओं को सामाजिक मुद्दों पर ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछने में मदद करता है। कोविड–19 महामारी के दौरान, यह बहुत जल्दी ही स्पष्ट हो गया था कि लिंग, राष्ट्र, प्रवासन प्रस्थिति, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विकलांगता, आयु, आवास और व्यवसाय सभी रुग्णता और मृत्युदर की असमान दरों को उत्पन्न करते हुए एक दूसरे का परस्परछेदन करते हैं। हालाँकि, यह आश्चर्यजनक था कि कई तरह की व्याख्याएं चाही गई थीं, उदहारण के लिए, रहवास स्थिति, वे तरीके जो इन अंतरों को व्यक्तिगत बनाते हैं और सांस्कृतिक फर्क को उजागर करते हैं, के सन्दर्भ में। जहाँ यह स्थापित करना महत्वपूर्ण है कि कौन से कारक मृत्यदर से सम्बंधित हैं, यह पहचानना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि पाए गए सम्बन्ध किस की जांच की गयी है पर निर्भर हैं, जो बदले में, पूर्व विद्यमान समझ पर निर्भर है। वे इतिहास जो विशिष्ट प्रकार की स्थिति और व्यहारों को उत्पन्न करते हैं, और जिन सामाजिक–भावनात्मक सन्दर्भ में वे व्यक्त किये जाते हैं, के बारे में प्रश्न उठाने से सामाजिक न्याय और अर्थपूर्ण हस्तक्षेपों के दावों को पूरा करने वाले विश्लेषण के उत्पन्न होने की संभावना अधिक है। इन प्रश्नों की विशिष्ट सामाजिक स्थिति के परस्परछेदन से अल्पसंख्यक विश्व समाज में पहले से विद्यमान असमानताएं कैसे और उत्तेजित होती हैं के तरीकों के बारे में गंभीरता से सोचने की संभावना है।

>>

घाना का संकोफा पक्षी। Twi में "संकोफा" शब्द का अर्थ है 'अतीत में वापस जाओ और जो उपयोगी है उसे आगे लाओ।' अकान लोग इसे या तो एक दिल के रूप में या एक पौराणिक पक्षी के रूप में चित्रित करते हैं, जिसके पैर मजबूती से आगे जमे हुए हैं, अपनी चोंच को अपने पीछे घुमाते हुए, इसके मुँह से बेशकीमती, भावी जीवन को जन्म देने वाले अंडे निकलते हुए। श्रेयः टाटाडोनेट्स/आईस्टॉक

> भूतिया प्रतिच्छेदित भविष्य

वर्तमान का प्रतिच्छेदित सताना सामायिक है, सिर्फ इसलिए नहीं कि यह दिखाता है कि कैसे अतीत वर्तमान का भाग है, बल्कि इसलिए कि यह कैसे भावी कार्यवाही को प्रेरित करता है। यह सच है कि चाहे अतीत वर्तमान में प्रस्फुटित हो, जैसा ब्लैक लाइवस् मैटर के पुनरुत्थान के साथ हुआ, या चाहे वह एक उदासीन और बेनामी उपस्थिति के रूप में रहे; दोनों ही मामलों में, भूतिया प्रक्रियाओं ने विषय स्थिति को परेशान किया जिसमें नई कहानियों, अतः भविष्य के लिए नई दृष्टि के निर्माण की आवश्यकता होती है। वे घटनाएं जो ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट हो जाती हैं, वे रोजमर्रा के व्यवहारों को प्रभावित करती हैं और संभावित भविष्य को बाधित या सुविधाजनक बनाते हुए सामाजिक संबंधों में रच बस जाती हैं। जब अतीत का साया चेतना में उभरता है तो होने वाले विस्फोट भावी क्रिया को प्रेरित करते हैं और एक अधिक वांछनीय भविष्य का दावा करते हैं। प्रतिच्छेदन इस की व्याख्या करने में मदद करता है कि जब भूतिया इतिहास सचेत हो जाता है तो एक विशेष श्रेणी वाले व्यक्तियों को अलग प्रतिक्रियाएं, उम्मीदें और दृष्टि कैसे हो सकती हैं।

हाल के वर्षों में, विभिन्न देशों ने विभिन्न महिलाओं और अश्वेत लोगों की हत्याओं की प्रतिक्रिया में उत्पन्न नए लैंगिक/नस्लीय आख्यानों के वृत्तांतों को देखा है जैसे यूएस में #सेहरनेम को लोकप्रिय बनाने को बढ़ावा देना। ऐसा इस बात के लिए किया गया कि जहाँ पुलिस द्वारा कुछ अश्वेत पुरुषों की हत्याएं कुख्यात हो गई, अश्वेत महिलाओं और बच्चों की हत्याओं को अधिकतर कोई ख्याति नहीं मिली। इसलिए, रोजमर्रा के व्यवहारों के अंतर्गत पीढ़ियों द्वारा हस्तांतरित और जमे संबंधों और प्रभावों के पुंज, जो उसी समय उदहारण के लिए नस्लवाद और लिंगवाद का पुनरुत्पादन कर रहे हों, को जाने बिना किसी एक व्यक्ति पर इतिहास के प्रभाव को समझना संभव नहीं है। किसी सामाजिक परिस्थिति में कौन सी श्रेणियाँ उत्पन्न हों रही हैं और सामाजिक जगहों, भावनात्मक लगावों, स्थिति और शक्ति संबंधों की प्रासंगिकता आवश्यक रूप से स्वयं–स्पष्ट नहीं हैं। इसका अर्थ है कि यह माना नहीं जा सकता कि सामाजिक श्रेणियां तभी प्रासंगिक होंगी जब वे उन पर ध्यान केंद्रित किया जाये या वे संचालन में दिखाई दें। इसका यह अर्थ भी है कि राष्ट्र राज्यों द्वारा वैध करार दिए गए इतिहास प्रतिच्छेदित हौन्टिंग्स के समझ के लिए पर्याप्त नहीं हैं, चूँकि ऐसे इतिहास में और उनसे बहुत कुछ छुपा हुआ है। मूक इतिहास समाजों में व्याप्त है, और रोजमर्रा के अपवर्जित/समावेशी प्रतिच्छेदित सामाजिक संबंधों के द्वारा वर्तमान को परेशान करता है। ■

सभी पत्राचार एन फीनिक्स को <a.phoenix@ucl.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> सामाजिक आंदोलनों पर प्रतिच्छेदित परिप्रेक्ष्य

बारबरा जियोवाना बेल्लो, मिलान विश्वविद्यालय, इटली और कानून के समाजशास्त्र पर आईएसए अनुसंधान समिति के बोर्ड सदस्य (आरसी–12) द्वारा

श्रेयः राफेल डीइंडल।

#ब्लैक लाइव्स मैटर (बीएलएम) और #मी टू मूवमेंट क्रमशः 2013 और 2017 से विश्व स्तर पर वायरल हुए। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण, उन्होंने अमेरिका और उसके बाहर महिलाओं और अश्वेत लोगों के समक्ष लगातार और व्यवस्थागत हिंसा की ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान केन्द्रित किया।

> उद्भव

ट्रेवॉन मार्टिन के हत्यारे के बरी होने के प्रत्युत्तर में बीएलएम की सह–संस्थापक एलिसिया गार्जा, पैट्रिस कुल्लर्स और ओपल टोमेटी ने 2013 में इसकी शुरुआत की। इसे अपनी तरह का पहला इंटरनेट–आधारित आंदोलन माना जा सकता है। तब से ही इसका नेतृत्व अश्वेत, महिलाओं और समलैंगिकों के हाथ में रहा है। #मी टू आंदोलन का एक अलग इतिहास है। 2006 में अश्वेत कार्यकर्ता तराना बर्क ने महिलाओं, युवाओं, समलैंगिकों, ट्रांस लोगों और विकलांग अश्वेत समुदायों के लोगों के विरुद्ध होने वाली यौन हिंसा के आघात को ठीक करने के उद्देश्य से इसकी शुरुआत की। इस आन्दोलन को गति तब मिली जब 2017 में हार्वे वेनस्टेन घोटाले के दौरान सेलिब्रिटी एलिसा मिलानो ने इसका उपयोग किया। जो पूर्व के जमीनी स्तर पर #मीटू आंदोलन के बारे में अनजान थीं। उन्होंने दुनिया भर की महिलाओं से #मी टू हैशटैग का उपयोग करके यौन शोषण के अपने अनुभवों को साझा करने का आह्वान किया।

> "दोनों/और परिप्रेक्ष्य"

कोई यह पूछ सकता है कि अश्वेत महिलाओं द्वारा शुरू किए गए दो आंदोलन, जो अपनी स्थापना से ही जानबूझकर प्रतिच्छेदित रहें हैं को "दोनों/और परिप्रेक्ष्य" को प्रभावी ढंग से काम करने के लिए चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ा। हम देखते हैं कि अश्वेत पुरुष कार्यकर्ता उत्तरोत्तर अपने समुदाय के अधिवक्ता के रूप में और कानून प्रवर्तन अधिकारियों द्वारा नस्लवादी हिंसा के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में स्वयं को दर्शाते हैं। इस बीच, यौन शोषण के खतरे के बिना, श्रम बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए श्वेत महिलाओं के अनुरोध दृश्य पर हावी होते दिख रहे हैंय लेकिन अश्वेत महिलाओं की आवाज और अनुभव तेजी से अनुपस्थित हैं। निम्नलिखित में, मैं उनकी अदृश्यता के लिए कुछ संभावित स्पष्टीकरणों को संक्षेप में >>

प्रस्तुत करती हूं और जिनमें इस बात पर विचार करती हूं कि एक प्रतिच्छेदित दृष्टिकोण कैसे इसे दूर करने में योगदान कर सकता है।

> सामाजिक न्याय के असमान प्रश्न

सबसे पहले संरचनात्मक स्तर पर, स्टैंड–अलोन श्रेणियों के रूप में लिंग और नस्ल द्वारा प्राप्त विभिन्न स्थितियों को करीब से विश्लेषित करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह उनकी पारस्परिक अंतर्क्रिया और पदानुक्रमित शक्ति संबंधों में अन्य श्रेणियों के साथ यह अंतःक्रिया को प्रभावित करता है। वास्तव में, बीएलएम आंदोलन मुख्य रूप से अश्वेत लोगों को श्वेत वर्चस्व और नस्लीय रेखाओं पर हिंसा के पुनरुत्पादन को संबोधित करने के लिए दबाव बनाता है। रूढ़िवादी प्रतिवाद के उदाहरण "ऑल लाइव्स मैटर" और "ब्लू लाइव्स मैटर" जैसे समूह विशेष रूप से अश्वेत महिलाओं और सबसे वंचित अश्वेत लोगों की गरिमा की मांग को कम करते हैं। इसके बदले में, #मी टू लगभग सभी महिलाओं (दुनिया की आधी से अधिक आबादी) को संबोधित करता हैय यह पितृसत्ता को चुनौती देता हैय लेकिन यह यौन हिंसा के खतरे के बिना सत्ता के "कमरे" तक पहुंच के आसपास इसे और अधिक स्पष्ट रूप में व्यक्त भी करता है। वह जगह जहाँ अश्वेत महिलाओं के लिए पहुंचना और भी कठिन है। कुल मिलाकर, दोनों आंदोलन सामाजिक न्याय के प्रश्नों को गंभीरता से उठाते हैं, लेकिन दोनों ऐसा अपने–अपने ढ़ंग से करते हैं।

> विशेषाधिकार का आत्म–निरंतरता

दूसरे, अमेरिका और अंतरराष्ट्रीय मुख्यधारा के मीडिया ने अश्वेत महिलाओं की अदृश्यता को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाई है। अश्वेत पुरुषों की निर्मम हत्याओं के समाचार और चित्र और उनके अंतिम शब्दों जैसे–"मैं सांस नहीं ले पा रहा", अभी भी हमारे कानों और आत्माओं में जोर से प्रतिध्वनित हैं, लेकिन मारी गई अश्वेत महिलाओं के अनुपस्थित हैं। इसी तरह, श्वेत महिलाओं, मशहूर हस्ती हो या नहीं, द्वारा निन्दित यौन शोषण ने "अन्य" महिलाओं द्वारा रिपोर्ट की गई बातों को दबा दिया है। इस संदर्भ में, दोनों आंदोलनों में "वर्ग" मायने रखता है। ''वर्ग–जाति–लिंग" का प्रिज्म विशेषाधिकार के पारस्परिक रूप से निर्माण प्रणालियों को प्रकट करने में मदद करता है जो मीडिया व्यवस्था में क्रिस्टलीकृत होते हैं। जहां महिलाओं सहित श्वेत लोग ध्यान आकर्षित करने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं और जानकारी के माध्यम से पुनः उत्पन्न होते हैं।

यह पहली दो बातें संभवतः #मी टू द्वारा प्राप्त व्यापक समर्थन और अश्वेत व अल्पसंख्यक महिलाओं के अनुभवों को कमतर आंकने की व्याख्या करती हैं, साथ ही वे सत्ता संबंधों को कैसे नष्ट किया जाए और "सभी" आवाजों को शामिल करने की संभावनाओं का सुझाव दिया जाए पर सुझाव देती हैं।

> हमें प्रतिच्छेदन की आवश्यकता क्यों है

तीसरा, यह सुझाव दिया जा सकता है कि अश्वेत महिलाओं की हत्या और यौन शोषण को अभी भी "सार्वभौमिक" सभी महिलाओं और अश्वेत लोगों के कष्टों का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत विशिष्ट माना जाता है। इसलिए, एक प्रतिच्छेदित दृष्टिकोण में सार्वजनिक विमर्श अभी भी इस धारणा पर आधारित है कि नस्लवादी और यौन हिंसा क्रमशः अश्वेत पुरुषों और श्वेत महिलाओं के लिए होती है।

चौथा, प्रतिच्छेदित दृष्टिकोण यह समझाने में भी मदद करता है कि कैसे सामाजिक संरचना निकायों के वर्चस्व व अधीनता को बढ़ावा देती है जो बीएलएम मामलों में अमानवीय हैं और # मी टू के मामले में उनका शोषण किया जाता है। आक्रामक नीलम के रूप में अश्वेत महिलाओं का चित्रण या "अलौकिक" शक्ति वाली, या हाइपर सेक्सुअलाइज्ड जेजेबल्स के रूप में उपलब्ध चित्रण जो राज्य बल के दुरुपयोग को उनके खिलाफ या गैर–सहमति वाले सेक्स के खिलाफ सही ठहराने और उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाने का काम कर सकता है। वीनस्टीन मामले में भी यह सामने आयाय कई निंदाओं में से, उन्होंने विशेष रूप से ब्लैक केन्याई–मैक्सिकन अभिनेत्री लुपिता न्योंगो को बदनाम किया। उसी समय, अश्वेत पुरुषों के श्वेत महिलाओं के "बलात्कारी" के रूप में निरूपण ने अक्सर बिना बात दोषारोपण को जन्म दिया और पूर्व में उनकी लिंचिंग को वैध बना दिया। संभवतः इसने कुछ के द्वारा "बस महिलाओं पर विश्वास करें" # मी टू नारे का समर्थन करने की अनिच्छा की व्याख्या की जो अश्वेत महिलाओं के साथ उनकी एकजुटता को भी प्रभावित कर सकता है।

> आगे बढ़ते हुए

अंत में एक पद्धतिशास्त्रीय उपकरण के रूप में, प्रतिच्छेदन शक्ति संरचनाओं के मध्य अंतर्क्रिया के निहितार्थ पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन राजनीतिक निर्णय यह निर्धारित करते हैं कि किसका समर्थन करना है और कैसे करना है?, जैसा कि कीशा लिंडसे ने रेखांकित किया है। दोनों आंदोलनों में, कई समर्थक अभी भी एक धुरीय संघर्ष में संलग्न हैं जबकि उनके संस्थापक और अन्य कार्यकर्ता अभी भी अदृश्य लोगों को दृश्यमान बनाने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। उनकी पहलें दुनिया भर में अधिकाधिक मीडिया और ऑनलाइन में फैलाव के लिए ध्यानाकर्षण योग्य हैं। इसलिए, # सेहरनेम परियोजना दिसंबर 2014 में अफ्रीकी अमेरिकी नीति फोरम (AAPF) और सेंटर फॉर इंटरसेक्शनलिटी एंड सोशल पॉलिसी स्टडीज (CISPS) द्वारा अश्वेत महिलाओं (ट्रांस और लिंग गैर–अनुरूप महिलाओं सहित) के खिलाफ पुलिस द्वारा हिंसा से निपटने के लिए शुरू हुई थी।) मूलतः # मी टू और # अस टू आंदोलन गैर श्वेत महिलाओं, अकुशल श्रमिकों और LGBTQI+ लोगों के खिलाफ यौन शोषण से निपटने का प्रयास करते हैं।

आगे के रास्ते के रूप में, मेरा सुझाव है कि विश्व स्तर पर "प्रतिच्छेदन के प्रश्न" को उठाने के लिए इंटरनेट की विशेषताओं का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। वास्तव में, यदि वेब संचार की अंतरराष्ट्रीयता और प्रवर्धन ने श्वेत महिलाओं और अश्वेत पुरुषों पर जोर देने की अनुमति दी तो उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से स्पष्ट कर दिया है कि "कोई" आख्यान में गायब था, और उन्होंने "कौन" वहां नहीं था और "क्यों," के बारे में त्वरित प्रतिक्रियाओं का मार्ग प्रशस्त किया है। इसने मौजूदा अंतरालों पर चर्चा के लिए जगह प्रदान की। इस "वर्चुअल" स्पेस में बीएलएम और #मी टू सरीखे जैसे आंदोलन गठजोड़ बनाकर ऑफलाइन और ऑनलाइन "प्रतिच्छेदित" एजेंडे को मजबूती से बढ़ा पाए। अगर हम अमेरिकी वकील और कार्यकर्ता मारी मत्सुदा को याद करते हैं– "हम इतिहास के इस मोड़ पर, विशेषाधिकार और अधीनता के सभी पद, जो हम एक दूसरे के सम्बन्ध में रखते है, के पार जा कर अलग अलग स्थानों से बाहर निकल कर एक दूसरे से मिले बिना, हम फलदायी [...] रूप से संलग्न नहीं हो सकते हैं। ■

सभी पत्राचार बारबरा जियोवाना बेल्लो को <barbara.bello@unimi.it> पर प्रेषित करें।

> प्रतिच्छेदित एकजुटता और प्रवासी देखभाल श्रमिक

एथेल तुंगोहन, यॉर्क यूनिवर्सिटी, कनाडा

अप्रैल 2018 में, लिबरल पार्टी के पूर्व आव्रजन मंत्री अहमद हुसैन ने घोषणा की कि कनाडा लिव–इन केयरगिवर प्रोग्राम अब 2020 से स्थायी निवास के लिए आवेदन स्वीकार नहीं करेगा। इस घोषणा से कनाडा के प्रवासी देखभाल श्रमिक आंदोलन के द्वारा गठित संगठन बहुत निराश हुए। टोरंटो में प्रवासियों का यह आंदोलन, जिसमें विभिन्न सामाजिक स्थानों और विभिन्न संगठनों के भिन्न कर्तृता अलग अलग मानक लक्ष्यों और एजेंडा के साथ सम्मिलित हैं, वह सक्रिय हो गया।

> सभी प्रवासी देखभाल कर्मियों के लिए स्थायी निवास का अधिकार कैसे मिले

टोरंटो में वर्कर्स एक्शन सेंटर में तेजी से में बैठकें आयोजित होना शुरु हो गईं जिसमें विभिन्न प्रवासी संगठनों ने भाग लिया। इस बात पर सहमति बनने के बाद कि देखभाल करने वालों को कनाडा में स्थायी निवास मिलना चाहिए, यह आंदोलन बिखर गया। सभी प्रवासी देखभाल श्रमिकों के लिए स्थायी निवास की मांग को कैसे प्राप्त किया जाए, इसको लेकर मत भिन्नता पर कई तरह के विभाजन उभरे। इस बहस में कौन से मुद्दों को प्राथमिकता देनी चाहिए के बारे में भी चिंता थी और निम्न प्रश्न उभरे:

कौन किसके लिए बोल रहा है? इस अभियान में वास्तव में क्या दांव पर लगा है? क्या हमारी सामूहिक ऊर्जा को कानूनी सुधार के लिए उन्मुख होना चाहिए या क्या हमें उन संरचनात्मक असमानताओं पर भी विचार करना चाहिए जो प्रवासी देखभाल श्रमिकों को अपने परिवारों को पीछे छोड़कर कनाडा में काम करने आने के लिए मजबूर करती हैं?

> वापस लिए गए प्रस्ताव

इन प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ दिया गया और वास्तव में ये तनाव के केंद्र बिंदु बने हुए हैं। तथापि, देखभाल प्रदाता संगठन प्रस्तावित परिवर्तनों के विरोध में आवाज उठाने में सफल रहे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनके दृष्टिकोण चल रहे संवाद का हिस्सा बन गए। मीडिया प्रकाशन और प्रतिरोध के माध्यम से, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि देखभाल कार्य कनाडा के समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और प्रवासी देखभाल कामगार, जिनमें से अधिकांश नस्लीय, वैश्विक दक्षिण देशों की श्रमिक वर्ग की महिलाएं हैं, इस कार्यबल का एक अपरिहार्य हिस्सा हैं। उनकी सक्रियता के परिणामस्वरूप, लिबरल सरकार ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया और प्रवासी देखभाल श्रमिकों के लिए कनाडा की नागरिकता प्राप्त करने के लिए नए रास्ते बनाए। जहाँ परिणामी रास्ते उस स्वचालित अधिकार से बहुत दूर थे जिसमे देखभाल करने वालों को, पूर्व में अब–निष्क्रिय लिव–इन केयरगिवर प्रोग्राम के तहत कनाडाई नागरिकता के लिए आवेदन करना पड़ता था, फिर भी स्थायी निवास के मार्गों को बरकरार रखा गया था और देखभाल प्रदाता गठबंधनों को राहत मिली थी कि उन्होंने नागरिकता के अधिकारों को पूरी तरह से हटाने की धमकी को दूर रखने में सफलता प्राप्त की।

> प्रतिच्छेदित लेंस

चार वर्ष बाद, 2022 में, इन चर्चाओं पर विचार करते समय, मुझे लगा कि विशेष रूप से प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलनों और सामान्य रूप से सामाजिक आंदोलनों की जांच करते हुए एक प्रतिच्छेदित लेंस को लगाने से कई बार मुश्किल दुविधाएं सामने आती हैं, जिनका सामना आंदोलन के कर्तृताओं को करना पड़ता है।

पहला, प्रतिच्छेदन हमें प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलन द्वारा अपने सदस्यों की बहुल और अतिव्यापी सामाजिक लोकेशन के मद्देनजर एक *एकीकृत* मंच को प्रोजेक्ट करते हुए सामना की जाने वाली चुनौतियों को सही मायने में सराहने की अनुमति देता है। यह देखते हुए कि जिन सदस्यों को सबसे अधिक प्रतिच्छेदित नुकसान का सामना करना पड़ता है, वे होते हैं जिनकी बोलने की क्षमता सबसे कम है, कौन से कार्यकर्ता वास्तव में आंदोलन की आवाज हो सकते हैं, यह तनाव बना रहता है। तथापि, यह उनकी आवश्यकताएं हैं जो सबसे अति आवश्यक हैं। अतः, यह प्रतिच्छेदित परिपेक्ष्य अपने सदस्यों की जरूरतों, विशेषकर जो सबसे अधिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, को पकड़ने वाले आंदोलन के निर्माण में होने वाली मुश्किलों का खुलासा करता है।

दूसरा, प्रतिच्छेदित लेंस यह भी खुलासा करता है कि प्रतिच्छेदित दृष्टिकोण के होने से प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलनों को कैसे लाभ होता है। प्रवासी देखभाल श्रमिकों के संगठन, जो खुद को प्रतिच्छेदित के रूप में परिभाषित करते हैं, विभिन्न सदस्यता आधारों वाले विभिन्न आंदोलनों के साथ गठबंधन की तलाश करते हैं। वे अक्सर श्रमिक आंदोलन और नारीवादी आंदोलन के साथ गठबंधन करते हैं। कनाडा में प्रवासी देखभाल श्रमिक, जिनके नागरिकता आवेदन उनकी या उनके परिवारों की अपात्रता के कारण खारिज हो जाते हैं, के हित में कार्य करते हुए इन संगठनों ने विकलांगता न्याय आंदोलनों के साथ गठबंधन करने का प्रयास किया है। इन विभिन्न आंदोलनों के साथ काम करने का अवसर प्रवासी देखभाल श्रमिकों की चिंताओं को अधिक व्यापक समर्थन प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। जैसा कि फर्नांडो टॉर्मोस–अपोंटे और मैं एक आगामी लेख में लिखते हैं कि प्रतिच्छेदित एकजुटता को तराशने

>>

''प्रतिच्छेदन का उपयोग करके इन आंदोलनों का विश्लेषण करने से हमें प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलनों द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोणों की तरलता की बेहतर सराहना करने की अनुमति मिलती है''

की क्षमता विभिन्न समुदायों को अपने भाग्य को आपस में जुड़े हुए देखने की अनुमति देती है। प्रगतिशील संगठन जो अन्य सामाजिक आंदोलनों के साथ प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलन का हिस्सा हैं– यह पाते हैं कि सामूहिक रूप से, वे प्रमुख अभियानों में शामिल होकर और सार्वजनिक प्रवचन को प्रभावित करके उत्पीड़न को कम करने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं।

> उन्मूलन बनाम सुधार

निःसंदेह, मानकीय एजेंडे के प्रश्न पर विभिन्न कर्त्ता संघर्ष में आते हैं। यहाँ, एक प्रतिच्छेदित लेंस पुनः रौशनी डालने वाला सिद्ध होता है। कुछ प्रवासी देखभाल श्रमिक संगठनों का मानना है कि, कॉम्बाही रिवर कलेक्टिव की प्रतिच्छेदित दृष्टि की संगति में आंदोलनों को अंततः पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और पितृसत्ता की अन्तःपाशी शक्ति संरचनाओं को समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। फिर भी अन्य संगठन मानते हैं कि उनके उनके प्रयास नीतिगत परिवर्तनों की दिशा में सबसे अधिक निर्देशित हैं। मेरी आने वाली पुस्तक *''केयर एक्टिविज्मः माइग्रेंट डोमेस्टिक वर्कर्स, मूवमेंट– बिल्डिंग एंड कम्युनिटीज ऑफ केयर''* में मैं इन विभाजनों को उन्मूलन बनाम सुधार के तौर पर वर्गीकृत करती हूँ : कुछ संगठन आंदोलन की सफलता को उन्मूलनवादी दृष्टि को बढ़ावा देने के रूप में देखते हैं तो कुछ अन्य लोग सफलता को नीतिगत परिवर्तनों के आधार पर देखते हैं। .

> कोविड –19 के प्रभाव

कोविड –19 महामारी ने इनमे से कई वैचारिक विभाजनों को समाप्त किया है जिससे प्रतिच्छेदित विश्लेषण और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। जहाँ मुझे अभी भी लगता है कि विभिन्न संगठनों के मानक दृष्टिकोण अंततः विचारधारा पर टिके हुए हैं, प्रतिच्छेदन का उपयोग करते हुए इन आंदोलनों का विश्लेषण हमें प्रवासी देखभाल श्रमिक आंदोलनों द्वारा अपनाये उपागम की तरलता को बेहतर सराहना करने की अनुमति देता है। शक्ति के बहु–आयामी विश्लेषण जो प्रक्रियाओं, प्रणालियों और वे संरचनाएं जो व्यक्तियों द्वारा जिए अनुभवों को प्रभावित करते है और कमतर करती हैं में बदलाव पर जोर देने के साथ–साथ प्रतिच्छेदन यह दर्शाता है कि कोविड –19 प्रवासी देखभाल श्रमिकों के लिए कैसे विनाशकारी थाः राज्य नीतियों और कार्यस्थल की स्थितियों में आगामी बदलाव तबाह करने वाले थे।

कनाडा में प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलन के लिए महामारी एक वाटरशेड थी जिसने आंदोलन के भीतर सक्रियता की तात्कालिकता को प्रकट किया। 2018 में परस्पर विरोधी रुख अपनाने वाले उन्हीं संगठनों में से कई महामारी के दौरान प्रवासी देखभाल श्रमिकों के समर्थन में बेहतर नीतियों का आह्वान करने के लिए और अधिक लंबे समय तक चलने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों की शुरुआत करने के उद्देश्य से एक साथ आए जिससे देखभाल एक आधारभूत सामाजिक मूल्य के रूप में केंद्र में स्थापित हो। महामारी ने प्रवासी देखभाल श्रमिकों के आंदोलन के भीतर कर्त्ताओं को स्वदेशी आंदोलनों के साथ, ब्लैक लाइव्स मैटर के साथ और अन्य प्रगतिशील सामाजिक आंदोलनों के साथ गठबंधन बनाने के महत्व पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। उनके भाग्य को अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ अपरिवर्तनीय रूप से एकीकृत होने के कारण, प्रतिच्छेदित एकजुटता की आवश्यकता की गहरी सराहना भी हुई है। ■

सभी पत्राचार एथेल तुंगोहन को <tungohan@yorku.ca> पर प्रेषित करें।

> एक उपयुक्त प्रतिच्छेदन रूपक की खोज

अमुंड रेक हॉफर्ट, ओस्लो विश्वविद्यालय, नॉर्वे द्वारा

प्रतिच्छेदन को अक्सर रोडवेज और चौराहे द्वारा दर्शाया जाता है।
श्रेयः जेरेमी बिशप / अनस्प्लाश

अपने दैनिक और अकादमिक दोनों रूपों में, भाषा रूपक से भरी होती है। यदि आप किसी पाठ में रूपकों की तलाश करते हैं तो वे मशरूम की तरह उगने लगते है। वास्तव में रूपक ट्रॉप्स का उपयोग करते हैं: रुपक यानि ऐसे भाव जो शब्दों के परिचित अर्थ को बदल दे, ताकि वे कुछ और चित्रित कर सकें। टूटा हुआ दिल, खराब सेब, व्यक्ति का नैतिक कम्पास, देर से खिलने वाले और दुधारी तलवार जैसे रूपक सांसारिक सेटिंग्स से प्रसिद्ध वस्तुओं का उपयोग करते हुए उन्हें नए और कभी–कभी तो आश्चर्यजनक ढ़ंग से स्थानांतरित करते हैं। हमारी रोजमर्रा और अकादमिक भाषा में रूपकों की संपत्ति को खोजने से पता चलता है कि वे कुछ ऐसी चीजें क्यों हैं जिनके द्वारा हम जीते हैं जैसा 1980 में जॉर्ज लैकॉफ और मार्क जॉनसन द्वारा रूपक पर क्लासिक कार्य में कहा गया। भाषा की एक परिधीय घटना होने से बहुत दूर, कुछ असाधारण जो कविता और बयानबाजी के दायरे से संबंधित है, रूपक हमारी रोजमर्रा की सोच और कार्यों को गहराई से प्रभावित करते हैं।

> क्रेंशॉ का ट्रैफिक चौराहा

किम्बरले क्रेंशॉ का 1989 का निबंध ''डीमर्जीनालीजिंग द इंटरसेक्शन ऑफ रेस एंड सेक्सः अ ब्लैक फेमिनिस्ट कृतिके ऑफ एंटीडीस्कृमिनेशन डॉक्ट्रिन, फेमिनिस्ट थ्योरी एंड एंटी– रेसिस्ट पॉलिटिक्स'' ने ट्रैफिक चौराहे के रूपक के माध्यम से प्रतिच्छेदन की अवधारणा की व्याख्या की। अश्वेत महिलाओं के भेदभाव के अनुभव को कई दिशाओं से आने वाले ट्रैफिक के अनुभव के रूप में देख, क्रेंशॉ ने संयुक्त राज्य अमेरिका में कानूनी मामलों के अपने विश्लेषण >>

के साथ विशेष रूप से विचारोत्तेजक इमेजरी सिद्धांत प्रतिपादित किया, जहां अश्वेत महिलाएं अमेरिका के भेदभाव–विरोधी दरारों में गिर रही थीं। यद्यपि तब से ट्रैफिक चौराहे को प्रतिच्छेदन की केंद्रीय छवि के रूप में लिया गया है, इसे आलोचना का सामना भी करना पड़ा है। अधिकांश आपत्तियां यातायात चौराहे की छवि के योगात्मक आयामों पर ही केन्द्रित हैं। यह सामाजिक श्रेणियों यथाः लिंग, जाति, वर्ग और कामुकता को अलग–अलग और स्वतंत्र रूप में चित्रित करती है। जिससे उन्हें एक–दूसरे से जोड़ना संभव हो जाता है। इस बात से इंकार करना मुश्किल लगता है कि ट्रैफिक चौराहे की छवि इस मायने में योगात्मक है कि यह उन स्वतंत्र मार्गों को अलग करती है जो चौराहे से अंदर और बाहर जाते हैं। क्रेंशॉ के निबंध के प्रकाशन के बाद से जो तीन दशक बीते हैं, उनमें बहुत से विलक्षण वैकल्पिक रूपकों का प्रस्तुतीकरण हुआ है। यह, फिर, एक महत्वपूर्ण तरीका बन जाता है जिससे प्रतिच्छेदन आगे बढ़ता हैः रूपक और सादृश्यता से निरंतर नई व्याख्याओं और स्पष्टीकरणों के द्वारा यह विचार काफी दूर तक विस्तृत हो गया है।

> बाल की खाल निकालने के बहुत तरीके हैं!

दिलचस्प बात यह है कि प्रतिच्छेदन के कुछ वैकल्पिक रूप, यातायात चौराहे के जिस रूप को बदलना चाहते हैं, की तुलना में अधिक अमूर्त हैं, यथाः अक्षीय, हस्तक्षेप, विन्यास, संयोजन, अंतराल, वेक्टर, भौगोलिक स्थिति, और अव्यस्थित उभरते स्थान। अधिक मूर्त क्षेत्र में रूपकों की तलाश करने वालों के लिए, खाना पकाने और बेकिंग का क्षेत्र स्पष्ट रूप से प्रेरक है, चूँकि प्रतिच्छेदन की तुलना चीनी, कुकीज, परतदार केक, मार्बल केक में भंवर, घोल, और स्टू से की गई है। खाना पकाने और खाने का एक पहलू है जिसका एक बेहतर प्रतिच्छेदन रूपक की तलाश करने वाले विद्वानों पर एक विशेष आकर्षक प्रभाव पड़ा है : जिस तरह से सामग्री एक दूसरे में मिलती है और प्रवाहित होती है, हिस्से पूर्ण बनते है और पूर्ण हिस्से में बंटता हैय विभिन्न अवयवों का मिलना, बाहर फैलना और एक साथ खाया जाना है। खाद्य रूपकों के पहाड़ के बीच एक उदाहरण शैनन सुलिवन का स्टू है जिसे उनकी 2001 की पुस्तक "लिविंग एक्रॉस एंड थ्रू स्किन्स" में प्रस्तुत किया गया है।

एक फोंड्यू के विपरीत, जहां सामग्री एक साथ पिघलती है और बिखर जाती है, सुलिवन के स्टू में सब्जियां बर्तन में अपनी "पहचान" बनाए रखती हैं लेकिन साथ ही वे अन्य सब्जियों के साथ से बदल जाती हैं। प्रतिच्छेदित सामाजिक संबंधों और पहचान के लिए एक रूपक के रूप में एक स्टू के बारे में सोचकर, बर्तन में सब्जियां किसी की सामाजिक पहचान के विभिन्न हिस्सों के बीच गतिशील और पारस्परिक रूप से आकार देने वाले संबंधों को उजागर करती हैं, यथाः जाति, लिंग, वर्ग, कामुकता, आयु, विकलांगता, क्षमता व अन्य।

> अस्तव्यस्त पहाड़ी चौराहा

अन्य विद्वानों ने सड़क मार्गों और चौराहों की ट्रैफिक इमेजरी के साथ काम करना जारी रखा। अपने 2011 के निबंध "इंटरसेक्शनलिटी, मेटाफोर्स, एंड द मल्टीप्लिसिटी ऑफ जेंडर" में, एन गैरी ने ट्रैफिक चौराहे पर अन्य तत्वों के क्रमिक योग को चित्रित किया, वे तत्त्व जिन पर निर्माण किया जाता है, लेकिन उसी समय वे क्रेनशॉ के मूल रूपक को जटिल भी बनाते हैं। दमनकारी प्रणालियों के पूर्ण सम्मिश्रण को बेहतर समझने और इसे अधिक प्रवाही बनाने के लिए गैरी ने और सड़के, और कारें, और एक गोलचक्कर को जोड़ा। तथापि, जोड़े गए तत्त्व अभी भी ट्रैफिक चौराहे की प्रतिबंधात्मक क्षैतिजता की छवि से मुक्ति नहीं पा सकते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें गोल चक्कर के समतल ढांचे से आगे निकल जाना चाहिए। विशेषाधिकार और उत्पीड़न की संरचनाएं एक साथ कैसे काम करती हैं और एक–दूसरे से कैसे संबंधित हैं। यह बताने के लिए ऊर्ध्वाधरता के तत्व की आवश्यकता है। इस बिंदु पर गैरी पहाड़ों की ओर मुड़ते हैं और फिर पहाड़ की छवि के साथ बहने वाले तरल पदार्थ भी पेश करते हैं। यह प्रेरणा सुनिश्चित करती है कि इमेजरी तरल बनी रहे, ठोस और असतत नहीं। गैरी के रीमेक का परिणाम कुछ इस तरह सामने आता हैः तरल पदार्थ पहाड़ों से एक चौराहे तक जाते हैं जिसके केंद्र में एक गोल चक्कर होता है और जहां कई सड़कें व कारें मिलती हैं। यदि यह छवि गड़बड़ दिखाई देती है, तो गैरी हमें विश्वास दिलाते हैं कि इस तरह की गड़बड़ी ठीक वैसी ही है जैसी हमें अपने रूपकों में चाहिए ताकि प्रतिच्छेदन की जटिलता को समझने में मदद मिले।

> कोई शुद्ध गड़बड़ नहीं है

प्रतिच्छेदन के वैकल्पिक रूपकों के लिए इस खोज को क्या प्रेरित करता है? ऐसा प्रतीत होता है कि नए व बेहतर रूपकों की तलाश प्रतिच्छेदन की केंद्रीय छवि के साथ व्यापक असंतोष से प्रेरित प्रतीत होती है। यातायात चौराहा रूपक केवल आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता हैः बल्कि यह अलग–अलग धाराओं की पर्याप्तता पर निर्भर है। यानि कि प्रतिच्छेदन के लिए एक "सही" रूपक भी होना आवश्यक है जो कि व्यसन से प्रभावित न हो। इस दृष्टि से गैरी उल्लेखनीय हो जाते है कि हमारे प्रतिच्छेदन रूपकों में गड़बड़ी की आवश्यकता है। हालांकि प्रतिच्छेदन हेतु उचित रूपक की तलाश, विरोधाभासी रूप से, अशुद्ध के शुद्ध संस्करण की आकांक्षा के लिए प्रकट होती है; अर्थात, यह एक ऐसे रूपक को तराशने का प्रयास है जो मिलावटी प्रदूषण से मुक्त है। पवित्रता के ऐसे आदर्शों की आकांक्षा करना, मेरे अनुसार, गंदगी के बिल्कुल विपरीत है, और कुछ ऐसा जो वास्तव में हमारी बौद्धिक व रूपकीय कल्पना को बाधित कर सकता है। हमें रूपकों में "गड़बड़ी की आवश्यकता" को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए इसके बजाय हमें अपनी सोच के योगात्मक आयामों को स्वीकार करने और उन्हें शर्मिंदगी के बजाय एक संभावित संसाधन के रूप में देखने की जरुरत है।■

सभी पत्राचार आमुंड रेक हॉफर्ट को <a.r.hoffart@stk.uio.no> पर प्रेषित करें।

> एक आलोचनात्मक पद्धति के रूप में प्रतिच्छेदन

कैथी डेविस, फ्री यूनिवर्सिटी एम्स्टर्डम, नीदरलैंड्स और **हेल्मा लुट्ज**, गोएथे यूनिवर्सिटी फ्रैंकफर्ट, जर्मनी द्वारा

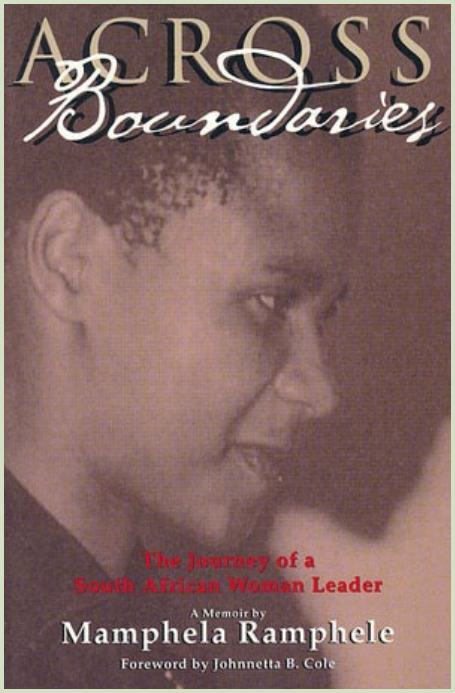

श्रेयः द सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क में द फेमिनिस्ट प्रेस ।

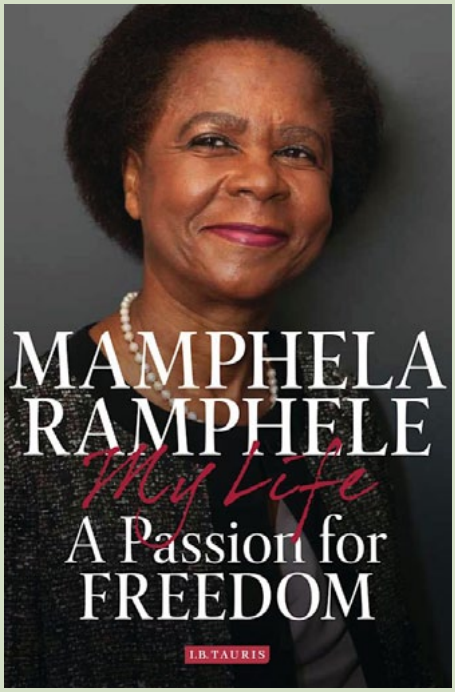

श्रेयः आईबी टॉरिस।

लिंग अध्ययन के क्षेत्र में कई विद्वान जहाँ इस बात से सहमत हैं कि प्रतिच्छेदन अच्छे नारीवादी सिद्धांत का एक अनिवार्य हिस्सा है, पर यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता है कि अनुसंधान के संदर्भ में प्रतिच्छेदन को कैसे अपनाया जाना जाए। व्यवहार में, प्रतिच्छेदन कई प्रश्न उठाता है, उदाहरण के लिए: एक प्रतिच्छेदन विश्लेषण में किन श्रेणियों को शामिल किया जाना चाहिए? क्या शोधकर्ताओं को हमेशा लिंग, जाति और वर्ग के ''तीनों बड़े'' से चिपके रहना चाहिए?, या उन्हें एक व्यापक दृष्टि डालनी चाहिए? कुछ विद्वान श्रेणियों के उपयोग को जानने में अधिक रुचि रखते है। क्योंकि अनुभवों और पहचानों की व्यापक विविधता को पकड़ना इतना सरल नहीं हैं।

> प्रतिच्छेदन को कैसे लागू करें

अमेरिकी कानूनी विद्वान मारी मात्सुदा ने प्रतिच्छेदन विश्लेषण के लिए एक सरल प्रक्रिया को अपनाया जिसे उन्होंने "अन्य प्रश्न पूछना" कहा। "जब मैं कुछ ऐसा देखती हूं जो नस्लवादी दिखता है, तो मैं पूछती हूं, 'इसमें पितृसत्ता कहां है?' जब मैं कुछ ऐसा देखती हूं जो सेक्सिस्ट दिखता है तो मैं पूछती हूं, 'इसमें विषमलैंगिकता कहां है? जब मैं कुछ ऐसा देखती हूं जो समलैंगिकता प्रतीत होता है तो मैं पूछती हूं, 'इसमें वर्ग के हित कहां हैं?'" यह प्रक्रिया आश्चर्यजनक रूप से सरल लगती है लेकिन निश्चित रूप से लोगों की जीवन की कहानियों में प्रतिच्छेदन शक्ति के काम करने के तरीकों का विश्लेषण शुरू करने का यह एक उपयोगी तरीका है। ये चौराहे कैसे सक्षम और विवश दोनों हो सकते हैं।

> एकजुट संघर्षों पर स्वतंत्रता को निर्भर कैसे देखा जा सकता है ?

एक उदाहरण के रूप में इस पद्धति को हमने दक्षिण अफ्रीका के एक प्रसिद्ध चिकित्सक, लेखक और रंगभेद विरोधी कार्यकर्ता मम्फेला रामफेल के जीवन इतिहास पर लागू किया। उन्हें जेल हुई और उनके काम पर कई वर्षों तक प्रतिबंध लगा दिया गया था। लेकिन वे दक्षिण अफ्रीकी विश्वविद्यालय की मुखिया, विश्व बैंक के प्रबंध निदेशक और 2014 के आम चुनावों में डेमोक्रेटिक एलायंस के राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार बनने वाली पहली अश्वेत महिला बनीं। हमने उनसे "अन्य प्रश्न पूछने" के तीन तरीकों को उपयोग में लिया: (a) विश्लेषण से पहले खुद को शोधकर्ताओं के रूप में स्थापित करना; (b) विश्लेषण के दौरान उभरे अंध स्थलों की खोज करना; (c) शक्ति संबंधों के बारे में सोच को जटिल बनाना ।

(a) डोना हार्वे के प्रसिद्ध तर्क कि (नारीवादी) शोधकर्ताओं को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वे जो ज्ञान पैदा कर रहे हैं वह स्थित, आंशिक और आत्मकेंद्रित ही है। हमने माना कि एक नस्लवाद– विरोधी अजेंडे के साथ श्वेत, नारीवादी, यूरोपीय/अमेरिकी

> >

शोधकर्ताओं के रूप में रामफेल की जीवनी का विश्लेषण करने की हमारी इच्छा कोई निर्दोष प्रयास नहीं था। नारीवादी विद्वता में नस्ल और नस्लवाद की उपेक्षा के आलोचक होने के नाते हमें उम्मीद थी कि रामफेल का जीवन इतिहास हमें अपनी परियोजना को लागू करने की अनुमति देगा, अर्थात् यह प्रदर्शित करने के लिए कि प्रजाति के बारे में बात किए बिना लिंग के बारे में बात नहीं की जा सकती है। रंगभेद के संदर्भ में या नस्लवाद के साथ अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में बात करने के लिए खुद को एक अश्वेत अफ्रीकी के रूप में स्थापित करने में उनकी अनिच्छा से हम शुरू में आश्चर्यचकित थे। यहां तक कि वे अपनी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति या असाधारण या वे तरीके जिनसे वे अलग थीं से प्रेरण ा लेकर वे स्वयं को प्रजाति और नस्लवाद से दूर रखना चाहती थीं। इससे भी अधिक उल्लेखनीय तथ्य यह था कि पूरे साक्षात्कार के दौरान वह स्वयं को एक महिला के रूप में स्थापित करने में अधिक सहज लग रही थीं। जेंडर पर उनके बारम्बार जोर देने ने हमें रोक दिया और यह विश्वास दिलाया कि हमें ड्राइंग बोर्ड पर वापिस लौट जाना होगा।

(b) पुनः "अन्य प्रश्न पूछकर" हमने उन क्षणों में से कुछ पर अधिक बारीकी से विचार किया जब रामफेल ने जोर देकर कहा कि लैंगिक असमानता और लिंगवाद उनके विकास के पीछे प्रेरक शक्ति रहे। हमारी धारणा के विपरीत कि रंगभेद के तहत नस्लवाद उसके जीवन की सबसे प्रमुख विशेषता होगी, रामफेल ने अपने जीवन को समझने के लिए पितृसत्तात्मक लिंग संबंधों का संदर्भ बताना जारी रखा। अभी उनकी आख्यान रणनीति उनकी विशिष्ट स्थिति को बनाने में साधक थी, वह कुछ जिससे वे नस्लीय रूप से विभाजित दक्षिण अफ्रीका में अपनी लैंगिक पहचान से आसानी से प्राप्त कर सकती थी। उन्होंने स्वयं को एक अश्वेत महिला या दक्षिण अफ्रीकी के रूप में नहीं बल्कि एक बेटी और एक बहन के रूप में स्थान दिया जिसे पुरुषों और पुरुष–प्रधान संस्थानों के खिलाफ लड़ना पड़ा और जिसने उसे वह करने से रोका जो वह करना चाहती थी। इस तरह, उन्होंने स्वयं को अपने परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों और साथियों से अलग विशिष्ट के रूप में स्थापित किया।

(c) "अन्य प्रश्न पूछकर'' स्वयं को एक स्वतंत्र दिमाग वाली महिला के रूप में पेश करने के लिए रामफेल के दृढ़ संकल्प को समझने में हम सफल रहे। समाज में एक महिला की भूमिका की मानक बाधाओं को दूर करने की उनकी गहरी इच्छा एक स्वतंत्र सोच वाली विद्वान, एक कार्यकर्ता, एक पेशेवर और एक माँ के रूप में उनकी सफलता का आधार बनी। उन्होंने उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्हे उन्होंने अपने बल–बूते पर हासिल किया था (न कि, उदाहरण के लिए, विख्यात ब्लैक पावर कार्यकर्ता स्टीव बिको की प्रेमिका के रूप में) और इस बात पर बारम्बार जोर दिया कि यह केवल नस्ल, रंगभेदी राज्य, या ब्लैक कॉन्सिसियसनेस्स मूवमेंट नहीं था, जो, वे अपनी पहचान को कैसे देखती हैं, के लिए महत्वपूर्ण था। उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उनके जीवन के विभिन्न पक्ष और स्थापन, जिस सन्दर्भ में वे स्वयं को पाती हैं पर निर्भर हो, कैसे विशिष्ट क्षणों में महत्वपूर्ण हो गए। उदाहरण के लिए, नारीवाद पर नस्लवाद के विरुद्ध संघर्ष को एएनसी द्वारा प्राथमिकता के खिलाफ उनके विद्रोह को देखिये:

''आपको विभाजित स्वतंत्रता नहीं मिल सकती। मैंने पूछा, मैं स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में कैसे परिभाषित कर सकती हूँ जब मैं एक अश्वेत व्यक्ति के रूप में स्वतत्र हो जाऊँ और महिला के रूप में फंसी रहूं? ऐसा कोई तरीका नहीं हैं जिसमें मेरा शरीर मेरे अंदर की महिला और मेरे अंदर के अश्वेत व्यक्ति के मध्य बट जाये। और यदि आप मेरी स्वतंत्र को सम्बोधित करना चाहते हैं तो इसे एकीकृत करना होगा।''

प्रतिच्छेदित सोच के इस सुन्दर उदाहरण में, वे लिंग और नस्ल को एक साथ लाती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनके लिए स्वतंत्रता दोनों संघर्षों के एकीकृत होने पर निर्भर होती है।

रोजमर्रा की रणनीतियाँ कैसे हमें शक्ति का विरोध करने या समायोजित करने की अनुमति देती हैं

"अन्य प्रश्न पूछने" की विधि हमें रामफेल की जीवनी की प्रतिच्छेदित समझ विकसित करने में सक्षम बनाती है जिससे हम अपनी धारणाओं और सामाजिक स्थिति की गंभीर रूप से छानबीन कर सकते हैं। और यह पहचानना कि हमारी कमजोर समझ साक्षात्कार के हमारे विश्लेषण को कैसे बाधित करती है, और अंततः लिंग, प्रजाति, और अन्य सामाजिक भेदों की प्रतिच्छेदित समझ को उपयोग में ले कर स्वयं की समझ वाला एक आख्यान तैयार कर, कैसे साक्षात्कारकर्ता स्वयं अपने जीवन का एक जटिल पुनर्निर्माण प्रदान करती हैं। प्रतिच्छेदन का उपयोग शोधकर्ताओं, समाजशास्त्रियों, नारीवादियों और आलोचनात्मक नस्लीय के विद्वानों तक ही सीमित नहीं है। आम लोग भी स्वयं इसका इस्तेमाल करते हैं। प्रतिच्छेदन का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि लोग अपने आप को अलग–अलग संदर्भों में और अपने जीवन में अलग–अलग क्षणों में किस तरह पेश करते हैं। इसका अर्थ है उन कमजोरियों को स्वीकार करना जो हर स्थिति में बराबर समान या समान नहीं हैं और यह देखना कि कैसे व्यक्ति, अक्सर काफी संसाधनशीलता के साथ, इन कमजोरियों को दूर करने या अवशोषित करने के लिए रणनीति विकसित करते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण बात इसमें उन रोजमर्रा की रणनीतियों को देखना शामिल है जिनका उपयोग लोग सत्ता का विरोध करने या समायोजित करने के लिए अक्सर करते हैं: ऐसी रणनीतियाँ जो अनिवार्य रूप से हमारी अपेक्षा से अधिक जटिल और विरोधाभासी हैं। ■

सभी पत्राचार कैथी डेविस को <k.e.davis@vu.nl> पर और
हेल्मा लुट्ज को <lutz@soz.uni-frankfurt.de> पर प्रेषित करें।

1. यह विश्लेषण एक सहकर्मी, भूतपूर्व नागरिक अधिकार कार्यकर्त्ता और मौखिक इतिहासकार मेरी मार्शल क्लार्क द्वारा किये गए साक्षात्कार के साथ–साथ स्वयं रामफेले द्वारा लिखित कई आत्मकथाओं पर आधारित है।

> फ्राइडेस फॉर फ्यूचर: एक सामाजिक आंदोलन परिप्रेक्ष्य

कोइची हसेगावा, शोकेयगाकुइन विश्वविद्यालय, जापान, और पर्यावरण और समाज पर आईएसए की अनुसंधान समिति (आरसी 24) के सदस्य द्वारा

मुख्य चित्र : ग्लोबल डे ऑफ एक्शन फॉर क्लाइमेट जस्टिस। 6 नवंबर, 2021 को COP26 में ग्लासगो में क्लाइमेट मार्च में 100,000 लोग शामिल हुए। श्रेय: हाने ताकाहाशी (फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ जापान)।

छोटी तस्वीर : 6 नवंबर, 2021 को लंदन में क्लाइमेट मार्च। श्रेय: अमेलिया कॉलिन्स (फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ इंटरनेशनल)।

कोविड–19 महामारी, जिसके तहत आमने–सामने की बड़ी घटनाएं आयोजित करना मुश्किल है, के बावजूद फ्राइडेस फॉर फ्यूचर, जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर काम करने वाले युवाओं का एक नेटवर्क अभी भी सक्रिय है। नवंबर 2021 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) के दौरान, यूके के ग्लासगो में, लगभग 100,000 लोगों ने जलवायु संकट से निपटने के लिए और अधिक आक्रामक कार्रवाई की मांग के लिए मार्च किया। सितंबर 2019 के मध्य में, यह अभियान विश्व स्तर पर 7.6 मिलियन से अधिक युवाओं को जुटाने में सफल रहा, जो कि किसी भी सड़क अभियान में प्रतिभागियों की संख्या का विश्व रिकॉर्ड है। हम इसका आकलन इस तरह कर सकते हैं कि यह दुनिया भर में सबसे सफल सामूहिक कार्रवाई है। हमें आश्चर्य हो सकता है कि ये अभियान इतने सफल क्यों रहे हैं। हालाँकि, इस वैश्विक सफलता के बावजूद, अन्य स्थानों में तीव्र वृद्धि की तुलना में जापान में इन गतिविधियों में भागीदारी कम और धीमी रही है। अभियानों में जुटे प्रतिभागियों की संख्या, वे शहर जहां सड़क अभियान आयोजित किए गए हैं, और मीडिया पर और सरकार के भीतर, राष्ट्रीय और स्थानीय दोनों स्तरों पर प्रभाव के मामले में जापान में ये अभियान इतने सीमित क्यों हैं ? सांस्कृतिक ढांचे पर ध्यान केंद्रित कर, संसाधन और राजनीतिक अवसरों की संरचना को लामबंद कर ये आलेख सामाजिक आंदोलनों के दृष्टिकोण से इन प्रश्नों के कुछ उत्तर प्रस्तुत करता है।

> फ्राइडेस फॉर फ्यूचर: सबसे सफल सामूहिक कार्रवाई

फ्राइडेस फॉर फ्यूचर 20 अगस्त, 2018 को प्रारम्भ हुआ, जब एक 15 वर्षीय स्वीडिश लड़की, ग्रेटा थुनबर्ग ने अकेले स्वीडिश संसद के सामने विरोध करना प्रारम्भ किया। यह नए स्कूल सेमेस्टर का पहला दिन था और स्वीडन में आम चुनाव अभियान का मध्य था। उसकी मूल योजना तीन सप्ताह, शुक्रवार, 7 सितंबर: आम चुनाव अभियान की समाप्ति, तक अपनी हड़ताल जारी रखने की थी। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ उपायों को सरकार से मजबूत करने की मांग को लेकर उसके द्वारा अपनी कक्षाओं का बहिष्कार कर प्रारम्भ ''जलवायु परिवर्तन हड़ताल'' या ''स्कूल हड़ताल'' तुरंत एसएनएस (सोशल नेटवर्किंग सर्विसेज) और विदेशों में मीडिया कवरेज के माध्यम से फैल गई। अपने प्रतिरोध के लिए अप्रत्याशित रूप से बड़ी प्रतिक्रिया के मद्देनजर, ग्रेटा ने आम चुनाव के बाद हर शुक्रवार को हड़ताल जारी रखने का फैसला किया जब तक कि स्वीडिश सरकार 2015 के पेरिस समझौते के तहत अपने वादों को पूरा करने के लिए और अधिक आक्रामक कार्यवाही नहीं करती। नवंबर 2018

>>

में उसकी टेड टॉक (प्रौद्योगिकी, मनोरंजन, और डिजाइन) और उसी वर्ष दिसंबर में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (सीओपी 24) में उसके भाषण की अत्यधिक प्रशंसा की गई थी, और जलवायु परिवर्तन की हड़ताल तुरंत फ्राइडेस फॉर फ्यूचर के रूप में दुनिया भर में फैल गई।

ग्रेटा के पहले विरोध के सात महीने बाद, शुक्रवार, 15 मार्च, 2019 को, यह अभियान दुनिया भर के 125 देशों के 2000 से अधिक शहरों में 14 लाख से अधिक लोगों, मुख्य रूप से युवा, तक विस्तृत हो गया था। इसके प्रारम्भ होने के तेरह महीने बाद, शुक्रवार, 20 सितंबर, 2019 को, 23 सितंबर को यूएन क्लाइमेट एक्शन समिट शुरू होने से ठीक पहले, 163 देशों में 4 मिलियन से अधिक लोगों ने विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया। अभियान शुक्रवार, 27 सितंबर तक जारी रहा, जिसमें आठ दिनों में कुल 185 देशों में 7.6 मिलियन से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। अधिकांश देशों में, कई युवाओं ने स्वेच्छा से सड़क प्रदर्शनों में भाग लिया।

यह किसी भी मुद्दे पर या किसी भी क्षेत्र में दुनिया में अब तक की सबसे बड़ी सामूहिक कार्रवाई थी। ग्रेटा के कदम से पहले, लगभग 400,000 प्रतिभागियों के साथ सितंबर 2014 में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष सत्र से ठीक पहले न्यूयॉर्क में सबसे बड़ा जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन हुआ था ।

2020 में, वैश्विक कोविड–19 महामारी के कारण, अधिकांश देशों में सड़क पर कार्यवाही अत्यधिक सीमित थी। लेकिन शुक्रवार, 25 सितंबर, 2020 को ग्लोबल डे ऑफ क्लाइमेट एक्शन का आह्वान किया गया था। महामारी के बावजूद, दुनिया भर में 3200 स्थानों पर कार्यवाही की गई। जर्मनी में, कुल 200,000 लोगों ने 450 स्थानों पर सड़क पर होने वाली गतिविधियों में भाग लिया।

दुनिया भर में तेजी से उछाल की तुलना में जापान में गतिविधियों में बहुत कम उपस्थिति थी और समर्थन प्राप्त करने की दर भी धीमी थी। 15 मार्च, 2019 को विरोध जापान में केवल दो शहरों: टोक्यो और क्योटो में कुल 200 प्रतिभागियों तक ही सीमित था। हालाँकि, 20 सितंबर, 2019 को ''ग्लोबल क्लाइमेट मार्च'' प्रदर्शन में 23 प्रान्तों के 27 शहरों में 5000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। टोक्यो में लगभग 3000 लोगों ने भाग लिया। लोगों के लिए भाग लेना आसान बनाने के लिए, जापान में, हड़ताल या कार्रवाई के बजाय नरम शब्द मार्च का इस्तेमाल किया गया था ।

इस आंदोलन की निम्नलिखित विशेषताएं बहुत ही रोचक हैं। (1) इसमें मुख्य रूप से युवा पीढ़ी जैसे हाई स्कूल और विश्वविद्यालय के छात्रों को शामिल करने वाली सामूहिक कार्रवाई है। (2) अधिकांश प्रतिभागी पहली बार आए थे, जो पहले कभी किसी सामाजिक आंदोलन या प्रदर्शन में शामिल नहीं हुए थे। (3) जलवायु परिवर्तन के खिलाफ उपायों को मजबूत करने के उद्देश्य से स्कूली कक्षाओं का बहिष्कार करने और सड़क कार्रवाई में शामिल होने के युवा लोगों द्वारा कार्रवाई अनिवार्य रूप से निस्वार्थ थी । (4) यह एक बार की घटना नहीं है, बल्कि प्रत्येक शुक्रवार को जारी रहती है, और दुनिया भर में कई बार कोविड –19 महामारी के दौरान भी कार्रवाई की गई है। (5) यह विकासशील देशों सहित पूरी दुनिया में फैल गया है। (6) एसएनएस का उपयोग भागीदारी के आह्वान के लिए एक उपकरण के रूप में किया जाता है। (7) अंत में, यह जलवायु परिवर्तन पर केंद्रित एकल मुद्दा गतिविधि है।

> सांस्कृतिक ढांचा, लामबंदी संरचना और राजनीतिक अवसर संरचना के माध्यम से विश्लेषण

सामाजिक आंदोलनों के विश्लेषण के लिए मेरा फ्रेमवर्क, मैकएडम (1996) के काम पर आधारित सामाजिक आंदोलन का त्रिकोणीय मॉडल (TRIM) है, और इसमें तीन तत्व शामिल हैं: सांस्कृतिक ढांचा, लामबंदी संरचना, और राजनीतिक अवसर संरचना (हसेगावा 2018)। सांस्कृतिक ढांचा सभी प्रतिभागियों द्वारा साझा की गई सामान्य स्थिति को परिभाषित करता है: आंदोलन की विश्व छवि और आत्म–छवि, जो सामाजिक आंदोलन और गतिविधियों को सही ठहराती है, और नागरिकों को भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। सांस्कृतिक ढांचा एक गतिशील और रणनीतिक प्रक्रिया है जो परिवर्तन के प्रति असंतोष और अभिविन्यास की मध्यस्थता करती है। लामबंदी संरचना इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि किन परिस्थितियों में कौन से संसाधन जुटाए जा सकते हैं। सभी प्रकार के संसाधन, उदाहरण के लिए, मानवीय, वित्तीय, भौतिक और सूचनात्मक, के साथ ही वैधता या औचित्य जैसे प्रतीकात्मक संसाधन जुटाए जा सकते हैं। अंत में, राजनीतिक अवसर संरचना, संस्थागत और गैर–संस्थागत राजनीतिक स्थितियां जो सामाजिक आंदोलनों के उद्भव, विकास और गिरावट की सामाजिक प्रक्रियाओं को परिभाषित करती हैं, का संपूर्ण हैं।

यह एक विश्लेषणात्मक ढांचा है जो सामूहिक व्यवहार के परिप्रेक्ष्य, नए सामाजिक आंदोलनों के सिद्धांत और संसाधन जुटाने के परिप्रेक्ष्य को एकीकृत करता है। यह ''सामाजिक आंदोलन और संस्कृति,'' ''सामाजिक आंदोलन और संगठन,'' और ''सामाजिक आंदोलन और राजनीति'' के तीन क्षेत्रों की प्रतिक्रिया है।

फ्राइडेस फॉर फ्यूचर का नाम और ग्रेटा थुनबर्ग का प्रतीकात्मक चिन्ह अत्यंत प्रभावशाली थे। जलवायु परिवर्तन के मुद्दों के आसपास बने आंदोलन में प्रमुख खिलाड़ियों के लिए कई वर्षों तक शक्तिशाली प्रतीक बने रहना मुश्किल माना गया है, भले ही लंबे समय से ध्रुवीय भालू जैसे प्रतीकात्मक चिन्ह हैं। प्रतीकात्मक व्यक्ति पूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति अल गोर, जिन्होंने 2007 में नोबेल शांति पुरस्कार जीता था, तक सीमित हैं; जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को निजीकृत करने के मामले में, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि ग्रेटा थुनबर्ग सुर्खियों में आई । 2019 में, उन्हें जनवरी में विश्व आर्थिक मंच पर, फरवरी में यूरोपीय संघ की संसद और सितंबर में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था; और उसकी उसकी बातों ने बारंबार प्रभावित किया। उसी साल दिसंबर में टाइम मैगजीन ने उन्हें पर्सन ऑफ द ईयर चुना था।

फ्राइडेस फॉर फ्यूचर – उस दिन शुक्रवार वैसे ही था, ग्रेटा के विरोध का एक लक्षित दिन– भी एक अच्छी फ्रेमिंग है। #MeToo आंदोलन की तरह, ये शब्द और वाक्यांश अंग्रेजी बोलने वाले देशों के प्राथमिक विद्यालय के बच्चों द्वारा समझे जा सकते हैं। संदेश सीधा और सकारात्मक है। यह वस्तुतः भविष्योन्मुखी है। इसमें केवल 16 अक्षर हैं, लेकिन यह भविष्य के लिए संकट की भावना व्यक्त करते हुए शुक्रवार को कार्रवाई का आह्वान है। इसे हैशटैग के लिए संक्षिप्त और सुविधाजनक के रूप में उपयोग करना भी आसान है, जैसे कि # FFFSendai फ्राइडेस फॉर फ्यूचर क्योटो या फ्राइडेस फॉर फ्यूचर कोबे के जैसे, हम न केवल एक देश का नाम बल्कि एक स्थानीय स्थान का नाम भी जोड़ सकते हैं। चूँकि इसका स्थानीयकरण करना आसान है, युवा लोगों के लिए इसे अपने क्षेत्र में व्यवस्थित करना आसान है। जापान में, फ्राइडेस फॉर फ्यूचर के कुल 30 से अधिक समूहों ने प्रत्येक क्षेत्र में लगातार विरोध किया है। ''विपरीत,'' ''एंटी–एक्सएक्स,'' और ''एक्सएक्स न करें'' जैसे नकारात्मक, निषिद्ध और आरोप लगाने वाली फ्रेमिंग की तुलना में, इसके प्रतिरोध या प्रतिकर्षण का कारण बनाने की संभावना कम है। यह फ्राइडेस फॉर फ्यूचर क्या है में रुचि भी पैदा कर सकता है।

> >

लामबंदी संरचना के संबंध में, ग्रीनपीस, फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ, और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ (वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर) जैसे सुव्यवस्थित पर्यावरण एनजीओ पार्श्व में चले गए हैं। यह सत्य है कि कुछ स्थापित पर्यावरण गैर सरकारी संगठनों के सदस्य और उनके सचिवालय के पूर्णकालिक कर्मचारी कमोबेश सहायता प्रदान करने के लिए शामिल हो रहे हैं; लेकिन मूल रूप से, यह संगठनात्मक आधार पर निर्भर नहीं करता है। इस फ्रेमिंग की सफलता का यह सबसे अच्छा प्रमाण है कि युवा लोग फ्राइडेस फॉर फ्यूचर के नाम से जलवायु संकट का सामना करते हैं।

युवा लोग एसएनएस का उपयोग संचार और सूचना जुटाने के लिए करते हैं। ग्रेटा के ट्विटर अकाउंट पर 5.05 (जून 2022 के अंत तक) मिलियन फॉलोअर्स हैं। उसके फेसबुक पेज पर भी 3.55 मिलियन फॉलोअर्स हैं। उसके अधिकांश फेसबुक लेखों को 10,000 से अधिक लाइक्स मिले हैं, और कुछ को 100,000 से अधिक लाइक्स मिले हैं। लामबंदी के बारे में सोचते समय ग्रेटा की आउटरीचिंग की अच्छी समझ, समस्या उठाने की क्षमता और सुसंगत रवैया सीखने के लिए बहुत अच्छी चीजें हैं।

2019 के राजनीतिक अवसर का समय ग्रेटा के कार्यों की शानदार प्रतिक्रिया में सहायक था। 2019 वह वर्ष था जब 2020 में पेरिस समझौते को लागू किया जाना शुरू हुआ था, और मीडिया के लिए इसे कवर करना आसान था। अगर कार्रवाई 2012 में हुई होती तो इस बात का संदेह है कि उसे इस तरह की प्रतिक्रिया मिलती।

मई 2019 में, यूके में *गार्जियन* अखबार, जो जलवायु परिवर्तन पर रिपोर्टिंग करने वाले दुनिया के दैनिक समाचार पत्रों में सबसे अधिक उत्साही है, ने कहा कि जलवायु परिवर्तन नाम ने उस समय की वास्तविकता की गंभीरता को पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया। इसके बाद नीति परिवर्तन की घोषणा करते हुए, इसने स्थिति को जलवायु संकट या जलवायु आपातकाल के रूप में वर्णित करना शुरू कर दिया।

ग्रेटा के कार्यों में निरंतरता दिखाई देती है। शुक्रवार, जून 17, 2022 को, स्कूल हड़ताल अपने 200वें सप्ताह में पहुंच गई; 52 सप्ताह/प्रति वर्ष पर, यह लगभग चार वर्षों से चल रही है।

> जापान: अभियान इतने सीमित क्यों हैं

अन्य देशों की तुलना में जापान के फ्राइडेस फॉर फ्यूचर अभियान अत्यंत सीमित हैं। वे जुटाए गए प्रतिभागियों की संख्या के मामले में इतने सीमित क्यों हैं?

जापानी युवा समूह बिना किसी अनुवाद के अंग्रेजी में फ्राइडेस फॉर फ्यूचर नाम का उपयोग करते हैं। यह एक सीधा–सादा मुहावरा है, लेकिन जापानी में इसे व्यक्त करना बहुत मुश्किल होगा और जापानी में अभी तक किसी ने अच्छा समकक्ष वाक्यांश प्रदान नहीं किया है। इसी तरह, ग्रेटा जैसा कोई प्रतीकात्मक अनुप्रतीक नहीं है। आम तौर पर, जापान में, युवा लोग चुप, सनकी, या उदासीन हैं, जबकि सड़क अभियानों में भाग लेने वालों में से कई विदेशी और अंतरराष्ट्रीय स्कूली छात्र होते हैं। एशियाई देशों में भी, जापानी सामाजिक आंदोलनों की राजनीतिक उपलब्धियां कमजोर हैं; दक्षिण कोरिया, ताइवान, हांगकांग, फिलीपींस, आदि की तुलना में, जापान के सामाजिक आंदोलन वित्तपोषण, मानव संसाधन, संगठनात्मक नींव और विशेषज्ञों की भागीदारी के मामले में कमजोर हैं। वे कमजोर हैं क्योंकि सांस्कृतिक ढांचा, संसाधन जुटाना, और सामाजिक आंदोलनों के लिए राजनीतिक अवसर सभी बहुत कमजोर हैं। अंततः, लामबंदी का विस्तार चरम पर होगा, और इस बात की संभावना है कि हम बार–बार कार्य कर रहे हैं के विचार के साथ हम राजनीतिक प्रभावशीलता की कमतर भावना और असहायता की भावना का सामना करेंगे, लेकिन अंत में, हमें हमारी गतिविधियों का कोई परिणाम दिखाई न दे। हर समय एक ही बात को दोहराने वाले व्यवहारों की ऊर्जा को कैसे बनाया रखा जाये और प्रतिभागियों की ताजगी और मीडिया कवरेज के फीका पड़ने के साथ अभ्यास को कैसे बनाया रखा जाये, इससे सम्बंधित मुद्दे हैं।

राजनीतिक अवसर की संरचना के संदर्भ में, युवा समूहों को अभी तक आक्रामक जलवायु नीति को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रभावी राजनीतिक मार्ग खोजने में सफलता नहीं प्राप्त हुई है। सड़क पर विरोध प्रदर्शन का अनुगमन करने वाला कोई विशिष्ट राजनीतिक कार्यक्रम या एजेंडा नहीं है। फ्राइडेस फॉर फ्यूचर अभियान को नई दिशाओं में कैसे आयोजित किया जाना चाहिए; अगला कदम क्या होना चाहिए, और उनके राजनीतिक सहयोगी कौन होने चाहिए; यह सब अभी भी बहुत अस्पष्ट है। सक्रियता के कारण हुई उथल–पुथल किसी भी राष्ट्रीय चुनाव में जीत दिलाने में विफल रही है। कार्यकर्ताओं के लिए उनकी संगठनात्मक पृष्ठभूमि की सीमाओं के कारण राजनीतिक प्रभाव प्राप्त करना अभी भी एक कठिन चुनौती है। जातीय–केंद्रवाद और लोकलुभावनवाद के साथ–साथ जनसंचार माध्यमों में राजनीतिक दबाव के कारण, जापान के नागरिक समाज और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर नागरिक सक्रियता एक चौराहे पर खड़े हैं, और उनकी भविष्य की दिशा अनिश्चित बनी हुई है। यह न केवल जापान के फ्राइडेस फॉर फ्यूचर अभियानों के लिए, बल्कि विदेशी अभियानों के लिए भी एक सामान्य मुद्दा हो सकता है। लेकिन विशेष रूप से जापान में राजनीतिक संस्कृति के तहत, जहां आम जनता की राजनीतिक भागीदारी बढ़ने की संभावना नहीं है, आंदोलन को कैसे बनाए रखा जाए और कैसे आगे बढ़े, इस मुद्दे से निपटना बहुत मुश्किल है। ■

सभी पत्राचार कोइची हसेगावा को <k_hasegawa@shokei.ac.jp> पर प्रेषित करें।

> रूसी–यूक्रेनी युद्ध समाजशास्त्र को कैसे प्रभावित करता है

नतालिया चेर्निश, इवान फ्रेंको ल्विव नेशनल यूनिवर्सिटी, यूक्रेन द्वारा

यूक्रेन के समाजशास्त्रीय संघ की तृतीय कांग्रेस में अपने अभिभाषण में, मैंने वैश्वीकरण के संदर्भ में समाजशास्त्रीय विचार के विकास में चार चरणों की पहचान की। संरचनात्मक रूप से, प्रत्येक चरण में सात घटक होते हैं जिन्हें मैं इसकी बारीकियों को समझने और सामान्य विकास प्रवृत्तियों को निर्धारित करने के लिए हेतु प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण मानती हूँ: एक विशेष समय में समाजशास्त्र की प्रकृति, इसकी परिभाषित विशेषताएं, इसकी मूल अवधारणाएं, इसके केंद्रीय विषय, इसके प्रमुख कार्य, इसकी प्रमुख विशेषता, और अनुभवजन्य अनुसंधान में नियोजित मुख्य विधियां।

> वैश्वीकरण का समाजशास्त्र

प्रथम चरण: वैश्वीकरण से पूर्व समाजशास्त्र (समाजशास्त्र के प्रादुर्भाव से 1985 तक), जब इस क्षेत्र में पहली समाजशास्त्रीय रचनाएँ सामने आईं। समाजशास्त्र को तब समाज का विज्ञान माना जाता था; इसका अमूर्त आदर्श अपनी क्षेत्रीय और राष्ट्र–राज्य सीमाओं के भीतर एक पश्चिमी प्रकार का समाज था। 2000 में, यू. बेक ने इसे ''कंटेनर'' समाजशास्त्र कहा। यह समाजशास्त्रीय सिद्धांत के गठन की अवधि है।

द्वितीय चरण: (1985–2002): शक्तिशाली वैश्वीकरण प्रक्रियाओं की तैनाती के युग का समाजशास्त्र; इस प्रकार, समाजशास्त्र मानवता का विज्ञान बन जाता है, जिसे पश्चिमी मॉडल का अनुसरण करते हुए, पश्चिमीकरण, विशेष रूप से अमेरिकीकरण (और भी विशेष रूप से, मैकडॉनल्डाइजेशन) के रूप में वैश्वीकृत किया जाता है। इसीलिए पी. बर्जर अमेरिकियों को मुख्य वैश्वीकरणकर्ता कहते हैं। इस चरण में, समाजशास्त्रीय सिद्धांत का निर्माण जारी रहता है।

तृतीय चरण (2002–2016): अनेक वैश्वीकरणों के युग का समाजशास्त्र (पूर्वीकरण का उदय, वैकल्पिक वैश्वीकरण, आदि)। अर्थात एक वैश्विक समाजशास्त्र का गठन किया जा रहा है, जो विभिन्न तरीकों से वैश्वीकृत मानवता का विज्ञान बनता जा रहा है। इसमें, स्थानीय अस्तित्व का अधिकार प्राप्त करता है, और जैसा कि एम. बुरावॉय ने 2008 में कहा था विभिन्न राष्ट्रीय स्कूलों के प्रतिनिधियों को ''समृद्ध समाजशास्त्रीय उत्तर'' के प्रतिनिधियों के साथ सामाजिक संवाद में भाग लेने का अवसर मिलता है। तदनुसार, समाजशास्त्रीय अभिनियमों के बाहर समाजशास्त्रीय कार्यों की संख्या में तेजी से विस्तार होता है।

चतुर्थ चरण (2016–वर्तमान): वैश्वीकरण–पश्च के युग का समाजशास्त्र, क्योंकि वैश्वीकरण प्रक्रियाओं में कमी और दुनिया में क्षेत्रीयकरण की केन्द्रापसारक ताकतें मजबूत हो रही हैं। (ध्यान दें कि मैं ''वैश्वीकरण–पश्च'' शब्द का उपयोग डी. बेल के शब्द ''पोस्ट–इंडस्ट्रियल'' के साथ सादृश्य द्वारा करती हूं, जो उस प्रकार के समाज के संबंध में है जो औद्योगिक समाज की जगह लेता है, लेकिन पूर्व–औद्योगिक और औद्योगिक क्षेत्रों को संरक्षित रखता है)। इसलिए, इस अवधि का समाजशास्त्र क्षेत्रीय संरचनाओं के गुणन के साथ तेजी से खंडित मानवता का विज्ञान बनता जाता है। धर्मवैधानिक और गैर–धर्मवैधानिक चरित्र के कार्यों का संग्रह संवादात्मक विशेषताओं और अंत:विषय की गहनता के साथ बनता है।

> वैश्वीकरण का समाजशास्त्र अब कहां खड़ा है?

यह चौथा चरण वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के गायब होने और वैश्वीकरण के समाजशास्त्र के पतन का संकेत नहीं देता है। इसके बजाय, नई सामाजिक–सांस्कृतिक वास्तविकताएं उभर रही हैं और वैश्वीकरण परिदृश्यों के हिस्से में सापेक्ष कमी के साथ, समाजशास्त्रीय ज्ञान का पुनर्गठन हो रहा है। उदाहरण के लिए, कोविड–19 महामारी का उद्भव कई मामलों में वैश्विक जोड़ और संबंधों के पतन, सीमाओं के पुनः प्रकट होने, या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और प्रक्रियाओं की सीमा में कमी का कारण बना है, जो समाजशास्त्रियों के कार्यों की बढ़ती संख्या में परिलक्षित होता है।

वैश्वीकरण पश्च की यह अवधि रूसी–यूक्रेनी युद्ध के दौरान एक नई पहचान लेती है। आज हम एक नई तरह की विश्व व्यवस्था के जन्म को देख रहे हैं, जिसे पश्चिम के पुनर्जन्म के रूप में चित्रित किया जा सकता है (अब तथाकथित ''संयुक्त सामूहिक पश्चिम'' के रूप में) जिसका हृदय यूक्रेन है। कहने का तात्पर्य यह है कि, मेरी राय में, आज वैश्विक और स्थानीय के बीच कोई विरोध नहीं है, और स्थानीय का वैश्विक में कोई परिवर्तन नहीं है। वैश्विक में स्थानीय की अंतर्वृद्धि होती है, जहां स्थानीय वैश्विक का मूल बन जाता है। दूसरे शब्दों में, एक नए प्रकार का वैश्विक–स्थानीय गठन हो रहा है, जिसमें गैर–पश्चिमी दुनिया में सार्वभौमिक मूल्यों की सर्वोच्चता के लिए संघर्ष पाया जाता है; इस मामले में यूक्रेन। नए वैश्विक सामाजिक आंदोलन उभर रहे हैं, सबसे पहले यूक्रेन के साथ एकजुटता व्यक्त करने वाला आंदोलन। उनकी खासियत सरकारों पर उनका अत्यंत शक्तिशाली प्रभाव और निर्णय लेने के लिए समय की कमी है। नए क्षेत्रीय गठबंधन एक विशेष

> >

''आज वैश्विक में स्थानीय की एक अंतर्वृद्धि है, जहां स्थानीय वैश्विक का केंद्र बन जाता है''

भूमिका निभाने लगे हैं, कभी–कभी उन देशों के बीच भी जिनके साथ कोई साझा सीमाएँ नहीं हैं (मेरा मतलब तथाकथित ''छोटे गठबंधन'' जैसे ग्रेट ब्रिटेन–यूक्रेन–पोलैंड या द एसोसिएटेड ट्रायो: यूक्रेन–मोल्दोवा–जॉर्जिया)।

बेशक, इन प्रक्रियाओं के लिए समाजशास्त्रीय चिंतन और विमर्श, विभिन्न राष्ट्रीय स्कूलों के प्रतिनिधियों और आंदोलनों के बीच संवाद की भी आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, रूसी–यूक्रेनी युद्ध पहले ही समाजशास्त्रीय अर्थ प्राप्त कर रहा है। मैं आई.एस.ए के अध्यक्ष साड़ी हनाफी के एक पत्र का जिक्र कर रही हूं, जिसमें पुतिन के शाही प्रतिमान का वर्णन किया गया है और मध्य पूर्व के लिए इस युद्ध से चार सबक पर प्रकाश डाला गया है। सामान्य तौर पर, मैं उस पत्र में कई सिद्धांतों से सहमत हूं, लेकिन साथ ही मैं मध्य पूर्व में युद्धों की तुलना यूक्रेन में वर्तमान युद्ध, जहां यूक्रेनी लोगों का नरसंहार हो रहा है, के साथ सीधे तुलना करने को सही नहीं मानती। प्रत्येक युद्ध भयावह है, परन्तु यूक्रेन के खिलाफ रूस की आक्रामकता न केवल यूक्रेन के लिए बल्कि दुनिया के कई अन्य देशों के लिए खतरा है, यदि हम साम्राज्यवादी प्रतिमान पर आधारित शासन को नष्ट करने के लिए एकजुट हो कर काम नहीं करेंगे।

> समाजशास्त्र कहाँ जा रहा है

अब, हम यहां बताए गए चरणों के सार के अनुसार वर्तमान समाजशास्त्र की प्रवृत्तियों को स्थापित कर सकते हैं। एक अस्थायी सूची में निम्नलिखित 10 धारणाएं शामिल हो सकती हैं:

(1) विषयगत रूचि के विहित क्षेत्रों के पारगमन के साथ साथ कृत्रिम यथार्थ (आभासी यथार्थ, संवर्धित यथार्थ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता) से सम्बंधित प्रघटनाओं का समाजशास्त्रीय विमर्श में प्रवेश के फलस्वरूप समाजशास्त्र की सीमाओं, इसकी विषय वस्तु और अध्ययन की वस्तु का तीव्र विस्तार;

(2) एक संकर प्रकृति की बहु–आयामी और बहु–कार्यात्मक समाजशास्त्रीय चिंतन का विकास और पोषण, जो संभावनाओं के एक समूह के साथ वैश्विक, क्षेत्रीय या स्थानीय अनुपात की परिष्कृत स्व–विनियमन प्रणालियों की अवधारणाओं और मॉडलों के निर्माण के कार्य में निहित है ताकि सामाजिक व्यवहार में उनके कार्यान्वयन हो सके;

(3) अंतः वैषियकता से ट्रांसडिसिप्लिनारिटी में बदलाव और ट्रांसडिसिप्लिनरी सामजस्यता और समग्र सोच के आधार पर एक उपयुक्त प्रकार के मेटाथेराइजिंग की उपस्थिति;

(4) क्षेत्रीय विकास परियोजनाओं के साथ–साथ स्थानीय, स्थानीय–वैश्विक, वैश्विक, गैर–वैश्विक और उत्तर–वैश्विक प्रक्रियाओं और घटनाओं के सह–अस्तित्व के मुद्दों के महत्व और महत्व में वृद्धि;

(5) शब्दावली का एक महत्वपूर्ण परिष्कार जो सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों के साथ–साथ प्रौद्योगिकी और मानविकी से उपजे संकर शब्दों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ उत्तर–शास्त्रीय और उत्तर–गैर–शास्त्रीय समाजशास्त्र की धारणाओं के संश्लेषण में परिलक्षित होता है;

(6) अधिकांशतः स्थैतिक से मुख्यतः गतिशील और यहाँ तक कि प्रतिक्रियात्मक सामाजिक परिवर्तन की तरफ समाजशास्त्रियों का ध्यान स्थानांतरण;

(7) सामाजिक तनाव में सन्निहित असमानता के नए रूपों के साथ–साथ विरोधी हितों और मूल्यों के आसपास नए प्रकार के संघर्षों पर विशेष ध्यान देने के साथ जटिल (मुख्य रूप से गैर–भौतिक) सामाजिक असमानता के अध्ययन का बढ़ता महत्व;

(8) आधुनिक समाजशास्त्र के सैद्धांतिक और संज्ञानात्मक कार्यों के बढ़ते महत्व के तहत हाइपरर्जिया (या हाइपरडायनेमिज्म) और प्रतिक्रियाशील सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ नई प्रौद्योगिकियों और वर्तमान के निरंतर परिचय में आने वाले संकर युद्ध द्वारा लाए गए बढ़ते अमानवीयकरण के कारण मानवतावादी कार्य में वृद्धिद्ध

(9) नव संश्लेषित और संशोधित मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धतियों के उपयोग के साथ–साथ अन्य विषयों से विधियों को अपनाने के माध्यम से समाजशास्त्रीय विद्वता में उपयोग की जाने वाली विधियों और तकनीकों का विविधीकरण। उनका संयुक्त प्रभाव समाजशास्त्रियों को तेजी से और वैध सामाजिक परिणाम प्राप्त करने में सक्षम बनाता है;

(10) समाजशास्त्रीय विद्वता के मौखिक और गैर–मौखिक तरीकों से डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग आदि में परिवर्तन। ■

सभी पत्राचार नतालिया चेर्निश को ढ<nchernysh@gmail.com> पर प्रेषित करें।

नतालिया चेर्नीश (अक्टूबर 2017), "सोशियोलॉजी टुडे – ट्रेंड्स एंड पर्सपेक्टिव्स फॉर डेवलपमेंट" http://stmm.in.ua/archive/ukr/2017-4/4.pdf (रशियन भाषा में)

> सामूहिक और व्यक्तिगत आघात

यूरी पचकोवस्की, इवान फ्रेंको नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ल्विव, यूक्रेन द्वारा

श्रेयः नास्ताफली / डिपॉजिट फोटोज।

हाल में जारी रूसी–यूक्रेनी युद्ध पूरी सभ्य दुनिया के लिए एक चुनौती है। यूक्रेन के संदर्भ में आज हम राज्यों के अंतर्राष्ट्रीय सह–अस्तित्व के सभी सिद्धांतों के ध्वंस पतन का अवलोकन कर सकते हैं, और यह की कैसे मानव नियति, स्वैच्छिकता और एक देश की शाही महत्वाकांक्षाओं पर निर्भर है, या वास्तव में एक व्यक्ति, राज्य के मुखिया पर, जो पूरी दुनिया को अपनी मिथ्यावादी विचारधारा थोपना चाहता है। युद्ध की भयावहता जो यूक्रेन का प्रत्येक नागरिक आज अनुभव कर रहा है, विश्व समुदाय के लगभग सभी क्षेत्रों को भी प्रभावित करता है, जो अपनी सुरक्षा के लिए वैश्विक चुनौतियों, विशेष रूप से रूस के परमाणु खतरों के साथ–साथ नवीनतम प्रवासन चुनौतियों, वैश्विक भूख, ऊर्जा और पर्यावरण संकट का सामना कर रहे है। ये उस त्रासदी और वास्तव में नरसंहार, जिससे सभी यूक्रेनी लोग गुजर रहे हैं, की तुलना में छोटे प्रतीत हो सकते हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, युद्ध के पहले 115 दिनों के दौरान, रूस ने 2021 में सीरिया की तुलना में या 1992–1995 की अवधि में बोस्निया की तुलना में यूक्रेन में अधिक बच्चों को मार डाला।

युद्ध की समस्याओं और उसके परिणामों पर विचार करते हुए, एक समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक के रूप में, मैं कई तुलनाओं और उपमाओं के बारे में सोचता हूं जो सामाजिक आघात की अवधारणा के साथ अच्छी तरह से फिट होती हैं (पी. स्ज्टोम्का, जे.सी. अलेक्जेंडर, आर. आइरमैन, आदि): एक वैश्विक चुनौती के रूप में युद्ध; युद्ध जो मानव नियति में व्याप्त है; मानव अस्तित्व की एक नई दृष्टि और मूल्यों को बनाने और स्थापित करने के तरीके के रूप में युद्धय चिंताओं और जीवन के अनुभव के रूप में युद्ध; मानव गतिविधि और आत्म–शक्ति के लिए एक स्थान के रूप में युद्ध; व्यक्तिगत भविष्य और पीढ़ियों के भाग्य के लिए संघर्ष के रूप में युद्ध, नरसंहार के रूप में युद्ध; समेकन और एकजुटता आदि के मार्ग के रूप में युद्ध। यह सब जारी है। यद्यपि, युद्ध के साथ इन सभी संबंधों को जो जोड़ता है वह यह है कि हमें अधिकांशतः प्रत्येक व्यक्ति के साथ साथ समाज को प्रभावित करने वाले किसी दर्दनाक घटना पर काबू पाने के तरीकों की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति जो युद्ध का अनुभव करता है, या उसके क्रूसिबल में ढाला जाता है, उसकी अपनी व्यक्तिगत और अनूठी जीवन कहानी होती है। उनके समामेलन में, ये जीवन कथाएँ उस देश से ''अंर्नितर्मित'' हैं या जुड़ी हुई हैं जहाँ हम पैदा हुए, जहाँ हम रहते हैं और काम करते हैं, और जिसका इतिहास हम बनाते हैं।

यूक्रेन का इतिहास एक घायल पक्षी की उड़ान की तरह है, जो प्रकाश में, अंधेरे और अनिश्चितता से ऊपर और ऊपर उठने के लिए संघर्षरत है। अपनी प्रगति के दौरान, यूक्रेन ने महान ऐतिहासिक आघात सहे हैं (उदाहरण के लिए, बीसवीं शताब्दी की शुरुआत की घटनाएँ जैसे, बोल्शेविक रूस से स्वतंत्रता के लिए यूक्रेन का संघर्ष, 1930 के दशक का होलोडोमोर, 1941–1945 का विनाशकारी जर्मन–सोवियत युद्ध, 1986 में चेरनोबिल और अब रूसी–यूक्रेनी युद्ध, जो 2014 के बाद से चल रहा है और जिसके कारण रूस द्वारा क्रीमिया और डोनेट्स्क और लुहान्स्क क्षेत्रों के कुछ हिस्सों का राज्य अधिग्रहण, ध्यान देने योग्य घटनाएं है) साथ ही साथ बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में सामाजिक–सांस्कृतिक आघात हुआ, जो सामाजिक परिवर्तन की लंबी अवधि से उपजा और 2004 की ऑरेंज क्रांति के दौरान लोकतंत्र की लड़ाई में मूल्यों की पुरानी व्यवस्था के टूटन और 2013–14 में गरिमा की क्रांति के दौरान यूरोपीय परिप्रेक्ष्य के लिए बैरिकेड्स पर संघर्ष का परिणाम था। यूक्रेन के लोगों की सामाजिक स्मृति में संघर्ष और पीड़ा का लंबा ऐतिहासिक मार्ग उकेरा गया है; गहरे भावनात्मक अनुभवों ने सामाजिक समूहों और व्यक्तियों के स्तर पर मानसिक आघात को जन्म दिया है। यूक्रेन के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, आज पूर्ण पैमाने पर युद्ध के कारण लगभग 15 मिलियन यूक्रेनियन को मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता होगी, और 3–4 मिलियन को मानसिक विकारों के लिए चिकित्सा उपचार की आवश्यकता होगी। युद्ध के परिणामस्वरूप पांच में से कम से कम एक यूक्रेनियन को नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम भुगतने होंगे, युद्ध जारी रहने पर हर दिन मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का अनुभव करने वाले लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

यूक्रेनी लोगों के अनुभव को देखते हुए, वर्तमान युद्ध ने यथार्थ की एक नई धारणा उत्पन्न की है; औसत यूक्रेनी के स्तर पर ''रूसी–यूक्रेनी भाईचारे'' के सभी पूर्व–मौजूदा मिथकों का –ग्रेट पेट्रियोटिक वॉर के द्वारा किसी भी समान मार्ग और युद्ध पश्च वर्षों में अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में साथ टूट गया है। गहन देशभक्तिपूर्ण युद्ध के माध्यम से किसी भी सामान्य मार्ग और युद्ध के बाद के वर्षों में अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए एक विराम हो गया है। यह समझ कि हम अलग हैं, उन यूक्रेनियनों के लिए भी स्पष्ट हो गयी है जो साझी स्लाव जड़ों को नष्ट करने के विचार पर विचार नहीं करना चाहते थे। इस तरह की पहचान का विशेष रूप

> >

से युद्ध की धारणा के माध्यम से पता लगाया जा सकता है, जो हम यूक्रेनियनों के लिए, वास्तव में हमारी स्वतंत्रता, गरिमा और अस्तित्व के लिए एक युद्ध है (रूसियों के लिए, यह युद्ध नहीं है, बल्कि एक तथाकथित विशेष ऑपरेशन है जिसका उद्देश्यः उनके हत्यारे नेताओं की वीरतापूर्ण छवि स्थापित करना और हर यूक्रेनी चीज से नफरत फैलाना है)। हम यूक्रेनियनों के लिए, यह युद्ध एक गहरी दर्दनाक घटना है, लेकिन उनके लिए यह भावनात्मक उत्साह और जन चेतना में Z और V के प्रतीकों की जीत का अवसर है। यह नया जीवन सभी यूक्रेनियनों से एक महान प्रयास, संघर्ष और समेकन की मांग करता है, जैसा कि यह पूरे लोकतांत्रिक दुनिया और विशेष रूप से बिना किसी अपवाद के सभी यूरोपीय लोगों से मांगता है ।

युद्ध की विशेष त्रासदी अप्रत्याशित की प्रत्याशा थी। हम देश के पूर्व में सैन्य परिस्थितियां, जो पिछले आठ वर्षों से चल रही थी और वह (गलत) समझ जो देश के ऊपर, प्रत्येक हम पर लटकी थी, के अंतर्गत रह रहे थे। 24 फरवरी, 2022 हमारे लिए एक नई कहानी की उलटी गिनती का प्रतिनिधित्व करता है, जब हम सभी वयस्कों ने खुद से एक निर्णायक प्रश्न पूछाः ''क्या मैं यूएसएसआर में वापस जाना चाहता हूं?'' या, वैकल्पिक रूप सेः ''क्या मैं ऐसे देश में रहना चाहता हूं जहां मानवाधिकार, स्वतंत्रता और लोकतंत्र का सम्मान है?" इस नई उलटी गिनती की शुरुआत, वास्तव में, एक बहुत बड़ा झटका (एक दर्दनाक घटना से जुड़ी भावनात्मक स्थिति) है, जब हमारे देश के 1000 किलोमीटर की साझा सीमाओं पर बड़े पैमाने पर रूसी आक्रमण के बाद पहले 5–7 दिनों में देश के भाग्य का फैसला किया गया था। मैंने इवान फ्रेंको नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लविव के समाजशास्त्र विभाग के छात्रों से पिछले तीन महीनों, जब से यह शुरू हुआ, में युद्ध के बारे में उनकी समझ का वर्णन (पुनर्निर्माण) करने के लिए कहा। उनके जीवन में सबसे शक्तिशाली भावनात्मक प्रभाव पहले दिन (दिनों) से संबंधित थेः

''मेरे लिए, युद्ध की शुरुआत की सुबह ऐसी थी जैसे किसी प्रियजन की मृत्यु हो गई हो और मैं अंतिम संस्कार में जा रहा था। सब डरे हुए थे। पहले कुछ दिनों में, मैं बाहर जाने से डरता था, हर समय बिस्तर पर लेटा समाचार देखता रहता था। युद्ध के तीसरे दिन, मैं पहली बार घर से निकला और एक दोस्त के साथ रोटी लाने के लिए निकला; दुकानों में लंबी कतारें थीं और वे अलमारियां जहां आवश्यक सामान होना चाहिए था, लगभग खाली थीं। मैं असहज और डरा हुआ था।'' (वीरा, 19 वर्ष)

''युद्ध की घोषणा के बाद पहली रात मेरे लिए लंबी थी, घर से गुजरने वाली हर कार हेलीकॉप्टर या रॉकेट की तरह थी; इस वजह से और लगातार तनाव के कारण मैं सो नहीं सका... "(दिमित्रो, 21 वर्ष)

''पहली रात लगभग सबसे खराब थी। अविश्वसनीय तनाव के कारण, अनिद्रा शुरू हो गई, मैं हर समय समाचार देख रही थी, मुझे नहीं पता था कि क्या करना है, मैं दहशत में थी । सुबह करीब तीन बजे तीन फाइटर जेट ने घर के ऊपर से उड़ान भरी। यह इतनी तेज, भारी और टिकाऊ आवाज थी कि जैसे–जैसे वे उड़े, वह अनंत काल की तरह लग रहा था। तब से, मेरी दहशत दोगुनी हो गई है। कुछ दिनों तक सामान्य नींद और पोषण के बिना, भय और घबराहट के कारण थकावट हो गई है। चूंकि मैं अध्ययन नहीं कर सकती थी, मुझे एहसास हुआ कि इस तरह मैं किसी की मदद नहीं कर पाउंगी, और मैंने यह देखना शुरू किया कि मैं कहां उपयोगी हो सकती हूँ।" (अनास्तासिया, 20 वर्ष)

''मैं हर बार रोती हूं जब मुझे लगता है कि मुझे किसी के साथ संबंध तोड़ने की जरूरत है या कि मैं किसी को खो सकती हूं ...मेरा मानना है कि यह एक फिल्म की तरह डरावना नहीं है, हमें इससे गुजरना होगा। तमाम परेशानियों और झगड़ों के बावजूद मैं अपने परिवार और अपने रिश्तेदारों से बहुत प्यार करती हूं। मैं चाहती हूं कि हम सभी स्वस्थ और जीवित रहें और एक साथ रहें। सब ठीक हो जाए। मैं जीना चाहती हूं। "(केसेनिया, 18 वर्ष)

"लविवि में 7.44 बजे, पहली बार हवाई हमले का अलार्म सुना गया। मैं बिस्तर से कूद गयी और पड़ोसियों के पास दालान में भाग के आयी। मेरे चेहरे पर एक घबराहट भरी मुस्कान जम गई, और मेरे शरीर में एक कंपकंपी छा गई...'' (मार्था, 18 वर्ष)

यह माना जाता है कि किसी चोट को दूर करने में उतना समय लगता है जितना व्यक्ति उस दर्दनाक घटना के प्रभाव में था जिसके कारण उसे मजबूत भावनात्मक अनुभव हुआ। व्यक्ति पर घटना के प्रभाव की ताकत और तनाव के प्रति उनके प्रतिरोध के आधार पर ''पर काबू पाने'' की इस प्रक्रिया में महीनों, वर्षों या दशकों लग सकते हैं। समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से, मेरी राय में, आज ''गवाह आघात'', ''मानव पीड़ा'', ''जीवन के एक नए अर्थ की खोज'', ''सैन्य चिंता सिंड्रोम'', ''दर्दनाक घटनाओं पर संयुक्त काबू'',आदि के संदर्भ में एक तीव्र सैन्य तनाव के रूप में युद्ध के सामूहिक आघात का अध्ययन पहले से कहीं अधिक सामयिक है। यूक्रेनी समाज का वर्तमान मामला उच्च स्तर के आत्म–संगठन को दर्शाता है। यह उदाहरण सामूहिक आघात की रोकथाम के लिए और अधिक व्यापक रूप से एक प्रेरणा हो सकता है, जिसके परिणामों का गहरा मनो–चिकित्सीय महत्व है, अर्थात् इसके – विरोधाभासी रूप से – समग्र रूप से समाज पर रचनात्मक प्रभाव हो सकता है। यूक्रेन के लिए, सामूहिक आघात के रूप में युद्ध पर काबू पाने का अर्थ हैः

(1) सोवियत अतीत के साथ और रूसी शाही अतिक्रमण और ''रूसी दुनिया'' से जो कुछ जुड़ा है उससे अंतिम विलगाव,

(2) सुरक्षा और शांति और भूमि पट्टे की अंतरराष्ट्रीय गारंटी के प्रावधान के साथ संयोजन में अपनी क्षेत्रीय अखंडता को बहाल करने का अवसर,

(3) नागरिक समाज का निर्माण, और सबसे पहले, स्वयंसेवी आंदोलन की क्षमता के निर्माण, जो व्यापक हो गई है और राज्य के लिए संघर्ष के लिए महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षाओं में से एक बन गई है,

(4) यूरोपीय संघ की सदस्यता के लिए एक उम्मीदवार देश के रूप में यूक्रेन के लिए एक नया यूरोपीय परिप्रेक्ष्य खोलना,

(5) पश्चिमी निवेश और व्यापक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों की भागीदारी के साथ देश के पुनर्निर्माण की एक युद्ध पश्च संभावना के रूप में अभिनव प्रगति के उन क्षेत्रों का समर्थन करना जो विशेष रूप से शत्रुता से प्रभावित हुए हैं,

(6) आधुनिक दुनिया में लोकतांत्रिक (सभ्य) मूल्यों, उनकी अनुलंघीयता को बनाए रखना,

(7) युद्ध से उत्पन्न वैश्विक खतरों की एक सामान्य समझ से एकजुट देशों के बीच एकता का एक नया पैटर्न बनाना,

(8) अपनी स्वतंत्रता की रक्षा में यूक्रेनी लोगों की दृढ़ता के बारे में जागरूक होना और यह एहसास होना कि यूक्रेन पहले ही रूसी हमलावर को अपने प्रेरक प्रतिरोध से हरा चुका है।

बेशक, एक दर्दनाक स्थिति पर काबू पाने के लिए न केवल पूरे यूक्रेनी समाज की समन्वित कार्रवाई की पूर्व –आवश्यकता है, बल्कि युद्ध से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं की समझ भी आवश्यक है। मेरी राय में, एकजुट करने वाला कारक जो इस दर्दनाक स्थिति से व्यक्ति और सामूहिकता के लिए रास्ता निकाल सकता है, वह है जीत में हर किसी का गहरा विश्वास।

लविव, 25 जून, 2022 ■

सभी पत्राचार यूरी पचकोवस्की को <ypachkovskyy@gmail.com> पर प्रेषित करें।

1. (उक्रेनिनाई भाषा में) https://molodost.in.ua/news/7002/ (जून 19, 2022).

2. (उक्रेनिनाई भाषा में) https://poglyad.tv/u-moz-vvazhayut-shcho-cherez-viynu-kozhen-p-yatiy-ukrayinec-matime-problemi-z-psihikoyu-article (जून 19, 2022).

> यूक्रेन में युद्ध ने, हम जो सोचते थे कि जानते हैं, को बदल दिया

डेरी क्रिस्टिया, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया द्वारा

मैंने अन्य अवसरों पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सुरक्षा अध्ययनों के समाजशास्त्र में पद्धतिशास्त्र की कमी, पत्रकारिता के साथ बहुत करीबी और शायद घातक संबंधों के बारे में लिखा है। सामाजिक वैज्ञानिक एक भविष्यकथन प्रकार्य के प्रति जुनूनी हैं: संभवतः कार्य–कारण के सिद्धांत में प्रवेश करन ` की अपनी क्षमता को साबित करने के लिए, वे संकटों, प्रवृत्तियों और चुनाव परिणामों की भविष्यवाणी करना चाहते हैं। और हर बार उन पर गलत होने का आरोप लगाया जाता है: 2020 से पहले समाजशास्त्र ने एक संभावित महामारी पर ध्यान नहीं दिया थाय यूक्रेन में युद्ध के संकेतों को गलत तरीके से पढ़ा गया थाय हर चुनावी चक्र में मतदान उतने सटीक नहीं होते जितने प्रेस और जनता चाहते हैं ।

> आश्चर्य से भरे दो वर्ष

पिछले ढाई साल आश्चर्यों से भरे रहे हैं। अन्य किसी भी तरह के पहले देखे गए फ्लू के आश्चर्य के बाद (कोविड–19 महामारी), एक युद्ध का आश्चर्य आया जो आश्चर्यजनक रूप से पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध में देखे गए युद्ध के समान है। युद्ध के कारण यूक्रेन में जो त्रासदी हुई है, वह बहुत बड़ी है और इस पर बहुत चर्चा भी हुई है। लेकिन पश्चिमी दुनिया में युद्ध का झटका शरणार्थियों की छवियों से लेकर बमबारी, टैंकों और नष्ट हुए शहरों की छवियों तक, यह भी ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है। एक वास्तविक आउटसोर्सिंग अभ्यास के समान, लोगों ने लगभग तीन दशकों से विश्वास किया था कि इन मुद्दों को समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, रणनीतिक और सुरक्षा अध्ययन, सैन्य विज्ञान और कूटनीति द्वारा निपटाया जा सकता है। पश्चिमी समाज ने किसी तरह खुद को इस तरह की चिंताओं से दूर देखाः क्या ऐसे लोग नहीं थे जिन्होंने इन समस्याओं का अध्ययन किया और ऐसी चीजों को फिर से होने से रोकने के लिए काम किया? तो समाजशास्त्रियों के रूप में हमने यूक्रेन में जो कुछ हो रहा है, उससे क्या सीखा है?

> रोमानिया और नाटो की प्रासंगिकता से एक परिदृश्य

नाटो और यूरोपीय संघ में रोमानिया के प्रवेश के बाद से, रोमानियाई लगातार यूरोपीय संघ में सबसे अधिक नाटो समर्थक, यूरोपीय संघ समर्थक और अमेरिकी समर्थक लोगों में से रहे हैं, और इसकी पुष्टि यूक्रेन पर रूस के हमले से हुई। वास्तव में, हाल के वर्षों में नाटो की मुख्य वैश्विक आलोचना यह रही है कि अपेक्षाकृत स्थिर सुरक्षा वातावरण में, जहां खतरों का प्रतिनिधित्व अब राज्यों द्वारा नहीं किया जाता है, बल्कि गैर–राज्य कर्त्ताओं (जैसे, आतंकवाद), या अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के साथ ''झगड़े'' करने वाले राज्यों में अलग–अलग मामलों के साथ असममित संघर्षों द्वारा किया जाता है, ऐसी स्थिति में नाटो जैसी एक भीमाकार संस्था बेकार हो जाती है। यूक्रेन पर रूस द्वारा हमले, यद्यपि इसे रूस में औपचारिक रूप से युद्ध के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है, ने सदस्य राज्यों के लिए सुरक्षा के गारंटर के रूप में नाटो की प्रासंगिकता को पुनः स्थापित किया है और गुटनिरपेक्षता के विचार से समझौता किया है (फिनलैंड और स्वीडन पर विचार करें)।

> व्यवस्था के खिलाफ पार्टियां

हाल के वर्षों में, यूरोप ने कमोबेश सफल व्यवस्था–विरोधी पार्टियों का उदय देखा गया है, जिनमें से कई में कुछ लोकलुभावन, संप्रभु, या यूरोसेप्टिक आयाम हैं। महामारी और यूरोपीय राज्यों द्वारा इसे नियंत्रण में रखने के प्रयासों ने इन आंदोलनों के लिए एक मंच प्रदान किया है, जिनमें से अधिकांश टीका–विरोधी और प्रतिबंध–विरोधी हैं या महामारी के अस्तित्व को नकारते हैं। रोमानिया में, यूक्रेन पर रूसी आक्रमण ने इस तरह के व्यवस्था विरोधी आंदोलनों की अपील को घटा दिया और नाटो और यूरोपीय संघ की लोकप्रियता में वृद्धि की है ।

रूस, या रूसी प्रचार के विषयों के लिए व्यवस्था विरोधी आंदोलनों की निकटता के बारे में बहुत अटकलें लगाई गई हैं –हालांकि यह बेहद जटिल है और इसे साबित करना मुश्किल है। पिछले तीन महीनों में, हमने देखा है कि युद्ध के लिए इन आंदोलनों का संबंध असामान्य है: युद्ध के मुद्दे को सार्वजनिक रूप से संबोधित नहीं करने से लेकर यह कहने के लिए कि यूक्रेन बहुत लोकतांत्रिक नहीं है (जैसे कि शायद यह इस तथ्य को बदल देगा कि रूस इस युद्ध में स्पष्ट हमलावर है); युद्ध के पीड़ितों के साथ समानुभूति में कटौती से लेकर यूक्रेन में रोमानियाई अल्पसंख्यकों के लिए चिंता का विषय पैदा करने, व हमलावर की पहचान को सापेक्ष बनाने तक। तो इस प्रकार यूक्रेन में युद्ध, व्यवस्था विरोधी दलों और पुतिन के रूस के लिए उनकी अभी भी अबोध्य कमजोरी के लिए एक वास्तविक लिटमस टेस्ट है।

> यथार्थवाद अपना बदला लेता है

1990 के बाद, अंतरराष्ट्रीय संबंधों का समाजशास्त्र एक प्रकार के इतिहास– समाप्ति प्रतिमान में रह रहा थाः बड़े युद्ध समाप्त हो गए थे, यहां तक कि शीत युद्ध भी; उदारवाद ने यथार्थवाद पर विजय प्राप्त कर ली थी। एक तरफे युद्ध थे जिनकी स्थानीय या क्षेत्रीय मुद्दों द्वारा व्याख्या की जाती है लेकिन एकमात्र महाशक्ति प्रतिमान, संयुक्त राज्य अमेरिका को औसत शक्तियों की श्रंखला द्वारा चुनौती देने में विफलता से दुनिया एक–धुरुवीय हो गयी है। 11 सितंबर 2001 के बाद, ऐसा लगता है कि स्क्रिप्ट को पुनः लिखा गया था, लेकिन केवल सतही तौर पर। एक नया शत्रु (आतंकवाद) सामने आया,

>>

''सामाजिक विज्ञानों का बहुप्रतिमानात्मक चरित्र एक असाधारण गुण साबित हो सकता है यदि हम इसका उपयोग कैसे करना है, जब दुनिया को समझना हमारी परिकल्पना को मान्य करने से अधिक महत्वपूर्ण है, जानते हैं।''

राज्य के कर्त्ताओं द्वारा कायम रखी गयीं बुराई की धुरी; और विश्व व्यवस्था को चुनौती देना, सशस्त्र संघर्ष, आदि अब युद्ध नहीं बल्कि अपराध के कार्य बन गए। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था जैसा 1990 के बाद कल्पना की गयी, अब उतनी शांतिपूर्ण नहीं थी (हालांकि एकतरफा युद्धों द्वारा कई बार इसका खंडन किया गया था)। एक विषम और अपरंपरागत दुश्मन सामने आया था, लेकिन सैन्य रूप से कहे तो, दुनिया बहुत खतरे में नहीं थी, पश्चिम में सामान्यीकृत युद्ध का डर नगण्य था, और संयुक्त राज्य अमेरिका/नाटो अभी भी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की केंद्रीय महाशक्ति थे। व्यवस्था अभी भी उदार थी। अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज. डबलू. बुश ने कहा कि रोमानिया नए रूस का सेतु बनेगा। पश्चिमी दुनिया की सैन्य और आर्थिक शक्ति के पीछे सॉफ्ट–पॉवर फैक्टर था। पश्चिम का विस्तार हो रहा था क्योंकि उसके दरवाजे पर उम्मीदवार देश दस्तक दे रहे थे।

लेकिन यथार्थवाद अपना असर दिखाने वाला था। 2010 के बाद, चीन को एक आर्थिक शक्ति के रूप में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। लगभग उसी समय, न तो रूस और न ही चीन पिछले बीस वर्षों की विश्व व्यवस्था के लिए प्रति ''सहमत'' होने के लिए तैयार थे। यदि हम रूस को करीब से देखें, तो हम 2008 में जॉर्जिया पर उसके आक्रमण को देखते हैं; 2010 के प्रारंभ में, यूक्रेन और मोल्दोवा द्वारा संभावित यूरो–अटलांटिक बदलाव को रोकने के लिए रूस द्वारा कुछ प्रमुख प्रयास; 2014 में, रूस के समर्थन से डोनबास विद्रोह, उसके बाद रूस का क्रीमिया पर कब्जा। पश्चिम में, लोगों ने यूरोप में अब युद्ध की संभावना नहीं देखी, इसलिए ये घटनाएँ अपेक्षाकृत आसानी से बीत गईं। रूस अब 2010 से पहले वाला देश नहीं था, इसे एक संभावित हमलावर के रूप में देखा जाने लगा था, लेकिन विश्व व्यवस्था बनाए रखना प्रबल बिंदु था।

फरवरी 2022 में, यूक्रेन पर रूसी आक्रमण आक्रामकता के एक स्पष्ट कार्य के रूप में सामने आया जो आम जनता के लिए समझ से बाहर है। यह विचार कि यूक्रेन का पश्चिम की ओर उन्मुखीकरण रूस को नाटो और यूरोपीय संघ के प्रति सुभेद्य बनाता है, नैतिक रूप से यह समझना मुश्किल है: 2014 ने रूस और यूक्रेन के बीच एक निश्चित दरार को चिह्नित किया था। युद्ध के लिए रूसी जनता का समर्थन दिमाग चकराने वाला है। लेकिन एक विशेषज्ञ, यथार्थवादी प्रतिमान को अपनाने और उदारवाद की अस्वीकृति को पहचान सकता है, जो लगभग 100 वर्षों की सैद्धांतिक प्रतिस्पर्धा के बाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर अंतर–प्रतिमान बहस जीत गया था।

इसके अलावा, अपनी मिसाइलों, टैंकों, हेलमेटों और मशीनगनों के साथ युद्ध, –जैसा कि 50 साल पहले के युद्धों के बारे में वृत्तचित्रों और फिल्मों में था, ने यह स्पष्ट कर दिया कि युद्ध गायब नहीं हुआ है। वे परमाणु हथियार, जिनके बारे में अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत ने 1990 के बाद से शायद ही कभी बात की थी, भी गायब नहीं हुए हैं। घटना के पीछे का सिद्धांत भी नया नहीं है। ऐसा लगता है कि दशकों के अंतर्राष्ट्रीय संबंध और सुरक्षा अध्ययन बर्बाद हो गए हैं, जैसे कि हम कोरियाई युद्ध और क्यूबा मिसाइल संकट की ओर लौट रहे हों।

संक्षेप में, हम एक क्लासिक पूर्णरूपेण सुरक्षा दुविधा में हैं। नाटो यूक्रेन में सीधे तौर पर शामिल नहीं है, लेकिन हाई अलर्ट पर है। रूस कहां रुकेगा ? 1990 के बाद से पूर्वी यूरोप में युद्ध का डर अपने उच्चतम स्तर पर है। आधुनिक युद्ध पिछलो से अलग नहीं है: यह किफायती नहीं है, यह ऑनलाइन नहीं है, यह सभ्य नहीं है, यह नागरिकों के लिए सुरक्षित नहीं है। आधुनिक युद्ध जितना क्लासिक हो सकता है, उतना है बल्कि अधिक विनाशकारी है। राजनेता, सेना, विश्लेषक और आम जनता सभी दो दशकों से भ्रामक आराम की स्थिति में जी रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि झूठे समाचार और रूसी प्रचार पर वर्षों से चर्चा की गई है, खासकर 2014 के बाद, लेकिन अधिकांश ने इसके लिए ''साइबर युद्ध'' शब्द का इस्तेमाल किया है, जैसे शायद इसने वास्तविक युद्ध की जगह ले ली हो। अब हम यह देख रहे हैं कि नकली समाचार वही कर रहा है जो हमेशा से प्रचार करता आया है: इसने एक वास्तविक युद्ध के लिए जमीन तैयार की है और अब इसे प्रबंधित करने में मदद कर रहा है।

> मोल्दोवा के बारे में न भूलें

यदि हम यूक्रेन में युद्ध को रोमानियाई दृष्टिकोण से देखें, तो हमें मोल्दोवा का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। मोल्दोवा गणराज्य और संबंधित पहचान संबंधों के संबंध में रोमानिया की संवेदनशीलता ज्ञात है। जब 1990 का पासा लुढ़का, तो मोल्दोवा फिर से ''दीवार'' के दूसरी तरफ बना रहा, जबकि रोमानिया के पास केवल एक सुसंगत राजनीतिक परियोजना थी: यूरो–अटलांटिक एकीकरण। और ऐसा लगता है कि परियोजना ने काम किया। वर्तमान आशंकाओं में से एक ट्रांसनिस्ट्रिया और मोल्दोवा गणराज्य (अब तक अनसुना) में संघर्ष के संभावित विस्तार से संबंधित है। यह धारणा कि तटस्थता कुछ काम की है, के द्वारा एक तरफ पकडे गए देश के रूप में मोल्दोवा शायद सर्वश्रेष्ठ उदहारण है। यह व्यावहारिकता का एक प्रयास है: मोल्दोवा ने यूरोपीय संघध्रोमानिया और रूस के साथ भी प्रकार्यात्मक संबंध बनाए रखने के लिए 30 वर्षों तक प्रयास किया।

संक्षेप में, मेरा मानना है कि शोधकर्ताओं का पहला दायित्व भविष्य की भविष्यवाणी करने के दावों को संभावित परिदृश्यों, जिनके लिए वे उचित उत्तर पा सकते हैं, पर ध्यान केन्द्रित कर बदलना है । इतिहास में यह पहली बार नहीं है कि वास्तविकता, सिद्धांत से मेल नहीं खाती। आखिरकार, सामाजिक विज्ञानों का मुख्य दोष –उनका बहुआयामी चरित्र– एक असाधारण गुण साबित हो सकता है यदि हम समझें कि दुनिया को जानना, हमारी परिकल्पना को मान्य करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। ■

सभी पत्राचार डारी क्रिस्टिया को <darie.cristea@sas.unibuc.ro> पर प्रेषित करें।

> हमें तुलनात्मक रुप से प्रतिच्छेदित

एलजीबीटी+ डेटा की आवश्यकता क्यों है?

सैत बेयकदार, किंग्स कॉलेज लंदन, यूके और एंड्रयू किंग, यूनिवर्सिटी ऑफ सरे, यूके द्वारा

एलजीबीटी+ लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए सूचित नीतियों को तैयार करने के लिए असमानताओं की सीमा को समझना आवश्यक है। साभारः सैत बैरकदार।

पिछले कुछ दशकों में कई यूरोपीय देशों में कुछ महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, शोध दर्शाता है कि लेस्बियन, गे, उभयलिंगी, ट्रांस और अन्य कामुकता और लिंग विविध (एलजीबीटी) व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली असमानताएं बनी हुईं हैं। बहुत से लोग इस भेदभाव का सामना कई सामाजिक वातावरणों, कार्यस्थलों, और सार्वजनिक स्थानों पर या सार्वजनिक सेवाओं का उपयोग करते समय में करते हैं।

> असमानता डेटा की वर्तमान सीमाएं

एलजीबीटी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए सूचित नीतियों को तैयार करने के लिए ऐसी असमानताओं की सीमा को समझना आवश्यक है। हालाँकि, कुछ समय पहले तक, नीति निर्माताओं को ऐसी जानकारी प्राप्त कराने वाले डेटा स्रोत उपलब्ध नहीं थे। इस सदी के दूसरे दशक तक, कई सर्वेक्षण नियमित रूप से यौन अभिविन्यास या लिंग पहचान के बारे में जानकारी एकत्र नहीं करते थेय और आज भी, कई प्रमुख सर्वेक्षणों में अभी भी लिंग पहचान पर प्रश्न शामिल नहीं हैं।

इन डेटा सीमाओं ने एलजीबीटी असमानताओं के प्रसार वाले देशों के मध्य तुलना करने के अवसरों को सीमित कर दिया हैः सर्वेक्षण डेटा एकत्र करने के प्रयास बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर रहे हैं। शोधकर्ताओं ने अक्सर डेटा संग्रह को अपने देश तक ही सीमित कर दिया है और फिर राष्ट्रीय विधायी, सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों के भीतर अनुभवों और असमानताओं को खोजने का प्रयास किया है। निस्संदेह, अलग–अलग देशों में एकत्र किए गए ये आंकड़े महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं। हालांकि, अक्सर व्यावहारिक और स्थानीय चिंताओं

> >

से प्रतिबंधित ऐसे पद्धतिगत निर्णय एलजीबीटी असमानताओं की हमारी समझ को व्यापक परिदृश्यों तक विस्तारित करने में मदद नहीं करते हैं। एक देश से डेटा का उपयोग करने वाले अध्ययन अक्सर शोधकर्ताओं को यह जांचने की अनुमति नहीं देते हैं कि राष्ट्र–स्तरीय प्रासंगिक जानकारी एलजीबीटी असमानताओं पर कैसे प्रभाव डाल सकती है। जहाँ कुछ नीतिगत हस्तक्षेपों के प्रभावों को अनुदैर्ध्य डेटा का उपयोग करके छेड़ा जा सकता है, प्रासंगिक कारक जो दीर्घकालिक सामाजिक प्रक्रियाओं में अंतर्निहित होते हैं को अपेक्षाकृत लंबे पैनल अध्ययनों में भी ढूंढना मुश्किल होता है।

> डेटा को तुलनात्मक और प्रतिच्छेदित क्यों होना चाहिए

एक तुलनात्मक दृष्टिकोण, जिसके द्वारा हम देश भर में असमानताओं की खोज कर सकते हैं, को अपनाने से हमें यह समझना आसान होता है कि संदर्भीय कारक कैसे एलजीबीटी असमानताओं और भेदभाव के व्यवहार को आकारित कर सकते हैं। इसे समाजशास्त्रीय और नीति निर्धारण दोनों दृष्टिकोण ों से महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। यह समाजशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति से संदर्भित कारकों पर ध्यान स्थानांतरित करता है और समानता के लिए संरचनात्मक बाधाओं को उजागर करता है। नीति–निर्माण के दृष्टिकोण से, यह इंगित करता है कि एक देश दूसरों की तुलना में अनुकूल परिणाम बनाने के प्रयास में कैसा प्रदर्शन करता है और इस तरह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सरकारें और अन्य संगठन कहाँ प्रभावी नीतियों को लागू करने में विफल हो रहे हैं और उन्हें किन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता हो सकती है।

हालाँकि, एक और मुद्दा है। जब सर्वेक्षण कामुकता और लिंग पहचान जैसी सामाजिक पहचान पर विस्तृत डेटा एकत्र नहीं करते हैं, तो वे शोधकर्ताओं को न केवल राष्ट्रों के बीच, बल्कि समूह भेदों में या जिसे अक्सर ''प्रतिच्छेदन कारक'' कहा जाता है: वर्ग, जातीयता, धार्मिकता, योग्यता आदि जैसी कई विशेषताओं के आधार पर एलजीबीटी लोगों के अंतर्गत और मध्य अंतर की तुलना करने से रोकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि अधिक समावेशी नीतियां, जो एलजीबीटी समुदायों के सभी व्यक्तियों की सेवा करती हैं, को बनाने के लिए इन प्रतिच्छेदित भेदों को समझा जाए ।

> एक आशावान तुलनात्मक और प्रतिच्छेदन अध्ययन

हमने इन समस्याओं को सम्बोधित करने के लिए CILIA&LGBTQI+ (कम्परिंग इंटेरसेक्शनल लाइफ कोर्स इनक्वॉलिटीज अमांगस्ट LGBTQI+ सिटीजन्स इन फोर यूरोपियन कन्ट्रीज) प्रोजेक्ट में एक तुलनात्मक प्रतिच्छेदन दृष्टिकोण लागू किया। हमारी प्रोजेक्ट की शुरुआत, जो इंग्लैंड, जर्मनी, पुर्तगाल और स्कॉटलैंड में हुई, में हमने साहित्य की समीक्षा की और तुलनात्मक प्रतिच्छेदित –ज्ञान में कमी की पहचान करने के लिए डेटा मैपिंग करी। हमने पाया कि हमें एक ऐसे डेटासेट की आवश्यकता थी जो हमें राष्ट्र–पार और प्रतिच्छेदित तुलना करने में सक्षम बनाए, लेकिन हमने पाया कि उपयुक्त स्रोत बहुत सीमित थे। इयू एजेंसी फॉर फंडामेंटल राइट्स द्वारा आयोजित यूरोपीय संघ लेस्बियन, गे, उभयलिंगी और ट्रांसजेंडर सर्वेक्षण (ईयू एलजीबीटी सर्वेक्षण), हालांकि, इस संबंध में बहुत उपयोगी था। इसमें 28 यूरोपीय देशों में एलजीबीटी व्यक्तियों की जानकारी शामिल है और इसमें उनके जीवन–घटनाओं, भेदभाव के अनुभव और जनसांख्यिकीय विशेषताएँ पर विचार किया गया है। इसकी तुलनात्मक डिजाइन और एलजीबीटी से संबंधित अनुभवों और घटनाओं पर विस्तृत प्रश्नों ने हमें राष्ट्रीय संदर्भ पर ध्यान देने वाले तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके विविध समुदायों के प्रतिच्छेदनो का पता लगाने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया।

> कुछ तुलनात्मक और प्रतिच्छेदित परिणाम

उन आंकड़ों के हमारे विश्लेषण ने हमें जर्मनी, पुर्तगाल और यूके में भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा के अनुभवों की संभावना की जांच करने में सहायता दी। इसने तीनों देशों में लेस्बियन, गे, उभयलिंगी और ट्रांस व्यक्तियों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर दिखाया। उदाहरण के लिए, जहाँ ट्रांस व्यक्तियों की तीनों देशों में भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा की घटनाओं का अनुभव करने की अधिक संभावना प्रतीत होती है, समलैंगिक पुरुषों की तुलना में समलैंगिक महिलाओं को भेदभाव और उत्पीड़न का अनुभव होने की अधिक संभावना प्रकट हुई, यद्यपि समलैंगिक पुरुषों के हिंसा को अनुभव करने की संभावना अधिक है। कुल मिलाकर, एलजीबीटी के अनुभव बहुत विविध प्रतीत होते हैं, और यह नीति निर्माण में अधिक ध्यान देने योग्य है।

इसके अलावा, तीनों देशों के मध्य दिलचस्प अंतर भी हैं: जहाँ ट्रांस व्यक्ति यूके में भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा की रिपोर्ट करने की सबसे अधिक संभावना वाले समूह हैं, इस देश में उनके खिलाफ हिंसा भी सबसे अधिक प्रचलित है। जर्मनी या पुर्तगाल की तुलना में ब्रिटेन में समलैंगिक पुरुषों की भी हिंसा के शिकार होने की अधिक संभावनाये हैं। एलजीबीटी व्यक्तियों के अनुभवों को आकार देने में अन्य सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताएं भी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, एक जातीय अल्पसंख्यक होने या विकलांगता होने से, इन तीनों देशों में हिंसा का सामना करने की संभावना बढ़ जाती है, जबकि आर्थिक संसाधनों में वृद्धि (घरेलू आय द्वारा मापी गई) जर्मनी और यूके में हिंसा का अनुभव करने की संभावना को कम करती है, लेकिन पुर्तगाल में नहीं।

> नीति को कैसे आगे बढ़ाएं

इस तरह के सूक्ष्म अंतर ध्यान देने योग्य हैं क्योंकि उनका अर्थ है कि संदर्भित कारक, दोनों देशों के भीतर और उनके मध्य, एलजीबीटी व्यक्तियों के अनुभवों को प्रभावित करते हैं। इसलिए, हमें अधिक डेटा की आवश्यकता है जो हमें एलजीबीटी असमानताओं की तुलनात्मक रूप से और प्रतिच्छेदित रूप से जांच करने की अनुमति प्रदान करे। इससे हमारा तात्पर्य यह है कि, हमारे अध्ययन से पता चलता है कि हमारे अध्ययन द्वारा एलजीबीटी व्यक्तियों को प्रभावित करने वाले भेदभाव, उत्पीड़न, और हिंसा को समझने के उच्च सूक्ष्म तरीके दर्शाते हैं कि यह मात्र प्रतिक्रियाशील होने के बजाय सक्रिय नीतिनिर्माण की तरफ पहला कदम है। सरंचनात्मक और संदर्भीय कारक के मध्य अन्तर्सम्बन्ध कैसे एलजीबीटी जीवन को आकारित करते हैं, को समझने हेतु यह कानून के परे जा कर, समानता को एक उपागम प्रदान करेगा। ■

सभी पत्राचार सैत बायराकदार को <sait.bayrakdar@kcl.ac.uk> पर और एंड्रयू किंग को <Andrew.king@surrey.ac.uk> पर प्रेषित करें।

> कौन जानता है?

मान्यता, प्रशस्ति पत्र, और ज्ञानमीमांसीय अन्याय

जन बेसेविक, डरहम विश्वविद्यालय, यूके द्वारा

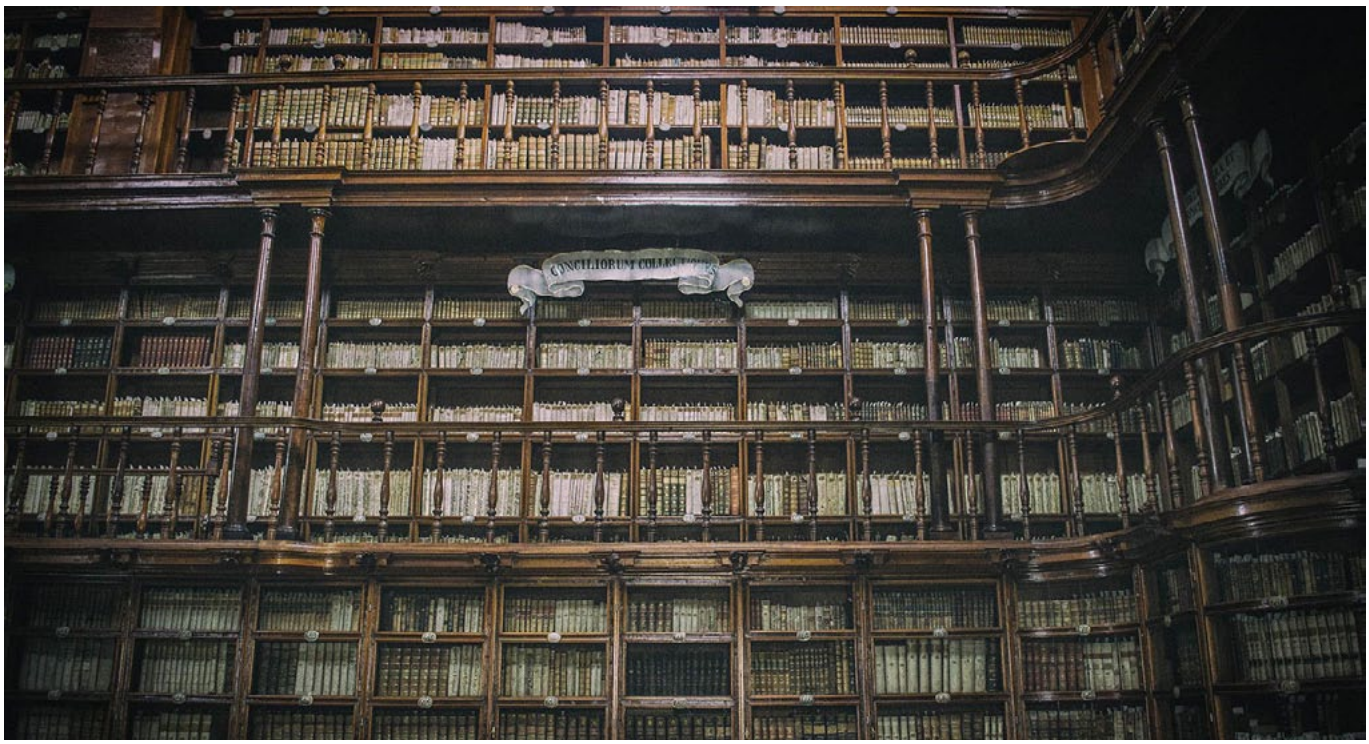

श्रेयः पिक्साबे 2016।

कई मायनों में, अकादमिक पेशा अधिक विविध होता जा रहा है। 1990 के बाद से, महिलाओं ने विश्व स्तर पर परा–स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के स्नातक छात्रों के बहुमत का गठन किया है। यूरोपीय संघ में, परास्नातक छात्रों का 54:, स्नातकोत्तर छात्रों का 58: और डॉक्टरेट स्तर पर 48: स्नातक महिलाएं हैं, लेकिन वे प्रोफेसर के स्तर पर अभी भी केवल 24: हैं। अल्पसंख्यक नस्लीय विद्वानों का अकादमिक पेशे में कम प्रतिनिधित्व है: उदाहरण के लिए, यूके में, प्राध्यापक भूमिकाओं पर केवल 7.3: अश्वेत और अल्पसंख्यक नस्लीय विद्वान काबिज हैं।

> शिक्षा, ज्ञान और सामाजिक न्याय के बीच संबंध

हाल के वर्षों में, ये असमानताएं तेजी से दिखाई देने लगी हैं, आंशिक रूप से पाठ्यक्रमों को उपनिवेशवाद से मुक्त करने के अभियानों और शिक्षा, ज्ञान और सामाजिक न्याय के बीच संबंधों की बढ़ती जागरूकता के कारण। और फिर भी, सामाजिक और ज्ञानमीमांसीय असमानताओं के मध्य संबंध बहुत गहरे हैं और हमें न सिर्फ यह देखने की जरूरत है कि हमारी कक्षाओं में कौन पढ़ता है या पढ़ाता है, बल्कि इसमें हमारे ज्ञान के स्रोतों के साथ–साथ पठन सूची भी शामिल है: किनकी आवाजों का प्रतिनिधित्व किया जाता है? किसके ज्ञान को प्रासंगिक के रूप में आकारित किया गया है– और किसके लिए?

ज्ञानमीमांसीय अन्याय की अवधारणा यह दर्शाती है कि किस प्रकार सामाजिक असमानताएँ – उदाहरण के लिए, लिंग और जातीयता–प्रजाति– जिन्हें ज्ञान के वैध–विश्वसनीय धारक के रूप में पहचाना जा सकता है, को आकारित करती हैं । मिरांडा फ्रिकर द्वारा औपचारिक रूप दी गई यह अवधारणा दार्शनिकों, नारीवादी ज्ञानशास्त्रियों और अन्य विद्वानों, जो ''विश्वसनीयता–आधिक्य'' या ''घाटे'' के भिन्न स्वरूपों का अध्ययन करते हैं: पहचान–आधारित पूर्वाग्रह के स्वरुप में अंतर कैसे ज्ञान के दावों की स्वीकृति और व्याख्या को प्रभावित करता है, से प्रभावित थी और बदले में उन्हें भी प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, अदालत में ''विश्वसनीय गवाह'' के रूप में किसे माना जाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनके वर्ग, लिंग, आयु, स्थिति और जातीयताध्जाति को कैसे देखा जाता है– अक्सर हाशिए पर या ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों को नुक्सान पहुँचाने की हानि के लिए।

> >

हालाँकि, ये असमानताएँ केवल व्यक्तिगत ज्ञान योगदान के स्तर पर ही मौजूद नहीं हैं। वे इस बात का भाग हैं कि कैसे ज्ञान का उत्पादन, मापन, मूल्यांकन और आदान–प्रदान किया जाता हैय दूसरे शब्दों में, ज्ञान उत्पादन की वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था। इस अर्थ में, प्रश्न केवल यह नहीं है कि वैध ज्ञान के धारक के रूप में किसे देखा जा सकता है, बल्कि यह भी है कि वे किस बारे में जानते हुए देखे जा सकते हैं। एक सामाजिक सिद्धांतकार और ज्ञान के समाजशास्त्री के रूप में, मैं इसे ज्ञानमीमांसीय विषयों (जो जानते हैं) और ज्ञानशास्त्रीय वस्तुओं (वे किस बारे में जानते हैं) के बीच संबंध के रूप में संदर्भित करते हैं।

शैक्षणिक समुदाय के भीतर सामाजिक असमानताओं का पुनरुत्पादन

''एपिस्टेमिक पोजिशनिंग एंड एपिस्टेमिक इनजस्टिस टुवर्ड्स एन इंटरसेक्शनल पॉलिटिकल इकोनॉमी'' में, मैंने यह दिखाने के लिए एपिस्टेमिक पोजिशनिंग की अवधारणा विकसित की कि कैसे जानकारों से संबंधित निर्णय ज्ञान की वस्तुओं के बारे में निर्णयों को प्रभावित करते हैं – और इसके विपरीत। एक सुप्रसिद्ध उदाहरण है जहाँ महिलाओं के ज्ञान के दावों को ''भावनात्मक'' या ''अनुभव से बोलने'' के रूप में देखा जाता है, लेकिन पुरुषों या बहुसंख्यक विद्व ानों द्वारा किए गए दावों को ''सैद्धांतिक'' या ''सामान्य'' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। लेकिन बदनाम करने के अधिक व्यवस्थित और कपटी स्वरुप हैं, जैसे, उदाहरण के लिए, विवेचनात्मक नस्लीय सिद्धांत को या किसी अन्य प्रकार की पहचान–आधारित ज्ञान जांच को ''शिकायत अध्ययन'' के रूप में डब करना। मैं इसे *बाउंडिंग* कहता हूं, क्योंकि यह ज्ञान के दावों को वैज्ञानिक ज्ञान में समान योगदान के बजाय उनके विषयों के निजी अनुभवों (या ''शिकायतों'') के साथ जोड़ने के लिए बाध्य करता है।

दूसरे प्रकार की स्थिति, *डोमेनिंग*, पहले से निकटता से जुड़ी हुई हैः यह तब होता है जब कुछ विशिष्ट प्रकार के जानकारों द्व ारा ज्ञान योगदान वक्ता की पहचान पर आधारित डोमेन या विषयों से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, अकादमिक पैनल पर महिलाएं अक्सर इस विषय पर ''लैंगिक'' या ''नारीवादी'' परिप्रेक्ष्य में योगदान देती हैं, जबकि अश्वेत और अल्पसंख्यक विद्वानों को ''प्रजाति'' पर बोलने के लिए आमंत्रित किया जाता है। स्थिति के इन रूपों को अक्सर विद्वानों द्वारा अकादमिक संरक्षण और मान्यता के नेटवर्क को नेविगेट करने के लिए रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है, यह चीजों को जटिल बनाता है। लेकिन वे इस बात पर एक कृत्रिम सीमा भी लगाते हैं कि किसे किस बारे में जानने के रूप में देखा जा सकता हैः जहाँ अल्पसंख्यक विद्वानों को आमतौर पर उनकी पहचान या विरासत के एक तत्व के विशेषज्ञ के रूप में तैयार किया जाता है, श्वेत और ''अचिह्नित'' विद्वान किसी भी चीज के विशेषज्ञ हो सकते हैं। यह उनकी शैक्षणिक पूंजी को काफी अधिक परिवर्तनीय बनाता हैः आपके केवल एक डोमेन के विशेषज्ञ होने के बजाय यदि आप कई विषयों पर पढ़ा सकते हैं, तो आपको रोजगार मिलने की अधिक संभावना है। *बाउंडिंग* के साथ, यानी अपने उत्पादकों की पहचान के लिए ज्ञान के दावों को कम करने की प्रवृत्ति, यह शैक्षणिक समुदाय के भीतर सामाजिक असमानताओं के पुनरुत्पादन में योगदान देता है।

> मैथ्यू प्रभाव

हालांकि, अकादमिक पेशे में सफलता न केवल उपयुक्त संदर्भों में मान्यता प्राप्त विशेषज्ञता का परिणाम है; यह अक्सर मान्यता प्राप्त होने, या श्रेय दिए जाने का प्रश्न होता है। महिलाओं और अल्पसंख्यक शिक्षाविदों को अक्सर तीसरे प्रकार की स्थिति का अनुभव होता हैः *गैर–अध्यासेप* –उनके काम का उपयोग किया जाता है, लेकिन उचित उद्धरण या श्रेय के बिना। कभी–कभी यह पूर्ण विकसित '' विनियोजन'' में बदल जाता है, जहां श्रेय किसी और को जाता है –यह कोई अक्सर पुरुष, श्वेत, वरिष्ठ और विशेषाधि ाकार प्राप्त होता है। बेशक, समाजशास्त्र में इसके लिए हमारे पास एक नाम हैः मैथ्यू प्रभाव।

आमतौर पर रॉबर्ट मर्टन को इसका श्रेय दिया गया, ''विज्ञान में मैथ्यू प्रभाव'' (मैथ्यू के अनुसार गॉस्पेल पर नामितः ''हर एक के लिए जिसके पास है, उसे अधिक दिया जाएगा, और उसके पास विपुलता होगीय लेकिन वह जिसके पास नहीं है, जो है वह भी ले लिया जायेगा'') टीम में सबसे वरिष्ठ, और मान्यता प्राप्त, वैज्ञानिक को वैज्ञानिक खोजों के श्रेय देने की प्रवृत्ति का वर्णन करता है। 1993 में, मार्गरेट रॉसिटर ने एक संबंधित शब्द, *''मटिल्डा इफेक्ट''* गढ़ा, जिसमें महिलाओं के बजाय पुरुषों को दिए जाने वाले श्रेय की प्रवृत्ति की अवधारणा थी। लेकिन कुछ समाजशास्त्रियों को पता है कि संभवतः मटिल्डा और मैथ्यू दोनों प्रभावों का सबसे प्रसिद्ध मामला, *द मैथ्यू इफेक्ट* है ।

शोधपत्रिका साइंस में *द मैथ्यू इफेक्ट* इन साइंस में मर्टन के नाम के तहत पहली बार प्रकाशित, मैथ्यू इफेक्ट की अवधारणा को मर्टन और हैरियट जुकरमैन, जिनके नोबेल पुरस्कार विजेताओं पर शोध ने अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण अनुभवजन्य सामग्री प्रदान की थी, द्वारा सह–विकसित किया गया था। मर्टन ने, वास्तव में, मैथ्यू इफेक्ट की दूसरी और तीसरी प्रिंटिंग में स्पष्ट रूप से इसे स्वीकार किया, और एक फुटनोट में कहा कि उन्होंने ''जुकरमैन के अध्ययन के साक्षात्कार और अन्य सामग्रियों से इस हद तक प्रेरणा ली कि, स्पष्ट रूप से, आलेख को संयुक्त लेखकत्व के तहत आना चाहिए था और ''वितरणात्मक और कम्यूटेटिव न्याय की पर्याप्त भावना के लिए किसी को यह पहचानने की आवश्यकता होती है, यद्यपि काफी देर से, एक वैज्ञानिक और विद्वतापूर्ण पत्र लिखना खुद को इसके एकमात्र लेखक के रूप में नामित करने के लिए पर्याप्त आधार नहीं है''। और तथापि इसने, अवधारणा को कैसे याद किया जाता है, को नहीं बदलाः अधिकांश समाजशास्त्री, आज भी, इस शब्द को गढ़ने के लिए मर्टन को श्रेय देते हैं।

> ज्ञानमीमांसीय न्याय की आवश्यकताएं

इससे पता चलता है कि लेखकत्व के देर से किए गए दावे ज्ञानमीमांसीय अन्याय के दीर्घकालिक प्रभावों को उलट नहीं सकते हैं। पहचान की मांग करने वाली महिलाओं और अल्पसंख्यक शिक्षाविदों को अक्सर खीज दिलाने वाले, आक्रामक या तुच्छ के रूप में देखा जाता है। बाउंडिंग और डोमेनिंग किसी को संदर्भ सूची से बाहर करना आसान बनाते हैं – यदि उनका शोध केवल एक निश्चित वस्तु (जैसे शक्ति के बजाय विश्वविद्यालय) के बारे में था या यदि यह मुख्य रूप से अनुभव पर आधारित था (बजाय जैसे सिद्धांत), और विशेष रूप से यदि वे इसके बारे में संकीर्ण हैं।

जैसे जैसे हमारे पेशे और पठन सूचियों में विविधता आती है, हमें न केवल बहिष्कृत करने की प्रवृत्ति के प्रति चौकस रहने की जरूरत है बल्कि कुछ विद्वानों और उनके काम को कम महत्वपूर्ण, वैध या लागू करने की स्थिति में रखने की भी जरूरत है। ज्ञानमीमांसीय न्याय की आवश्यकता है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति कार्य करे, और उन्हें अपने द्वारा किये गए कार्य का श्रेय मिले। ■

सभी पत्राचार जन बेसेविक को <jana.bacevic@gmail.com> पर प्रेषित करें।

> मध्य और पूर्वी यूरोप में
लाभदायक निकाय और देखभाल गतिशीलता

पेट्रा एज्जेडाइन, चार्ल्स यूनिवर्सिटी प्राग, चेक गणराज्य और **क्रिस्टीन क्रॉस,** एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, नीदरलैंड द्वारा

अंतरराष्ट्रीय देखभाल परिदृश्यों में देखभाल करने वालों और देखभाल करवाने वालों दोनों की आवश्यकता होती है। श्रेयः लाइन मोरट।

विसेग्राद देशों (चेक गणराज्य, स्लोवाकिया, पोलैंड और हंगरी) में देखभाल व्यवस्थाओं के समग्र बाजारीकरण, प्रवासन, लिंग संबंधों में बदलाव और बढ़ती उम्र की आबादी के कारण देखभाल के परिदृश्य तेजी से बदल रहे हैं। ये विकास नई जटिलताओं और देखभाल क्षेत्र के विविधीकरण की ओर अग्रसर हैं, जिसमें विभिन्न व्यावसायिक कर्त्ता (स्पा और पर्यटन क्षेत्र से कुछ सहित) शामिल हैं, जहाँ ये परिवार और राज्य दोनों की भूमिका को भी प्रभावित कर रहे हैं। इसके अलावा, अमीर यूरोपीय देशों के देखभाल बाजारों में महिलाओं के प्रवास के कारण पैदा हुए अंतराल के कारण देखभाल प्रावधान को चुनौती दी गई है। इससे संबंधित, यद्यपि जिसमें बहुत कम लोगों शामिल हैं, विपरीत दिशा में बुजुर्ग व्यक्तियों की आवाजाही है, वे देश जहां देखभाल की लागत अधिक महंगे पड़ोसी देशों की तुलना में लगभग दो तिहाई कम है।

हमारी वर्तमान शोध परियोजनाओं में *''ट्रांसनेशनल केयर लैंडस्केप्स इन सेंट्रल यूरोपः प्राइवेटाइजेशन, मार्केटिजेशन एंड ओवरलैपिंग मोबिलिटीज''* और *''रिलोकेटिंग केयर विदिन यूरोप''* इन दो परस्पर संबंधित देखभाल गतिशीलता की जांच करते हैंः जर्मनी में मध्य और पूर्वी यूरोपीय देशों के प्रवासी देखभाल कामगार, और विसेग्राद देशों में देखभाल सुविधाओं के लिए जर्मन वरिष्ठ नागरिकों के स्थानांतरण की छोटी लेकिन द्योतक घटना। दोनों प्रवृत्तियों को लाभ उत्पन्न करने की मिलीभगत के रूप में समझा जा सकता हैः ''कामकाजी'' निकायों (प्रवासी श्रमिक) से श्रम निकालना और कमजोर बुजुर्ग निकायों से ''पात्रता''।

> सामाजिक प्रजनन, सामाजिक नागरिकता और शरीर

सामाजिक प्रजनन और सामाजिक नागरिकता में इसकी केंद्रीयता के बावजूद, शरीर को आसानी से अनदेखा कर दिया जाता है। हालांकि, यह प्राथमिक प्रतिच्छेदन है जहां संभावित रूप से तनाव से भरी गतिशीलता सबसे छोटे पैमाने पर एक साथ आती हैः शरीर को पोषण, नहाना, कपड़े पहनने और आराम करने की आवश्यकता होती है। एक कामगार के शरीर को काम करने में सक्षम होने के लिए, अन्य निकायों को सेवाएं अवश्य प्रदान करनी होगी।

मार्क्सदी नारीवादियों द्वारा विकसित संबोध सामाजिक पुनरुत्पादन में सामाजिक संबंधों और वातावरण जिसमें लोग रहते हैं सहित समाज के दैनिक जीवन की मरम्मत, रखरखाव और उसे बनाये रखने के लिए आवश्यक सभी अदृश्य कार्य सम्मिलित हैं। इसी अर्थ में, सामाजिक नागरिकता सामाजिक सुरक्षा और शिक्षा के अधिकार की पात्रता को दर्शाती है जो लोगों को स्वस्थ और सुशिक्षित नागरिक बनने और रहने में सक्षम बनाती है।

अतः, सामाजिक पुनरुत्पादन और सामाजिक नागरिकता निकट से संबंधित हैं। वे दोनों देखभाल कार्य सहित ''जीवित'' और समाज के कामकाज को संभव बनाने के लिए आवश्यक व्यापक प्रणालियों और बुनियादी ढांचे के पुनरुत्पादन में भाग लेते हैं। जब दोनों के बीच सह सम्बन्ध बदलता है, तो सामाजिक पुनरुत्पादन की एक समस्या उत्पन्न होती हैय जैसा कि तब होता है जब बुजुर्गों को देखभाल के लिए दूसरी जगह ले जाया जाता है, जिसे सामाजिक नागरिकता के स्थानांतरण के रूप में देखा जा सकता है। यूरोप में देखभाल गतिशीलता के परिदृश्य को समझने की कोशिश में, हम विश्लेषणात्मक उपकरणों के रूप में सामाजिक पुनरुत्पादन और सामाजिक नागरिकता दोनों शब्दों का उपयोग करते हैं।

> सीईई में देखभाल गतिशीलता के परिदृश्य

मध्य और पूर्वी यूरोप (सीईई) को देखभाल की आउटसोर्सिंग, और निजी देखभाल अवसंरचना का उद्भव, अतीत और वर्तमान दोनों गतिशीलता के माध्यम से विभिन्न तरीकों से श्रम प्रवासन से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, जर्मनी में काम करने वाले पोलिश प्रवासी देखभाल कर्मी अब पोलैंड में निजी देखभाल घरों के संस्थापकों में से हैं, और उनके कार्य अनुभव और भाषा कौशल के कारण कर्मचारियों के रूप में भी उनकी मांग है। भर्ती एजेंसियों ने परिवारों के लिए मध्यस्थ सेवाएं विकसित की हैं और उन्हें क्षेत्र में देखभाल घरों से जोड़कर पेश किया है। इसके अलावा, विसेग्राद देशों में निजी देखभाल घरों में बुजुर्ग अक्सर उन बच्चों के माता–पिता होते हैं जो दूसरे देश में काम करने के लिए चले गए हैं, जहाँ वे अपने देश में माता–पिता की देखभाल के लिए खर्च करने के लिए पर्याप्त कमाते हैं। अन्य मामलों में, बुजुर्ग स्वयं प्रवासी हैं, जिन्होंने अपना कामकाजी जीवन ऑस्ट्रिया या जर्मनी में बिताने के बाद, इन देशों से बीमा का

> >

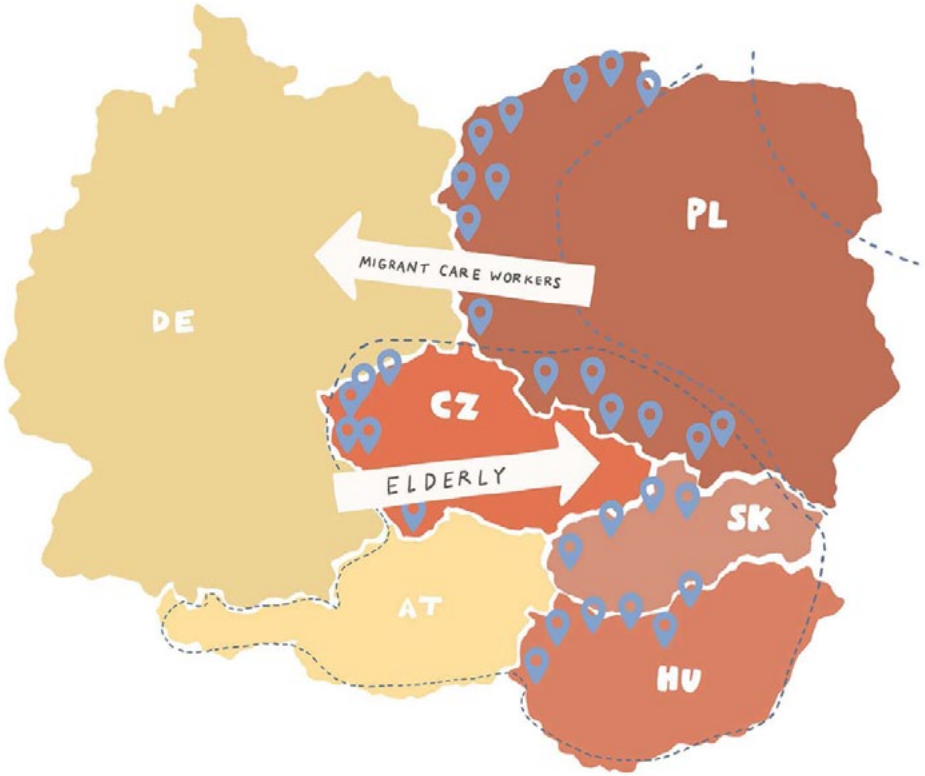

यूरोप के भीतर देखभाल पुनर्वास की प्रक्रियाएं। श्रेय: ReloCare.

अधिकार अर्जित किया है और इसलिए वे निजी देखभाल का खर्च उठा सकते हैं। ये मामले यूरोपीय कल्याणकारी राज्यों में सामाजिक नागरिकता के प्रश्न में जटिलता जोड़ते हैं।

विसेग्रेड देशों में, निजी देखभाल सुविधाओं का उभरना प्रत्यक्ष रूप से पलायन के कारण होने वाली देखभाल की निकासी से संबंधित प्रतीत होता है, जैसा कि हमारे शोध के एक उदाहरण से स्पष्ट होता है। चेक गणराज्य के भीतर जर्मनी से सिर्फ 2 किमी दूर स्थित एक देखभाल घर में, जर्मन और चेक वरिष्ठ नागरिकों की एक साथ देखभाल की जाती है। हालांकि, उनकी देखभाल चेक कर्मचारियों द्वारा प्रदान नहीं की जाती है क्योंकि उन्होंने जर्मनी में बेहतर भुगतान वाले देखभाल कार्य के लिए चेक बाजार छोड़ दिए हैं; इसके बदले में नौकरियां, यूक्रेन और मोल्दोवा के प्रवासी देखभाल कर्मचारियों द्वारा भरी जाती हैं।

अतिच्छादित गतिशीलता का एक और मामला रॉबर्टो के मामले में देखा जा सकता है, जिसे स्ट्रोक हुआ और अब वह अकेले नहीं रह सकता था। उनके बच्चे, जो जर्मनी में एक देखभाल घर का खर्च नहीं उठा सकते थे, उन्हें पोलैंड के एक देखभाल गृह में ले गए, जिसने जर्मनी के वरिष्ठ नागरिकों के लिए अपनी सेवाओं का विज्ञापन किया। फिर भी रॉबर्टो मूल रूप से जर्मनी से नहीं था: वह एक युवा 'अतिथि कार्यकर्ता' के रूप में इटली से वहां गया था, फिर वहीं रह गया, परिवार बनाया और वहीं बूढ़ा हुआ। अन्य कई जर्मन परिवारों की तरह, उनके बच्चों को ऐसी देखभाल व्यवस्था में क्या किया जाये जो एक अपरिहार्य देखभाल बीमे पर भरोसा करती है जिसे पेंशन और पारिवारिक कोष द्वारा ''टॉप अप'' करने की आवश्यकता होती है, की समस्या का सामना करना पड़ा। पोलिश देखभाल गृह में, रॉबर्टो ने जर्मन के अपनी अल्पविकसित जर्मन भाषा का उपयोग करने की कोशिश की, और एक बुजुर्ग पोलिश महिला, पाउला, कभी–कभी उनके लिए अनुवाद करती थी। वह दक्षिण–पश्चिम पोलैंड में एक पूर्व जर्मन क्षेत्र में पली–बढ़ी थीं और दोनों भाषाएँ बोलती थीं। पोलैंड में एक निजी देखभाल गृह में एक साथ आने वाले ये दो बुजुर्ग आज के यूरोप में सामाजिक पुनरुत्पादन और नागरिकता की जटिलता का उदाहरण देते हैं। यह दर्शाता है कि वर्तमान प्रवास गतिशीलता के साथ–साथ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सीमाओं और ऐतिहासिक विस्थापनों का अपनी भूमिका निभाना जारी है।

> निष्कर्ष

मध्य यूरोप में अंतरराष्ट्रीय देखभाल परिदृश्य देखभाल करने वाले निकायों और देखभाल करवाने वाले निकायों दोनों से लाभ निकालते हैं। हम दो परस्पर संबंधित घटनाओं के माध्यम से परिलक्षित क्षेत्र में ट्रांस–स्थानीय सामाजिक पुनरुत्पादन का निरीक्षण कर सकते हैं: (1) देखभाल श्रमिकों (महिला) के प्रवास के कारण देखभाल का अंतर्राष्ट्रीयकरण, जिसके परिणामस्वरूप उनके मूल देशों में 'देखभाल अंतराल' हो गया है; (2) दायरे और पैमाने में बहुत छोटा, देखभाल आउटसोर्सिंग की उलट घटना जिसके माध्यम से बुजुर्गों को उन जगहों पर पुनर्स्थापित किया जाता है जहां देखभाल की लागत घरेलू देशों से लगभग एक–तिहाई होती है। दोनों घटनाएं चुनौती देती हैं कि हम यूरोपीय सामाजिक नागरिकता और देखभाल व्यवस्था के संदर्भ में अधिकारों और सामाजिक पुनरुत्पादन की अवधारणा कैसे विकसित करते हैं। हम तर्क देते हैं कि ये देखभाल गतिशीलता यह आलोकित करती हैं कि यूरोप में सामाजिक पुनरुत्पादन और सामाजिक नागरिकता और इसके असमान कल्याणकारी भौगोलिक संकट में शरीर कैसे शामिल है, लेकिन उपेक्षित है। ■

सभी पत्राचार पेट्रा एजेद्दीन को <Petra.Ezzeddine@fhs.cuni.cz> इस और क्रिस्टीन क्रॉस को <k.krause@uva.nl> पर प्रेषित करें।

> दलाली घरेलू काम: श्रीलंका–सऊदी बाजार[1]

वासना हांडापांगोडा, जोहान्स केप्लर यूनिवर्सिटी लिंज, ऑस्ट्रिया द्वारा

एक सऊदी नियोक्ता । श्रेयः वासना हांडापांगोडा।

लगभग 1980 के दशक के प्रारम्भ से, श्रीलंकाई महिलाएं घरेलू कामगारों के रूप में बड़ी संख्या में तेल–समृद्ध अरब की खाड़ी में प्रवास कर रही हैं। यह श्रम बहिर्वाह 1977 में श्रीलंका के आर्थिक उदारीकरण सुधारों और 1973 में अरब तेल उछाल का परिणाम था, जिसने वैश्वीकरण के संदर्भ में भुगतान किए गए घरेलू श्रम के लिए एक विपुल बाजार खोल दिया। आज, विदेशी मुद्रा आय में योगदान के मामले में प्रवासी घरेलू काम श्रीलंका के प्रमुख निर्यातों में से एक बन गया है। खाड़ी के घरेलू श्रम आयातकों में से, सऊदी अरब महत्वपूर्ण बना हुआ है। श्रीलंका और सऊदी अरब ने वैश्विक देखभाल बाजार में एक पारस्परिक रूप से लाभप्रद, लंबे समय तक चलने वाले खरीदार–विक्रेता एक्सचेंज का निर्माण किया है। इस प्रकार श्रीलंका को एक अंतरराष्ट्रीय श्रम दलाल के रूप में पहचाना जा सकता है जो श्रमिक प्रेषण, यानि घरेलू श्रम पर कमीशन, के लिए व्यापार करता है।

देखभाल दलाली की प्रक्रिया में, निजी प्रवासन दलाल (पीएमबी) एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं: श्रीलंका की अधिकांश महिलाएं खाड़ी में सवैतनिक घरेलू काम खोजने में उनकी सहायता चाहती हैं। यह आलेख देखभाल की वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के एक घटक तत्व के रूप में श्रीलंका–सऊदी देखभाल बाजार में पीएमबी द्वारा घरेलू देखभाल दलाली का सारांश प्रदान करता है। आलेख श्रीलंका और सऊदी अरब में क्रमशः 2019 और 2020 में किए गए फील्डवर्क पर आधारित है।

> प्रवासी घरेलू कामगारों की दलाली प्रक्रिया

श्रीलंका–सऊदी प्रवासन कॉरिडोर में घरेलू देखभाल को जुटाने की प्रक्रिया में श्रीलंका और सऊदी अरब दोनों में स्थित पीएमबी शामिल हैं जो श्रीलंकाई प्रवासी घरेलू कामगारों (एसएलएमडीडब्ल्यू) और सऊदी नियोक्ताओं के बीच घरेलू देखभाल की बाजारीकृत डिलीवरी में आवश्यक अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रदान करते हैं।

> >

संबंधित सरकारों द्वारा आउटसोर्स किए गए निजी भर्ती एजेंटों के रूप में, श्रीलंका में ये पीएमबी (स्थानीय एजेंट–एलए) और सऊदी अरब (विदेशी एजेंट–एफए) कई अलग–अलग तरीकों से प्रवासी घरेलू कामगारों (एमडीडब्ल्यू) की गतिशीलता को व्यवस्थित और आसान बनाते हैं। एफए के साथ रखे गए एसएलएमडीडब्ल्यू के लिए गतिशीलता की प्रक्रिया सऊदी नियोक्ता के ''जॉब ऑर्डर'' के साथ शुरू होती है। इसके बाद, एफए सऊदी अरब में श्रीलंकाई मिशन द्वारा अनिवार्य आदेश अनुमोदन प्राप्त करता है और एलए को अनुमोदित आदेश भेजता है जो आगे काम करता है। श्रीलंका के विदेशी रोजगार ब्यूरो (एसएलबीएफई) द्वारा ऑर्डर पंजीकरण प्राप्त करने के बाद, एलए, इच्छुक एमडीडब्ल्यू को खोजने का प्रयास करता है, उनकी स्क्रीनिंग करता है, और उन लोगों का चयन करता है जो मानदंडों को पूरा करते हैं, जैसे, वेतन, आयु, अनुभव, भाषा प्रवीणता (अरबी), और धर्म (मुस्लिमध्गैर–मुस्लिम)। इच्छुक एमडीडब्ल्यू की तलाश में, श्रीलंका के गांव–स्तर के उप–एजेंटों की मुद्रीकृत सेवा शहर–स्थित एलए और गांव–स्थित इच्छुक एमडीडब्ल्यू को जोड़ने के रूप में उपयोगी साबित होती है, वह उन्हें भौगोलिक और सामाजिक स्थान के पार जोड़ती है।

चयनित उम्मीदवारों के आवेदन तब एफए को भेजे जाते हैं, जिसमें से नियोक्ता एक एमडीडब्ल्यू का चयन करता है जो उसके मानदंडों पर सबसे अच्छी तरह फिट बैठता है। नियोक्ता की पुष्टि पर, एलए एमडीडब्ल्यू को एसएलबीएफई अनुमोदन प्राप्त करने के साथ–साथ पासपोर्ट, वीजा, चिकित्सा और एसएलबीएफई प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, और दो साल के कार्य अनुबंध सहित आवश्यक दस्तावेज प्राप्त करने में मदद करके मोबिलाइजेशन प्रक्रिया को जारी रखता है। LA MDW (स्थानीय एजेंट प्रवासी घरेलू कामगार) का हवाई किराया और एक व्यक्तिगत कमीशन भी वहन करता है, और भर्ती की सभी लागतें एजेंसी शुल्क से वसूल की जाती हैं। अंत में, एमडीडब्ल्यू के सऊदी अरब पहुंचने के बाद, एफए उसे हवाई अड्डे पर लेने आता है और उसे नियोक्ता को सौंप देता है। अनुबंध के दौरान, एलए और एफए दोनों से एमडीडब्ल्यू को आवश्यक अनुवर्ती सेवाएं प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है, जैसे, नियोक्ता द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार करने की स्थिति में हस्तक्षेप।

दिलचस्प बात यह है कि वैतनिक घरेलू श्रम की यह निजीकृत व्यवस्था सस्ती नहीं है। इसमें एक SLMDW (श्रीलंकाई प्रवासी घरेलू कामगार) के लिए लगभग +3500 का स्थानीय एजेंसी शुल्क शामिल है। यह स्थानीय एजेंसी शुल्क FA द्वारा वहन किया जाता है, जो इसे नियोक्ता द्वारा भुगतान किए गए एजेंसी शुल्क से वसूल करता है, जो कि एक SLMDW के लिए +5500 से +6500 के बराबर होता है। इस प्रकार एजेंसी शुल्क एमडीडब्ल्यू की आयु, अनुभव, धर्म, भाषा प्रवीणता और संदर्भ जैसे कारकों के आधार पर भिन्न हो सकता है, जो देखभाल बाजार में उसकी ''कीमत'' निर्धारित करते हैं।

> निजी प्रवासन दलाल: सुविधाप्रदाता या खतरनाक ?

SLMDWs के अनुभव और प्रवासन के परिणाम स्थानीय और विदेशी PMBs पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर हैं, जो उन्हें विदेश यात्रा के समर्थक के रूप में एक रणनीतिक संसाधन प्रदान करते हैं। यह देखते हुए कि एसएलएमडीडब्ल्यू का भारी बहुमत पहले से ही अनिश्चित, गरीब स्थानीय पृष्ठभूमि से उत्पन्न होता है, पीएमबी प्रवासी घरेलू काम के अति–अनिश्चितता नहीं तो कम से कम अनिश्चितता में एक भूमिका निभाते हैं। दलाल अक्सर संरचनात्मक स्थितियों के निर्माण के लिए जिम्मेदार होते हैं जो गतिशीलता के सर्किट में एमडीडब्ल्यू के जीवन को खतरे में डालते हैं, मुख्य रूप से अत्यधिक एजेंसी शुल्क, गलत सूचना और अनुवर्ती सेवाओं की कमी के संदर्भ में। इनमें से, एजेंसी शुल्क, जिसे अक्सर अत्यधिक और अनुचित माना जाता है, स्पष्ट रूप से गिरमिटियाध्बंधुआ मजदूर की स्थिति को निर्मित करने से जुड़ा हुआ है। यह देखते हुए कि एजेंसी शुल्क बहुत अधिक है और नियोक्ता द्वारा वहन किया जाता है, MDWs (प्रवासी घरेलू कामगारों) के लिए यह उनके नियोक्ताओं के साथ बंधुआ संबंधों को प्रेरित करता है और परिणामस्वरूप सऊदी घरों में काम करने की प्रतिकूल स्थिति बनी।

श्रीलंका–सऊदी अंतरराष्ट्रीय देखभाल बाजार में पीएमबी ''एक आवश्यक बुराई'' हैं। एमडीडब्ल्यू के लिए, वे अपने प्रवास प्रक्षेप पथ की प्राप्ति और सामाजिक आर्थिक गतिशीलता की आकांक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसी तरह, देखभाल श्रृंखला के दोनों सिरों पर राज्यों के लिए, वे सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं। कुल मिलाकर, पीएमबी स्पष्ट रूप से श्रीलंका–सऊदी प्रवास कॉरिडोर में आज तक मौजूद प्रघटना है।

> निष्कर्ष

श्रीलंका–सऊदी घरेलू देखभाल दलाली सामाजिक पुनरुत्पादन के पूंजीवादी बाजार में प्रवेश और इस घटना से होने वाली अनियमितताओं का एक आदर्श उदाहरण है। नवउदारवादी वैश्वीकरण के मंच पर, पीएमबी ने घरेलू काम का एक वांछनीय वस्तु के रूप में तेजी से प्रतिनिधित्व किया है, इस प्रकार आर्थिक क्षमता और अति–अनिश्चितता के के असंगत विमर्श को प्रारम्भ किया। इस अर्थ में, मध्यस्थ प्रवासी घरेलू श्रम पुनरुत्पादक क्षेत्र में साधक मूल्यों के हस्तक्षेप के औचित्य पर प्रश्न करता है; तथापि, यह उसी समय देखभाल अर्थव्यवस्था में उत्पादक और पुनरुत्पादक के मध्य मेल की संभावनाओं को खोलता है। ■

सभी पत्राचार वासना हंडापंगोडा को <wasana.handapangoda@jku.at> पर प्रेषित करें।

1. यह ऑस्ट्रियन साइंस फण्ड (FWF) द्वारा वित्तपोषित प्रोजेक्ट ***'Ideal' Migrant Subjects: Domestic Service in Globalization***, प्रोजेक्ट M 2724-G, लिसे मिटनेर ग्रांट, अवधि 11/2019-10/2022. अभ्यर्थी / मुखियाः डॉ वसना हैंडपंगोड़ा एवं सह–आवेदक / मार्गदर्शकः डॉ ब्रिगित्ते ओलेनबाकर, जोहानस केप्लेर विश्वविद्यालय, लिंज, इंस्टिट्यूट ऑफ सोशियोलॉजी, समाज और सामाजिक विश्लेषण के विभाग से प्रेरणा लेता है।